VIGYANIKA
2019-20

जल संवर्धन

सम्पूर्ण जगत में जल का अद्वितीय महत्व है। जल का स्थान सजीवों के जीवन में वायु के समान है। हिन्दु धर्म शास्त्रों मे पानी, मनुष्य की काया के आधार पंचतत्वो (आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी, पानी) में सम्मिलित है। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे विकसित हुई हैं। संसार की सबसे पुरानी मानव सभ्यता संसार की सबसे बडी नदी 'नील नदी' के किनारे विकसित हुई थी। सभ्यताएँ हडप्पा जैसी सिंधु नदी के तट पर व चीनी सभ्यता हांगहो नदी के तट पर विकसित हुई थी।

जल सभी जीव, जन्तुओं की जीवन रेखा है। इस कथन का ऐतिहासिक सत्यापन प्राचीन मानव सभ्यताएँ करती हैं। परन्तु यह निराशाजनक सत्य है कि पृथ्वी का तीन–चौथाई भाग जल मनुष्य की पेयजल व घरेलु उपयोग सम्बन्धी जरूरतें पूरी नहीं कर पा रहा है। जिन ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण नदियों के किनारे प्राचीन सभ्यताएँ विकसित हुई थीं सभी प्रदूषण की मार झेल रही हैं। नदियों का ७० प्रतिशत जल प्रदूषित हो चुका है। सागरों का खारा पानी पीने योग्य नहीं है। नदियों की भाँति प्राकृतिक झीलों में भी शहरों व औद्योगिक क्षेत्रों का कचरा बहाया जा रहा है। भूगर्भ जल जो की सर्वाधिक सुरक्षित माना जाता है रसायनों व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग के कारण प्रदूषित हो रहा है। दिल्ली व कानपुर जैसे ज्यादा आबादी और बड़े औद्योगिक शहरों में भूगर्भ जल से दुर्गंध आती है। जोकि पेयजल के त्रिगुण (स्वादहीन, रंगहीन, गंधहीन) का पालन नहीं कर रहा है।

बुन्देलखण्ड जैसा क्षेत्र वर्षों से पानी की कमी की मार झेल रहा है। महिलाओं को पीने का पानी लाने के लिये कोसों दूर पैदल जाना पड़ता है। वहाँ पर यह कहावत प्रचलित है :

सुखी व बंजर जमीन होने के कारण उपज बहुत कम होती है और परिवार का ठीक से खर्च न चला पाने व महाजनों–सूदखारों का कर्ज न अदा कर पाने के कारण सैकड़ों किसान आत्मदाह कर चुके है। इसी क्षेत्र में भूगर्भ जल स्तर बहुत नीचे खिसक गया है व जलाशयों के खाली हो जाने के कारण वहाँ की जमीन धँस रही है। यह आपदा का संकेत है।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में झोपडपट्टी वाले इलाकों में सरकारी नलों से पानी भरने के लिए लम्बी कतारें लगानी पड़ती है और पानी भरने के लिये काफी लड़ाई–झगड़े होते हैं।

वर्तमान समय में कई अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएँ जैसे – संयुक्त राष्ट्र विश्व बैंक और भारत सरकार कई बड़े कार्यक्रमों को आयोजित करके कार्यनीतियाँ व कानून बनाकर जल संरक्षण के लिये कदम उठा रही है। विश्व जल दिवस, जल सप्ताह, जल वर्ष व जल दशक आदि समय–समय पर घोषित किये जाते हैं जिससे लोग जल संवर्धन के प्रति प्रेरित हो सकें। जल संरक्षण के लिये कई योजनाएँ भी चलाई जाती है।

'विश्व जल दिवस' :-

ब्राजील के शहर रियो डि जेनेरो में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में वर्ष १९९२ में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण व विकास सम्मेलन में '२२ मार्च' को 'विश्व जल दिवस' घोषित किया गया।

'विश्व जल सप्ताह' :-

प्रतिवर्ष ५ सितम्बर से ११ सितम्बर तक विश्व जल सप्ताह मनाया जाता है। इसका आयोजन स्टॉकहोम अन्तरराष्ट्रीय जल संस्थान के तत्वावधान में होता है।

'विश्व जल वर्ष :-

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष २००३ को 'अन्तरराष्ट्रीय मृदु जल वर्ष' घोषित किया गया था।

'राष्ट्रीय नदी संवर्धन योजना'

गंगा कार्य योजना के क्रियाकलापों का पहला चरण वर्ष १९८५ में आरम्भ किया गया एवं इसे ३१ मार्च २००० को बंद किया गया। राष्ट्रीय नदी संवर्धन प्राधिकरण की कार्यवाही समिती ने गंगा कार्य योजना के प्रथम चरण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर आवश्यक सुझाव दिए। इस कार्य योजना को देश की प्रमुख प्रदूषित नदियों में राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के अन्तर्गत लागू किया गया है।

गंगा कार्य योजना के दूसरे चरण को राष्ट्रीय नदी संवर्धन योजना के अंतर्गत शामिल किया गया है। विस्तृत राष्ट्रीय नदी संवर्धन योजना में अब १६ राज्यों की २७ नदियों के किनारे बसे १५२ जिले शामिल है।

इस कार्य योजना के तहत ५७ जिलों के प्रदूषण को कम करने के लिये कार्य किया जा रहा है। प्रदूषण को कम करने वाली कुल २१५ योजनाओं को स्वीकृति दी गई है। अभी तक ६९ योजनाएँ इस कार्य योजना के तहत पूरी हो चूकी है। इसके अन्तर्गत लाखों लीटर प्रदूषित जल को रोककर उसकी दिशा में परिवर्तन करके परिष्करण करने का लक्ष्य रखा गया है।

गंगा नदी सफाई प्राधिकरण को विश्व बैंक ने गंगा नदी की सफाई के लिये अरबों डॉलर कर्ज मुहैया कराया है। इसके अलावा अनेक स्वयं सेवक समूह भी इस कार्य में लगे है।

भारत के संविधान के भाग चार 'क' के अंतर्गत अनुच्छेद–५१ 'क' के मौलिक कर्तव्यों में यह प्रावधान है कि नागरिकों का कर्तव्य है कि "प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे।" अतः किसी भी नदी या झील को प्रदूषित करना संविधान का हनन करता है। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के कथनानुसार "अपने अधिकारों की चाह रखने वालों पहले अपने कर्तव्यों का पालन करो।" इसका आशय है कि फैक्ट्री मालिक समय–समय पर अपने फायदे के लिये अधिकारों के अनुसार माँग तो करते हैं परन्तु अपने कर्तव्यों का ध्यान नही रखते है। वे नदियों में औद्योगिक कचरा बिना उपचारित किए हुए प्रवाहित करते है।

जल संवर्धन के लिये कुछ सुझाव निम्नांकित है :-

शहरों के औद्योगिक व घरेलू कचरे को नालों के माध्यम से नदियों मे बिना उपचार किए प्रवाहित न किया जाए।

वर्षाजल सर्वाधिक शुध्द जल माना जाता है। छतों में बारिश के पानी को एकत्र करके सीधें घरो के नीचे बनी टंकियों में एकत्रित कर सकते है। वर्षाजल को एकत्रित करने की इस विधी को वर्षा जल संचयन कहते है।

यदि हम नदियों, झीलों सहित जल संसाधनों के संकटो से आहत नही है तो साफ है कि कहीं–न–कहीं हम अपनी मानवीय संवेदनाएँ खो चुके है व अपने ही पाँव पर कुल्हाडी मार रहे हैं।

"पानी की हर एक बूंद अमूल्य है'
जल संवर्धन कर मानवी
जीवन का संवर्धन करें।

श्रद्धा फुकट
B.Sc. I

मेरी प्रिय पुस्तक

पुस्तकें हमारे लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे समय–समय पर एक अच्छे मित्र व गुरू की भुमिका अदा करती है व जीवन में सफलता दिलाने में इनका बड़ा योगदान होता है।

'रामचरितमानस' मेरा सबसे प्रिय ग्रंथ है। क्योंकि यह एक कहानी संग्रह मात्र ही नही है अपितु उससे अधिक है जिसमें दर्शन के साथ ही उत्तम चरित्र निर्माण हेतु सभी तथ्य विद्यमान हैं। यह पुस्तक अयोध्या के राजा श्रीराम के जीवन चरित्र पर आधारित है जिन्हें हिंदु, भगवान के अवतार मानते है।

आधुनिक युग में हजारो सैकडो पुस्तके छपती है। अब तो हर जगह बडे–बडे पुस्तकालय भी खुल चुके हैं। आप अपनी मनपसंद पुस्तकें जाकर पढ़ सकते है। मेरी भी पुस्तकों में बड़ी रूचि है। मेरे पास बहुत पुस्तकें हैं, इन पुस्तकों का एक छोटासा पुस्तकालय घर में बन चुका हैं। मैंने विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकें एकठ्ठी कर रखी हैं।

मै प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक पुस्तकें खरीदता हूं। पुस्तकों से हमारे सामान्य ज्ञान में वृध्दि होती है। नये विचार पढ़ने को मिलते है। मेरी प्रिय पुस्तक महात्मा गांधी की आत्मकथा है। मेरे पास प्रेरणादायक कहानियाँ, नाटक, शुभ विचार और हिंदी लेख आदि से संबंधित पुस्तकें है।

कुछ होती है हल्की
कुछ होती है भारी
लेकिन इनमें होती है
दुनिया की हर जानकारी
अक्सर कुछ नया करने का
इनसे ही बनता ख्याब है
जिंदगी में सबसे अच्छा दोस्त
कोई और नहीं है किताब

पुस्तकों को बार बार पढ़ने से हर बार एक नयी दृष्टि प्राप्त होती है। इसी लिए अक्सर मै पढ़ता रहता हूँ।

मानव चरित्र, स्वभाव तथा कर्तव्य चित्रण पुस्तकों की प्रमुख विशेषता है। दुनिया भर की अनेक पुस्तकें है जिसके द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त होता है। हम ज्ञान प्राप्त करके एक महान इंसान बन सकते है, जीवन को सही तरह से जी सकते हैं इन पुस्तकों में से एक है रामचरितमानस। वास्तव में रामचरितमानस एक ऐसा ग्रंथ है जो हमें ज्ञान प्रदान करता है, हमारा मार्गदर्शन करता है।

इसकी रचना महाकवि तुलसीदासजी ने लगभग ई.स. १६३१ में शुरू की। आज यह ग्रंथ कई भाषाओं में उपलब्ध है। यह एक ऐसा महाकाव्य है जिनसे हर कोई ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को बदल सकता है। श्री रामचरितमानस में भगवान श्रीराम के चरित्र को सात कांडो में प्रस्तुत किया गया है।

आजकल जहां मानव अपने स्वार्थ के लिए ही सब कुछ करता है वही श्री रामचंद्रजी ने दूसरों के हित के लिए अपना जीवन जिया। उन्होंने पापियों का संहार किया और एक राजा के कर्तव्य को निभाते हुए प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य को निभाया। अतः श्रीरामचरितमानस हम सभी को आदर्श जीवन की प्रेरणा देता है।

मानव के पारिवारिक व समाज के प्रति कर्तव्यों को योग्य दिशा प्रदान करता है। मन और आत्मा से क्लेश दूर करता है। अतः इस तरह के अनेक ग्रंथ व पुस्तकें बाजार में उपलब्ध है, हमें इन पुस्तकों का सदुपयोग कर अपने जीवन को सफलता की ओर ले जाना चाहिए।

तेजस चौधरी
B.Sc. IIIrd Year (V Sem)

प्रदूषण और पर्यावरण

प्रस्तावना - वैज्ञानिक युग में मानव को कुछ वरदान मिले है, तो कुछ अभिशाप भी मिलें हैं। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप हैं जो विज्ञान की कोख से जन्मा हैं और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर हैं।

प्रदूषण का अर्थ - प्रदूषण का अर्थ है – प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुध्द वायु मिलना, न शुध्द जल मिलना, न शुध्द खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना।

प्रदूषण के प्रमुख प्रकार हैं वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।

वायु-प्रदूषण - महानगरों में यह प्रदूषण अधिक है। यहां चौबीसों घंटे कारखानों का धुआँ, मोटर–वाहनों का काला धुआँ इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में साँस लेना दूभर हो गया हैं। मनुष्य ने अपने विभिन्न क्रिया–कलापों एवं तकनीकी प्रयोगों द्वारा वायु को प्रदूषित किया है। वायुमंडल में सभी प्रकार की गैसों की मात्रा निश्चित है। प्रकृति में संतुलन रहने पर इन गैसों की मात्रा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आता, परंतु किसी कारणवश यदि गैसों की मात्रा में परिवर्तन हो जाता हैं तो वायु प्रदूषण होता हैं।

अन्य प्रदूषणों की तुलना में वायु प्रदूषण का प्रभाव तत्काल दिखाई पड़ता है। वायु में यदि जहरीली गैंस घुली हो वो तुरंत ही अपना प्रभाव दिखाती है और आस–पास के जीव–जंतुओं एवं मुनष्यों की जान ले लेती है। भोपाल गैस कांड इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। विभिन्न तकनीकों के विकास से यातायात के विभिन्न साधनों का भी विकास हुआ हैं।

एक ओर जहाँ यातायात के नवीन साधन आवागमन को सरल और सुगम बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर ये पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। नगरों में प्रयोग किए जाने वाले यातायात के साधनों में पेट्रोल और डीजल ईंधन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। पेट्रोल और डीजल के जलने से उत्पनन धुआँ वातावरण को प्रदूषित करता है।

औद्योगिकरण के युग में उद्योगों की भरमार है। विभिन्न छोटे–बड़े उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ के कारण वायुमंडल में सल्फर डाइऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड गैस मिल जाते हैं। ये गैस वर्षा के जल के साथ पृथ्वी पर पहुँचते हैं और गंधक अम्ल बनाते है, जो पर्यावरण व उसके जीवधारियों के लिए हानिकारक होता हैं।

दफ्तर एवं घरेलू उपयोग में लाए जाने वाले फ्रीज और एयरकंडीशनरों के कारण क्लोरो–फ्लोरो कार्बन का निर्माण होता है, जो सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों से हमारी त्वचा की रक्षा करनेवाली ओजोन परत को क्षति पहुंचाती है। विभिन्न उत्सवों के अवसर पर अत्यधिक पटाखेबाजी से भी वायु प्रदूषित होती है। वायु प्रदूषण से पर्यावरण अत्यधिक प्रभावित होता हैं।

जल प्रदूषण - कारखानों का दूषित जल नदी–नालों में मिलकर दुर्गन्धित कर जल प्रदूषित कर कई तरह की बीमारियाँ पैदा करता हैं।

शहरों में अत्यधिक आबादी होने के कारण फ्लैट निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ताकि एक फ्लैट में तीन से छह परिवार आसानी से रह सकें। इन फ्लैटों में कम स्थान पर पानी की आवश्यकता अधिक होती है और वहाँ के भूमिगत जल भंडार पर दबाव बढ़ रहा है। डी बोरिंग निर्माण करते हुए वहाँ के भूमिगत जल का दोहन किया जा रहा हैं।

बस्तियों में कचरे की निकासी की उचित व्यवस्था न होने पर प्रायः लोग कचरे को तालाव या नदी के पानी में डाल देते हैं। तालाबों एवं नदियों के पानी का इस्तेमाल नहाने एवं कपड़े धोने के अलावा पशुओं को नहलाने के

लिए भी किया जाता है। कचरा, मल–मूत्र डाला जाता है, पुराने कपड़े शवों की राख, सड़े–गले पदार्थ डाले जाते हैं, इतना ही नहीं कभी–कभी शवों को नदियों में बहा दिया जाता हैं।

प्रारंभ में जब तकनीक का विकास नहीं हुआ था, तब लोग प्रकृति व पर्यावरण से सामंजस्य बैठाकन जीवनयापन करते थे, परंतु तकनीकी विकास एवं औद्योगीकरण के कारण आधुनिक मनुष्य में आगे बढ़ने की होड़ उत्पन्न हो गई। इस होड़ में मनुष्य को केवल अपना स्थार्थ दिखाई पड़ रहा हैं। और इसी स्वार्थ में मनुष्य जल को प्रदूषित कर रहा हैं। जल–प्रदूषण के कारण उनमें रह रहें जीव–जंतुओं का भी नाश हो रहा हैं।

ध्वनि प्रदूषण - मनुष्य शांत वातावरण में रहना पंसद करता है, परंतु आजकल वाहनों, कल–कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर गाड़ियों का शोर, लाउडस्पीकर की ध्वनि से प्राणी व मानवी समाज परेशान है।

मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक चरण में ध्वनि प्रदूषण गंभीर समस्या नहीं थी, परंतु मानव सभ्यता ज्यो–ज्यों विकसित होती गई और आधुनिक उपकरणों से लैस होती गई, त्यों–त्यों ध्वनि प्रदूषण की समस्या विकराल व गंभीर हो गई। यह प्रदूषण मानव जीवन को तनावपूर्ण बनाने में अहम् भूमिका निभाता है। तेज आवाज न केवल हमारी श्रवणशक्ति को प्रभावित करती है, बल्कि यह रक्तचाप, हृदय रोग, सिर दर्द, अनिद्रा एवं मानसिक रोगों का भी कारण है।

औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में देश के कोने–कोने में विविध प्रकार के उद्योगों की स्थापना हुई। इन उद्योगों में चलने वाले विविध उपकरणों से उत्पन्न आवाज से ध्वनि प्रदूषित होती है। विभिन्न मार्गों चाहे वह जलमार्ग हो, वायु मार्ग हो या फिर भू–मार्ग, सभी तेज ध्वनि उत्पन्न करते हैं। विज्ञापनदाता भी अपने उत्पादों का प्रचार तेज आवाज में करते हैं। डीप बोरिंग, क्रशर–मशीन, डोजर से खुदाई में अत्याधिक शोर होता है। विवाह या धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर वाद्य यंत्रों का अत्याधिक शोर ध्वनि प्रदूषण करता है। यह उपकरण अनावश्यक असुविधाजनक और अनुपयोगी ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करते हैं।

प्रदूषण की रोकथाम - अगर हम प्रदूषण जैसी समस्या से लड़ना चाहते है तो हमें वाहनों के उपयोग को कम करना होगा, कारखानों से निकलने वाले धुएँ को नियंत्रित करना होगा, जल बचाना होगा, कोयले और पेट्रोलियम पदार्थों का उपयोग कम करना होगा। इसके साथ ही भूमि को प्रदूषण से बचाने तथा उसकी उर्वरता को बनाए रखने के लिए रसायनों और कीटकनाशकों के उपयोग को कम करना होगा। साथ ही अधिक से अधिक पौधारोपण करना होगा।

निष्कर्ष - पर्यावरण प्रदूषण मात्र एक देश की समस्या नही है बल्कि यह पूरे विश्व की समस्या है। इसे रोकने के लिए हम सब को साथ आना होगा, यदि इसे रोका नही गया तो आने वाले भविष्य में यह पूरे ग्रह के लिए खतरा बन जाएगा। इसके साथ ही यह पूरे पृथ्वी को भी बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है, जिससे यह मानव जीवन के लिए एक संकट बन गया हैं।

वर्षा भास्कर
B.Sc. I

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

प्रस्तावना - विद्यार्थी अनुशासन का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन की शुरूआत विद्यार्थी जीवन से होती है। यदि वह अनुशासनप्रिय हो तो जीवन में उसका सफल होना तय है। अनुशासन प्रिय विद्यार्थी हर किसी को प्रिय होते हैं।

अनुशासन ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है तथा उसे समाज में उत्तम स्थान दिलाने में सहायता करता हैं विद्यार्थी जीवन में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह उसके व्यक्तित्व का निर्माण समय होता हैं।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व :-

यदि विद्यार्थी अनुशासनहीन होगा तो ना उसे कोई पसंद करेगा और वह जीवन में अहिंसा, असत्य, गुरू का आदर न करना, गलत संगत में फंसना आदि व्याधियों में फंसकर अपने जीवन को लगातार बर्बाद करता चला जाएगा क्योंकि मनुष्य के ये बुरे गुण मनुष्य को एक जानवर के समान बना देते हैं और उसका जीवन नष्ट जो जाता है।

विद्यार्थी जीवन में ही बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक गुणों का विकास होता है, अतः उसका भविष्य सुखमय बनाने के लिए अनुशासन में रहना जरूरी है। किसी भी व्यवस्था में अनुशासित होकर कार्य करने में कोई परेशानी नहीं होती। इसके अलावा कार्य करते समय भय, शंका एवं गलती होने का डर नहीं होता। सफलता प्राप्त करने के लिए अनुशासन में रहना जरूरी है।

अनुशासन का पाठ बचपन से परिवार में रहकर सीखा जाता है। विद्यालय जाकर अनुशासन की भावना का विकास होता है। अच्छी शिक्षा विद्यार्थी को अनुशासन का पालन करना सिखाती है। सच्चा अनुशासन ही मनुष्य को सभ्य मानव बनाता है। भय से अनुशासन का पालन करना सच्चा अनुशासन नहीं है।

वास्तव में अनुशासन के बगैर विद्यार्थी जीवन की कल्पना नही की जा सकती, जो विद्यार्थी अनुशासनहीन होता है वह अपने स्तर को लगातार गिराता जाता है। अनुशासनप्रिय विद्यार्थी ही सफलता के मापदंडो पर खरा उतर सकता है। वह देश समाज व खुद को बुलंदियों पर पहुंचा सकता है।

साएमा सिद्दिकी
B.Sc. I

प्रकृति आज खुली हवा में साँस ले रही हैं
फ़िज़ाएँ लगता है क़ैद से बाहर आ गयी हैं
आकाश, जल, जमीं लगता हैं,
पुराने मैले कपड़ों को छोड़ कर
नए नए से हो गए हैं।
मेरा घर, मेरे पैसे, मेरे साथी अब सब
बेमानी से लगने लगे हैं
कहाँ कुछ बदला है,
सिर्फ़ इतना ही हो फ़र्क़ है
मैं क़ैद हूँ पर फ़िज़ाएँ आज़ाद हैं।

विज्ञान एवं धर्म का मानवी जीवन का महत्व

धर्म की छत्रछाया में अधार्मिक व्यक्तियों का समूह आम लोगों को ठगने का प्रयास करते है तब विज्ञान का स्मरण करता है। सुनने में थोड़ा अजीब सा लगेगा कि जो भी हम दिन भर करते वह हमारा धर्म है। बशर्ते कि वह सुकर्म हो। धर्म व विज्ञान का परस्पर सामंजस्य भारतवर्ष के अलावा हमें विश्व में कही भी देखने को नहीं मिलता है।

हां यह शत प्रतिशत सत्य है कि भारत विश्व गुरू है। वर्तमान युग मे विज्ञान के क्षेत्र में अधिकांश उपलब्धि भारत की ही देन है, क्योंकि आज से लाखों वर्ष पूर्व विज्ञान की जो स्थिति भारत में थी, आज का विज्ञान सिर्फ उस दिशा में किया गया प्रयास भर है। कलयुग तक आते–आते यह धर्म ग्रन्थों में सीमित होकर रह गया। सूर्यनमस्कार क्योंकि सूर्य की पहली किरण स्वास्थ्यवर्धक व ऊर्जामय होती है इसीलिए हमारे धर्मग्रंन्थो में सूर्यादय से पहले स्नान व फिर सूर्यनमस्कार करना बताया गया है, इसके साथ ही कुछ योगासन भी बताए गए है जो सूर्यनमस्कार में करने होते है।

इसी तरह चन्दन व सिन्दूर का टीका लगाना इसके वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारी दोनों आंखों के मध्य पीनीयल ग्रन्थी होती है जो की मास्टरग्रन्थी भी कहलाती है। सिन्दूर और चंदन का टीका लगाने से यह सक्रीय हो जाती है। चूंकि चंदन ठण्डी प्रवृत्ति के लोगों के लिए तथा सिंदूर गर्म प्रवृत्ति के लोगों के लिए लाभदायक होते है।

इसी प्रकार घरों मे दीपक जलाना भी धर्मग्रंथों में वर्णित है। इसे दीपक को भी धर्म के साथ जोडने का तात्पर्य यह है कि जितने भी तरफ आकर्षित होते है सम्पर्क में आकार भस्म हो जाते है। ऐसे अनेक कारण है, जिन्हे धर्म के साथ जोड़कर हमारे ऋषिमानियों ने विज्ञान हमें सौपा है।

मनुष्य कभी उड़ते हुए पथियों की उड़ान को देखकर कल्पना किया करता था कि क्या वह भी इन पक्षियों की भाँति उडान भर सकता है। उसकी यह कल्पना ही अनेक प्रयोगों का आधार था। आज अंतरिक्ष की ऊँचाई को नापते हुए वायुयान उन्ही परिपल्पनाओं के प्रयोगों का प्रतिफल है।

इस प्रकार विज्ञान स्वयं मे अनंत शक्तियों का भंडार है। विज्ञान के अंतर्गत वह अपनी कल्पाओं को अपने प्रयोगों के माध्यम से साकार रूप देता है। वह प्रकृति में छिपे गूढ़तम रहस्यों को ढूढ़ निकालता है। एक रहस्य के उजागर होने पर वह दूसरे रहस्यों को खोलने व उसे जानने हेतु प्रयत्नशील हो जाता है।

धर्म भी विज्ञान की ही भाँति उनंत शक्तियों का स्त्रोत है परंतु धर्म के माध्यम से साकार रूप दिया है। वह प्रकृति में छिपे गूढ़तर रहस्यों को निकालता है। एक रहस्य के उजागर होने पर वह दूसरे रहस्यों को खोलने व उसे जानने हेतु प्रयत्नशील हो जाता है।

धर्म भी विज्ञान की ही भाँति अनंत शक्तियों का स्त्रोत है परंतु धर्म प्रयोगों व तथ्यों पर नहीं अपितु अनुभवी आस्थाओं पर आधारित है। मनुष्य की धार्मिक आस्था उसे आत्मबल प्रदान करती है। मनुष्य की समस्या धार्मिक मान्यताएँ किसी अज्ञात शक्ति पर केंद्रित रहती है। इस शक्ती का आधार मनुष्य की आस्था व विश्वास होता है।

विज्ञान और धर्म दोनों ही मनुष्य के जीवन को समान रूप से प्रभावित करते है। एक और जहाँ विज्ञान तथ्यों व प्रयोगों पर आधारित हैं वही दुसरी और धर्म आस्था और विश्वास पर, दोनों ही मनुष्य के अपार शक्ति का स्त्रोत है।

विज्ञान जहाँ मनुष्य को समस्त भौतिक सुखों का स्त्रोत है, वही धर्म से मनुष्य में आध्यात्मिक शक्ति हैं। धर्म के मार्ग पर चलकर वह शांति की प्राप्ति करता है।

विज्ञान और धर्म दोनों का स्वरूप अत्यंत विशाल हैं प्रश्न यह नहीं की दोनों में से श्रेष्ठ कौन है, अपितु यह है कि ये दोनों जीवन–मार्ग हमारे जीवन को किस प्रकार

उन्नतिशील एवं शांतिपूर्ण बना सकते है।

विज्ञान का स्वरूप असीमित है। यह प्रायः प्रयोगो व संसार में उपलब्ध विभिन्न तथ्यों पर आधारित है। एक वैज्ञानिक अपने अनुसंधान व प्रयोगों के माध्यम से अनेक सत्यों को एकत्र करके नित नई खोज के लिए प्रयासरत रहता है। उसके मस्तिष्क की कल्पना इन खोजो, अनुसंधानों व प्रयोगों का आधार होती है। इन परिकल्पनाओं को वास्तविक रूप देने हेतु वह उपलब्ध तथ्यो को भली भाँति जाँचता–परखता है तथा उनमें निहित रहस्यों को खोज निकालता है।

धर्म विज्ञान की ही भांति अनंत शक्तियों का स्त्रोत है, धर्म प्रयोगों व तथ्यों पर नही अपितु अनुभववों, विश्वासों व आस्थाओं पर आधारित है। मनुष्य की धार्मिक आस्था उसे आत्मबल प्रदान करती है। मनुष्य की समस्या धार्मिक मान्यताएँ किसी अज्ञान शक्ति पर केंद्रित रहती है। इन शक्ति का आधार मनुष्य की आस्था व विश्वास होता है।

धर्म के मार्ग पर चलकर मनुष्य उन समस्त जीवन मूल्यों को आत्मसात करता है जो उसके चारित्रिक विकास में सहायक होते है। सदगुणों को अपनाना अथवा सन्मार्ग पर चलना ही धर्म है। वे सभी कृत्य जो मानवता के विरूद्ध है वे अधर्म है। हालाँकि कुछ लोग धर्म के नाम पर ही ऐसे कुकृत्यों को करते चले आ रहे हैं और स्वंय को पाक–साफ बता रहे है।

इस प्रकार हम देखते हे की अनेक रूप में विज्ञान धर्म का ही एक रूप है। धर्म और विज्ञान के परस्पर समान गुणों के कारण ही उन्हें एक–दूसरे का पूरक माना गया है। विज्ञान और धर्म दोनों ही मनुष्य की असीमित शक्ति का स्त्रोत है। विज्ञान जहाँ मनुष्य को भौतिक गुण प्रदान करता है वही धर्म उसे आत्मिक सुख की ओर ले जाता है। दोनो के परस्पर समन्वय से ही मनुष्य पूर्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है।

विज्ञान के वरदान से जहाँ मनुष्य चंद्रमा पर अपनी विजय पताका फहरा चुका है वही दूसरी ओर उसने परमाणू बम जैसे हथियार विकसित कर लिए है। जिसने उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। धर्म और विज्ञान का समन्वय ही मानव समाज में संतुलन स्थापित कर सकता है। धर्म मनुष्य की आस्था व विश्वास पर आधारित हे परंतु यह भी सत्य है की कभी–कभी हमारी आस्थाएँ निराधार होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार लोग चंद्रमा को ईश्वर का रूप मानते थे परंतु विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि यह मिथ्या है। चंद्रमा पृथ्वी की भांति ही है। यह एक उपग्रह है। इस प्रकार हमारी धार्मिक मान्यताएँ समय–समय पर विज्ञान के द्वारा खंडित होती रही है।

विज्ञान के प्रयोगों व नित नए अनुसंधानों ने प्रकृति के अनेक गूढ़ रहस्यों को उजागर किया है परंतु अभी भी ऐसे अनगिनत रहस्य है जो विज्ञान की परिधि से बाहर है। विज्ञान इस बात की पुष्टि करता हैं कि एक ऐसी शक्ति अवश्य है जो समस्त शक्तियों का केंद्र है। अतः जब मनुष्य के लिए सारे रास्ते बंद हो जाते है वह उस शक्ति का स्मरण करता है।

यह सत्य है कि विज्ञान और धर्म का परस्पर समन्वय ही उसे प्रगति के उत्कर्ष तक ले जा सकता है। यदि सद्रगुणों को अपनाना अथवा सन्मार्ग पर चलना ही धर्म है। वे सभी कृत्य जो मानवता के विरूद्ध है वे अधर्म है। धर्म और विज्ञान के परस्पर समान गुणों के कारण ही उन्हें एक दूसरे का पूरक माना गया है। विज्ञान और धर्म दोनों ही मनुष्य की असीमित शक्ति का स्त्रोत है।

स्वाती बिलघाईया
B.Sc. I

विज्ञान और धर्म

विज्ञान और धर्म दोनो ही मनुष्य के जीवन को समान रूप से प्रभावित करते है। एक ओर जहाँ विज्ञान तथ्यों व प्रयोगों पर आधारित है वही दूसरी और धर्म आस्था और विश्वास पर ! दोनो की मनुष्य की शक्ति के स्त्रोत हैं।

विज्ञान जहाँ मनुष्य को अनेक भौतिक सुखों की प्राप्ती करता है, वहीं धर्म से मनुष्य आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह शांति की प्राप्ति करता है। विज्ञान और धर्म दोनो का स्वरूप विशाल है। प्रश्न यह नहीं है कि दोनो में श्रेष्ठ कौन है, अपितु यह है कि ये दोनों हमारे जीवन को किस प्रकार प्रगतीशील एवं शांतिपूर्ण बना सकते हैं।

विज्ञान का स्वरूप असीमित है। यह प्रायः प्रयोगो व संसार में उपलब्ध विभिन्न तथ्यों पर आधारित है। एक वैज्ञानिक अपने अनुसंधान व प्रयोग के माध्यम से अनेक सत्यो को एकत्र करके नित नई खोज के लिए प्रयासरत रहता है उसके मस्तिष्क में अपनी कल्पना इन खोजों, अनुसंधानी व प्रयोगो का आधार होती है। इन परिकल्पनाओं को वास्तविक रूप देने हेतु वह उपलब्ध तथ्यों को जाँचता–परखता है तथा उनमे निहित रहस्यों को खोज निकालता है। इस प्रकार से रहस्य जो इन खोजों व प्रयोगों के माध्यम से उजागर होते है वे सभी विज्ञान की देन कहलाते हैं।

मनुष्य कभी उड़ते हुए पक्षियों की उड़ान को देखकर परिकल्पना किया करता था कि क्या वह भी इन पक्षियों की भाँति उड़ान भर सकता है। उसकी यह परिकल्पना ही अनेक प्रयोगों का आधार थी। आज अंतरिक्ष की उँचाई को नापते हुए वायुयान उन्ही परिकल्पनाओं का प्रतिफल है।

इस प्रकार विज्ञान स्वयं में अनंत शक्तियों का भंडार है। विज्ञान के अंतर्गत वह अपनी कल्पनाओ को अपने प्रयोगो के माध्यम से साकार रूप देता है। एक रहस्य के आधार उजगार होने पर वह दूसरे रहस्य को खोलने व उसे जानने हेतु प्रयत्नशील हो जाता है। धर्म भी विज्ञान की ही भाँति अनंत शक्तियों का स्त्रोत है परंतू धर्म प्रयोग व तथ्यो पर नही अपितू अनुभवो, विश्वासो व आस्थाओ पर आधारित है मनुष्य की समस्य धार्मिक आस्था उसे आत्मबल प्रदान करती है। मनुष्य की धार्मिक मान्यताएँ किसी अज्ञात शक्ति पर केंद्रीत रहती है। इस शक्ति का आधार मनुष्य की आस्था व विश्वास होता है। धर्म प्रायः मनुष्य की आस्था व विश्वास पर आधारित है परंतु यह भी सत्य है कि कभी–कभी हमारी आस्थाएँ निराधार होती है। पौरणिक मान्यताओं के अनुसार लोग चंद्रमा को ईश्वर का रूप मानते थे परंतू विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि यह मिथ्या है।

चंद्रमा, पृथ्वी की भांति है यह एक उपग्रह है। इस प्रकार हमारी धार्मिक मान्यताएँ समय–समय पर विज्ञान के द्वारा खंडित होती हैं। धर्म इस स्थिती में मनुष्य का तारणहार बन सकता है। दुसरी ओर जब धर्म की छत्रछाया मे अधार्णिक व्यक्तियो का समुह आम लोगो को ढगने का प्रयास करते है तब विज्ञान का आलोक उन्हे सीधे रास्ते पर लाने की चेष्टा करता है।

अंत यह सत्य है विज्ञान और धर्म का परस्पर समन्वय है उसे प्रगति के उत्कष्र तक ले जा सकता है। मनुष्य कभी उड़ते हुए पक्षियों की उड़ान को देखकर परिकल्पना किया करता था कि क्या वह भी इन पक्षियो की भाँति उड़ान भर सकता है। उसकी यह परिकल्पनना ही अनेक प्रयोगो का आधार थी। आज अंतरिक्ष की उंचाई को नापते हुए वायुयान उन्ही परिकल्पनाओ का प्रतिकाल है।

धर्म मनुष्य के चारित्रीक विकास में सहायक होता है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह उन समस्त जीवन मुल्य को आत्मसात करता है जो उसके चारित्रीक विकास में सहायक होते है। सद्गुणो के अपनाना अथवा सन्मार्ग पर चलना ही धर्म है। वे सभी कृत्य जो मानवता के विरूद्ध है वे अधर्म है। हाँलाकि कुछ लोग धर्म नाम के पर ही ऐसे कृत्यत्यो को करते चले आ रहे है और स्वयं को पाक–साफ बता रहा है।

धर्मरहित विज्ञान मनुष्य को सुख तो प्रदान कर सकता है परंतु यह उसे कभी–कभी विनाश के कगार पर भी ला खड़ा करता है। विज्ञान के वरदान से जहाँ मनुष्य चंद्रमा पर अपनी विजय पताका फहरा चुका है वही दुसरी ओर उसने परमाणु बम जैसे हथियार विकास कर लिए है जिसने उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। धर्म और विज्ञान का समन्वय ही मानवमात्र में संतुलन स्थापित कर सकता है, उसे पतन की और जाने से रोक सकता है। यह समन्वय आज की प्रमुख आवश्यकता है।

शहाना फारूकी
B.Sc. I

विज्ञान और धर्म

विज्ञान और धर्म दोनो ही मनुष्य के जीवन को समान रूप से प्रभावित करते है। एक ओर जहाँ विज्ञान तथ्यों व प्रयोगों पर आधारित है वही दूसरी और धर्म आस्था और विश्वास पर। दोनो मनुष्य की अपार शक्ति के स्त्रोत हैं।

विज्ञान जहाँ मनुष्य को अनेक भौतिक सुखों की प्राप्ती करता है, वहीं धर्म से मनुष्य आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह शांति की प्राप्ति करता है। विज्ञान और धर्म दोनो का स्वरूप अत्यंत विशाल है। प्रश्न यह है कि दोनो जीवनमार्ग हमारे जीवन को किस प्रकार उन्नतिशील एवं प्रगतीशील एवं शांतिपूर्ण बना सकते हैं।

विज्ञान का स्वरूप असीमित है। यह प्रयोगो एवं संसार में उपलब्ध विभिन्न तथ्यों पर आधारित है। एक वैज्ञानिक अपने अनुसंधान व प्रयोगों के माध्यम से अनेक सत्यो को एकत्र करके नित नई खोज के लिए प्रयासरत रहता है। उसके मस्तिष्क में उपजी कल्पना इन खोजों, अनुसंधानों व प्रयोगो का आधार होती है। इन परिकल्पनाओं को वास्तविक रूप देने हेतु वह उपलब्ध तथ्यों को भली–भाँति जाँचता परखता है। इस प्रकार से रहस्य जो इन खोजों व प्रयोगों के माध्यम से उजागर होते है वे सभी विज्ञान की देन कहलाते हैं।

मनुष्य कभी उड़ते हुए पक्षियों की उड़ान को देखकर परिकल्पना किया करता था कि क्या वह भी इन पक्षियों की भाँति उड़ान भर सकता है। उसकी यह परिकल्पना ही अनेक प्रयोगों का आधार थी। आज अंतरिक्ष की उँचाई को नापते हुए वायुयान की उँचाई उन्ही परिकल्पनाओं का प्रतिफल है। इस प्रकार विज्ञान स्वयं में अनंत शक्तियों का भंडार है। विज्ञान के अंतर्गत वह अपनी कल्पनाओ को अपने प्रयोगो के माध्यम से साकार रूप देता है। वह प्रकृति में छिपे रहस्यों को ढूँढ निकालता है। एक रहस्य के आधार उजगार होने पर वह दूसरे रहस्य को खोलने व उसे जानने हेतु प्रयत्नशील हो जाता है। धर्म भी विज्ञान की ही भाँति अनंत शक्तियों का स्त्रोत है परंतू धर्म प्रयोगो व तथ्यो पर नहीं अपितु अनुभवो, विश्वासो व आस्थाओ पर आधारित है। मनुष्य की समस्य धार्मिक आस्था उसे आत्मबल प्रदान करती है। मनुष्य की समस्त धार्मिक मान्यताएँ किसी अज्ञात शक्ति पर केंद्रीत रहती है। इस शक्ति का आधार मनुष्य की आस्था व विश्वास होता है।

ध्मा मनुष्य के चारित्रिक विकास में सहायक होता है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह उन समस्त जीवन मूल्यों को आत्मसात करता है जो उसके चारित्रक विकास से सहायक होते है। सदगुणों को अपनाना अथवा सन्मार्ग पर चलना ही धर्म है। वे सभी कृत्य जो मानवता के विरूद्ध है वे अधर्म हैं। हाँलाकि कुछ लोग धर्म के नाम पर ही ऐसे कुकृत्यो को करते चले आ रहे है और स्वयं को पाक–साफ बता रहे है।

इस प्रकार हम देखते है कि अनेक रूपों में विज्ञान धर्म का ही एक रूप है। धर्म और विज्ञान दोनो का ही एक रूप है। धर्म और विज्ञान दोनो के परस्पर समान गुणों के कारण ही एक–दुसरे का पुरक माना गया है। विज्ञान और धर्म दोनो ही मनुष्य की असीमित शक्ति का स्त्रोत है। विज्ञान जहाँ मनुष्य को भौतिक गुण प्रदान करता है वही धर्म उसे आत्मिक सुख की ओर ले जाता है। दोनो के परस्पर समन्वय से ही मनुष्य पुर्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है।

धर्मरहित विज्ञान मनुष्य को सुख तो प्रदान कर सकता है परंतु वह उसे कभी–कभी विनाश के कगार पर भी ला खड़ा करता है। विज्ञान के वरदान से जहाँ मनुष्य चंद्रमा पर अपनी विजय पताका फहरा चुका है वही दुसरी ओर उसने परमाणु बन जैसे हथियार विकसित कर लिए है जिसने उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया

है। धर्म और विज्ञान का समन्वय ही मानवमात्र में संतुलन स्थापित कर सकता है। यह समन्वय आज की प्रमुख आवश्यकता है। धर्मप्रायः मनुष्य की आस्था व विश्वास पर आधारित है परंतु यह भी सत्य है कि कभी–कभी हमारी आस्थाएँ निराधार होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार लोग चंद्रमा को ईश्वर का रूप मानते थे परंतु विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है की यह मिथ्या है। चंद्रमा पृथ्वी की भांति ही है। यह एक उपग्रह है। इस प्रकार हमारी धार्मिक मान्यताएँ समय–समय पर विज्ञान के द्वारा खंडित होती रही हैं। विज्ञान के प्रयोगो व नित नए अनुसंधानों ने प्रकृती के अनेक गूढ़ रहस्यो को उजागर किया है परंतु अभी भी ऐसे अनगिनत रहस्य है जो विज्ञान की परिधि से बाहर है। विज्ञान भी इस बात की पुष्टि रकता है कि वह ऐसी शक्ति अवश्य है जो समस्त शक्तियों का केंद्र है। अतः जब मनुष्य के लिए सारे रास्ते बंद हो जाते है वह उन शक्तियों का स्मरण करता है।

अतः यह सत्य है की विज्ञान और धर्म का परस्पर समन्वय ही उसे प्रगति के उत्कर्ष तक ले जा सकता है। जब विज्ञान का सहारा लेकर मनुष्य कुमार्ग पर चल पडता है तब धर्म का संबल प्राप्त करना अनिवार्य हो जाता है। धर्म इस स्थिति में मनुष्य का तारणहार बन जाता है। दुसरी ओर जब धर्म की छत्रछाया में अधार्मिक व्यक्तियों का समुह आम लोगो को ठगने का प्रयास करते है। तब विज्ञान का आलोक उन्हे सीधे रास्ते पर लाने की चेष्टा करता है।

त्रुशाली बोबड़े
B.Sc. I

क्या सच आपको चुनु ?

खुदको छोड़कर मैं,
आप चाहे वैसी क्यु बनु,
मेरी उम्मीद, मेरी उड़ान,
मेरी इच्छा छोड मैं,
आप ही को क्यू चुनु ?

मेरी ही पहचान,
मेरा ही कोई हौसला है,
मुझे बोल–बोलकर,
घर मे बिठाना,
यही क्यु आपका फैसला है।

वैसे तो मुझे माता की,
मान्यता देते हो,
वही मुझे अकेला देख,
क्यु लालच जगाते हो।

मैने बहुत कुछ सहकर,
हर कर्तव्य निभाया है,
किसी कि माँ, किसी कि बेटी,
किसी कि बहन बनकर,
हर कर्ज उतारा है।

क्यू भूल जाते हो,
मेरे बिना रह न पाओगे तुम,
दिलरूबा कहकर दिल रखकर, जाओगे तुम,
तब भी शायद यही चाहोगे तुम,
खुदको छोड़कर, मैं आप चाहे वैसी बनू,
क्या सच मे अपनी इच्छा छोडकर, मैं आप ही को चुनू ?

मृदला ठाकरे
B.Sc. I

विज्ञान और धर्म

विज्ञान और धर्म दोनो ही मनुष्य के जीवन को समान रूप से प्रभावित करते है। एक ओर जहाँ विज्ञान तथ्यों व प्रयोगों पर आधारित है वही दूसरी और धर्म आस्था और विश्वास पर। दोनो की मनुष्य की अपोर शक्ति के स्त्रोत हैं।

विज्ञान जहाँ मनुष्य को अनेक भौतिक सुखों की प्राप्ती करता है, वहीं धर्म से मनुष्य में आध्यात्मिक शक्ति अति है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह शांति की प्राप्ति करता है। विज्ञान और धर्म दोनो का स्वरूप अत्यंत विशाल है। प्रश्न यह नही है कि दोनो में से श्रेष्ठ कौन है, अपितु यह है कि ये दोनो जीवन–मार्ग हमारे जीवन को किस प्रकार उन्नतिशील एवं प्रगतीशील एवं शांतिपूर्ण बना सकते हैं।

विज्ञान का स्वरूप असीमित है। यह प्रायःप्रयोगो एवं संसार में उपलब्ध विभिन्न तथ्यों पर आधारित है। एक वैज्ञानिक अपने अनुसंधान व प्रयोग के माध्यम से अनेक सत्यो को एकत्र करके नित नई खोज के लिए प्रयासरत रहता है। उसके मस्तिष्क में उपजी कल्पना इन खोजों, अनुसंधानों व प्रयोगो का आधार होती है।

इन परिकल्पनाओं को वास्तविक रूप देने हेतु वह उपलब्ध तथ्यों को भली–भाँति जाँचता–परखता है तथा उनमे निहित रहस्यो को खोज निकालता है। इस प्रकार से रहस्य जो इन खोजों व प्रयोगों के माध्यम से उजागर होते है वे सभी विज्ञान की देन कहलाते हैं।

मनुष्य कभी उड़ते हुए पक्षियों की उड़ान को देखकर परिकल्पना किया करता था कि क्या वह भी इन पक्षियों की भाँति उड़ान भर सकता है। उसकी यह परिकल्पना ही अनेक प्रयोगों का आधार थी। आज अंतरिक्ष की उँचाई को नापते हुए वायुयान उन्ही परिकल्पनाओं का प्रतिफल है।

इस प्रकार विज्ञान स्वयं में अनंत शक्तियों का भंडार है। विज्ञान के अंतर्गत वह अपनी कल्पनाओं को अपने प्रयोगो के माध्यम से साकार रूप देता है। वह प्रकृति में छिपे गुढतम रहस्यों को ढूँढ निकालता है। एक रहस्य के उजगार होने पर वह दूसरे रहस्य को खोलने व उसे जानने हेतु प्रयत्नशील हो जाता है।

धर्म भी विज्ञान की ही भाँति अनंत शक्तियों का स्त्रोत है परंतू धर्म प्रयोगो व तथ्यो पर नहीं अपितू अनुभवो, विश्वासो व आस्थाओ पर आधारित है। मनुष्य की धार्मिक आस्था उसे आत्मबल प्रदान करती है। मनुष्य की समस्त धार्मिक मान्यताएँ किसी अज्ञात शक्ति पर केंद्रीत रहती है। इस शक्ति का आधार मनुष्य की आस्था व विश्वास होता है।

धर्म मनुष्य के चारित्रिक विकास में सहायक होता है। धर्म के मार्ग पर चलकर वह उन समस्त जीवन मूल्यों को आत्मसात करता है जो उसके चारित्रिक विकास से सहायक होते है। सदगुणों को अपनाना अथवा सन्मार्ग पर चलना ही अधर्म है। हालाँकि कुछ लोक धर्म के नाम पर ही ऐसे कुकृत्यो को करते चले आ रहे है और स्वयं को पाक–साफ बता रहे है।

इस प्रकार हम देखते है कि अनेक रूपों में विज्ञान धर्म का ही एक रूप है। धर्म और विज्ञान दोनो का ही एक रूप है। धर्म और विज्ञान दोनो के परस्पर समान गुणों के कारण ही एक–दुसरे का पुरक माना गया है। विज्ञान और धर्म दोनो ही मनुष्य को भौतिक गुण प्रदान करता है वही धर्म उसे आत्मिक सुख की ओर ले जाता है। दोनो के परस्पर समन्वय से ही मनुष्य पुर्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है।

धर्मरहित विज्ञान मनुष्य को सुख तो प्रदान कर सकता है परंतु वह उसे कभी–कभी विनाश के कगार पर भी ला खड़ा करता है। विज्ञान के वरदान से जहाँ मनुष्य चंद्रमा पर अपनी विजय पताका फहरा चुका है। वही दुसरी ओर उसने परमाणु बम जैसे हथियार विकसित कर लिए है जिसने उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

धर्म और विज्ञान का समन्वय ही मानवमात्र में संतुलन स्थापित कर सकता है। उसे पतन की ओर जाने से राक सकता है। यह समन्वय आज की प्रमुख आवश्यकता है।

धर्मप्रायः मनुष्य की आस्था व विश्वास पर आधारित है परंतु यह भी सत्य है कि कभी–कभी हमारी आस्थाएँ निराधार होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार लोग चंद्रमा को ईश्वर का रूप मानते थे परंतु विज्ञान ने सिद्ध

कर दिया है की यह मिथ्या है। चंद्रमा, पृथ्वी की भांति ही है। यह एक उपग्रह है। इस प्रकार हमारी धार्मिक मान्यताएँ समय–समय पर विज्ञान के द्वारा खंडित होती रही हैं।

विज्ञान के प्रयोगो व नित नए अनुसंधानों ने प्रकृती के अनेक गुढ़ रहस्यो को उजागर किया है परंतु अभी भी ऐसे अनगिनत रहस्य है जो विज्ञान की परिधि से बाहर है। विज्ञान भी इस बात की पुष्टि रकता है कि वह ऐसी शक्ति अवश्य है जो समस्त शक्तियों का केंद्र है। अतः जब मनुष्य के लिए सारे रास्ते बंद हो जाते है वह उन शक्तियों का स्मरण करता है।

अतः यह सत्य है की विज्ञान और धर्म का परस्पर समन्वय ही उसे प्रगति के उत्कर्ष तक ले जा सकता है। जब विज्ञान का सहारा लेकर मनुष्य कुमार्ग पर चल पडता है तब धर्म का संबल प्राप्त करना अनिवार्थ हो जाता है।

धर्म इस स्थिति में मनुष्य का तारणहार बन जाता है। दूसरी ओर जब धर्म की छत्रछाया में अधार्मिक व्यक्तियों का समुह आम लोगो को ठगने का प्रयास करते है। तब विज्ञान का आलोक उन्हे सीधे रास्ते पर लाने की चेष्टा करता है।

१४ वी व १५ वी सदी मे हमारे यहा कुछ महान ऋषि–मुनि हुए, जिन्होने अपने तपोबल के द्वारा विज्ञान की पुनः खोज कि फिर उनके समक्ष यह सवाल उठा कि इस विज्ञान को आम आदमी तक कैसे पहुँचाया जाए इसलिए फिर उन्होने इसे धर्म के साथ जोड़ना प्रारंभ किया व इसके व्यावहारिक ज्ञान तो बतलाया। यदि इसे धर्म के साथ नही जोड़ते तो लोग इसे नही मानते, लेकिन धर्म ही एक ऐसी सीढी है, जिसके द्वारा कोई भी अपना अच्छा या बुरा स्वार्थ सिध्द कर सकता है।

कुछ उदाहरणों के द्वारा कोई भी हमे समझा कि कैसे हमारे महापुरूषों ने विज्ञान को धर्ममय बनाया। जैसेः हमारे धर्मग्रन्थो मे कहा गया है, कि सुबह सोकर ब्रहम–मुहूर्त मे उठना चाहिए। ब्रहम–मुहूर्त मे उठने की वैज्ञानिक सोच यह है कि दिन भर की कई क्रियाकलापो व प्रदूषित वातावरण के कारण हमे श्रसन सम्बन्धी रोग हो सकते है, इसलिए जब सुबह सुर्योदय से पहले उठकर हम अपनी दिनचर्या प्रारंभ करते है तो चुंकि सुबह हवा शुध्द व प्रदुषण मुक्त होती है तथा यह आसानी से श्वसन क्रिया के माध्यम से अंदर जा सकती है। इसके श्रश्वन सम्बन्धी रोगो को दुर किया जा सकता है।

सुर्योदय से पहले स्नान करना ही हमारी धर्मग्रन्थो मे है, इसको भी विज्ञान से जोडने के पीछे वैज्ञानिक कारण है रात्रि के समय जितने भी प्रदूषण होते है वे हमारे शरीर पर एकत्रित हो जाते है। इसीलिए उन्हे, जितना जल्दी हो सके हटाना अतिआवश्यक है। इसके पश्चात सुर्यनमस्कार, क्योकि सुर्य की पहली किरण स्वास्थ्यवर्धक व ऊर्जामय होती है। इसलिए हमारे धर्मग्रन्थो मे सुर्यादय से पहले स्नान व फिर सुर्यनमस्कार करना बताया गया है व इसके साथ–साथ कुछ योगासन भी बताए गए है जो सुर्यनमस्कार में करने होते है।

इसी तरह, चन्दन व सिन्दुर का टीका लगाना है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारी दोनो आंखो के मध्य पीनीयल ग्रन्थी रहती है। व इसके थोडा पीछे पीटयुटरी ग्रन्थी होती है जोकि मास्टर ग्रन्थी भी कहलाती है। सिन्दूर और चन्दन ठंडी प्रवृत्ति के लोगो के लिए तथा सिन्दूर गर्म प्रवृत्ति के लोगो के लिए लाभदायक होते है।

हमारे युगपुरूषो जैसे विवेकानंद व राजा राममोहन राय आदि ने समय–समय पर हमे धर्ममय विज्ञान से साक्षात्कार करवाया है। अंत मे इतना ही कि विज्ञान हमे विकास की राह पर ले जाकर विकास से हमारा साक्षात्कार कराता है। सदकर्मो के माध्यम से विकास की ओर आरूढ होना तथा चलना हमारा धर्म है।

रश्मी यादव
B.Sc. I

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित होकर अध्ययन और ज्ञानार्जन का है। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है। यह चरित्र निर्माण का और ज्ञानार्जन का महत्वपूर्ण समय है।

विद्यार्थी का शालेय जीवन पाँच वर्ष की आयु से आरंभ हो जाता है। इस समय जिज्ञासाएँ पनपने लगती हैं। ज्ञान–पिपासा तीव्र हो उठती हैं बच्चा विद्यालय मे प्रवेश लेकर ज्ञानर्जन के लिए तैयार हो जाता है। नए शिक्षक नए सहपाठी और नया वातावरण मिलता है। वह समझने लगता है की समाज क्या है और उसे समाज मे किस तरह रहना चाहिए।

उसका ज्ञान विस्तृत होता है। पाठ्य–पुस्तकों से उसे लगाव हो जाता है। वह ज्ञान रस का स्वाद लेने लग जाता है। जो आजीवन उसका पोषण करता रहता है।

विद्यार्जन की चाह रखने वाला विद्यार्थी जब विनम्रता को धारण करता है तब उसकी राहें आसान हो जाती है। विनम्र होकर श्रद्धा भाव से वह गुरू के पास जाता है तो गुरू उसे सहर्ष विद्यादान देते है। वे उसे नीति ज्ञान एंव सामाजिक ज्ञान देते है, गणित की उलझने सुलझाते है और उसके अंदर विज्ञान की समझ विकसित करते हैं। उसे भाषा का ज्ञान दिया जाता है ताकि वह अपने विचारो को अभिव्यक्त कर सके। इस तरह विद्यार्थी जीवन सफलता और पूर्णता को प्राप्त करता हुआ प्रगत होता है।

विद्यार्थी जीवन मानवीय गुणों को अंगीभूत करने का काल है। सुख–दुःख, हानि–लाभ, सर्दी–गर्मी से परे होकर जब विद्यार्थी नित्य अध्यनशील हो जाता है तब उसका जीवन सफल हो जाता है। विद्या प्राप्ति हेतु कुछ कष्ट तो उठाने ही पड़ते है, आग मे तपे बिना सोना शुद्ध नही होता। इसलिए आदर्श विद्यार्थी जीवन मे सुख की चाह न रखते हुए केवल विद्या की चाह रखता है। वह धैर्य, साहस, ईमानदारी, लगनशीलता, गुरूभक्ति, स्वाभिमान जैसे गुणों को धारण करता हुआ। जीवन–पथ पर बढ़ता ही चला जाता है। वह संयमित जीवन जीता है ताकि विद्यार्जन मे बाधा उत्पन्न न हो। वह नियमबद्ध और अनुशासित रहता है। वह समय की पाबंदी पर विशेष ध्यान देता है।

विद्या केवल पुस्तकों में नही होती। ज्ञान की बाते केवल गुरूजनों के मुख से नहीं निकलती। ज्ञान तो झरने के जल की तरह प्रवाहमान रहता है। विद्यार्थी जीवन इस प्रवाहमान जल को पीते रहने का काल है, खेल का मैदान हो या डिबेट, भ्रमण का अवसर हो अथवा विद्यालय की प्रयोगशाला ज्ञान सर्वत्र भरा होता है। स्वास्थ्य संबंधी बातें इसी जीवन में धारण की जाती है। व्यायाम और खेल से तन को इसी जीवन मे पुष्ट किया जाता है।

गुण–अवगुण, अच्छा–बुरा, पुण्य–पाप, धर्म–अधर्म की विद्यार्थी जीवन में ही पहचान करनी होती है। चतुर वह है जो सारग्रहण कर लेता है, सार है विद्या, सद्गुण विद्यार्थी जीवन मे दुर्गुणों से एक निश्चित दूरी बना लेनी चाहिए। अच्छी आदतें अपनानी चाहिए। बुजुर्गों का सम्मान करना सीख लेना चाहिए। मधुर वाणी का महत्व समझ लेना चाहिए। अखाद्य तथा नशीली चीजों से परे रखना चाहिएं मानसिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पर्यावरण सुधार के कार्यक्रमों में बढ़–चढकर भाग लेना चाहिए। विद्यार्थी जीवन समाप्त होने पर इन सब बातों पर ध्यान न देना नासमझी होगी।

विद्यार्थी जीवन संपूर्ण जीवन का स्वर्णिम काल है। इसका पूरा आनंद उठाना चाहिए। इस जीवन में अनेक प्रकार के प्रलोभन मिलते है जिसमें सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अनुशासन के बिना विद्याथी जीवन सफल नहीं हो सकता।

गौरी राजपुरोहित
B.Sc. I

हिंदी साहित्य मे नारियो की दखल

साहित्य को किसी भी जाति और समाज की जीवंतता को प्रमाणित करने वाली धड़कन कहा जा सकता है। जीवन और समाज की धडकन बनाए रखने मे स्त्री–पुरूष दोनो का समान हाथ है, भारतीय भाषाओं के साहित्य के इतिहास के आरंभ से ही इस बात के प्रमाण मिलते है कि इसकी रचना और स्वरूप–निर्माण के कार्य मे नारियों का स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्व का सर्वप्रथम लिखित साहित्यिक ग्रंथ ऋगवेद माना जाता है। विश्व के सभी महान विचारक यह तथ्य से एकमत हैं और मुक्तभाव से स्वीकार करते हैं कि वैदिक ऋचाओं की रचना या दर्शन में अनेक आर्य नारियों का हाथ रहा। कहा जाता है कि अनुसया जैसी ऋषिपत्नियों ने भी अनेक वैदिक ऋचाओं के दर्शन एवं प्रणयन करके वैदिक साहित्य को समृध्द किया। वैदिककाल के बाद लौकिक संस्कृत काल की अनेक विदुषी नारियों के नाम मिलते है, अनुमान किया जा सकता है कि उन्होने साहित्य–सृजन किया होगा, जो या तो समय के गर्भ मे समा गया या फिर पुरूषों के नाम से प्रचारित हो गया। यही बात पालि, प्रकृती और अपभंश भाषाओं के संदर्भ में भी कही जा सकती है। किसी विशिष्ट नारी–साहित्यकार का नामोल्लेख नहीं मिलता। हां आगे चलकर ग्यारहवीं शताब्दी फिर कहा जा सकता है कि हिंदी–साहित्य के भक्ति काल से नारी साहित्यकारों के नाम अवश्य मिलने लगते हैं। अपनी सृजन प्रतिभा के बल पर साहित्य का सम्मान, वर्चस्व और प्रभाव बढ़ाया। वह सब आज भी बना हुआ है।

भक्तिकाल मे चलने वाली सगुण भक्तिधारा की कृष्ण शाखा से ही सर्वप्रथम हिंदी–काव्यजगत को कुछ महत्वपूर्ण साधिकांए प्रदान की। उनमें कृष्ण–दीवानी मीरा का नाम सर्वोपरि एवं सर्वप्रमुख है। मीरा की वाणी से जो सहजता, तरलता, अपनापन, तल्लीनता और समर्पित निष्ठा है, वासत्व मे यह अन्यत्र कही भी उपलब्ध नहीं होती। मीरा जैसी प्रेम की पीर और विरह की वेदना भी अपनी सहज स्वाभाविकता मे कही अन्यत्र सुलभ नहीं। मीरा की भक्ति परंपरा मे ही बाद मे बीबी ताज का नाम आता है, जो कृष्ण के सांवले–सलोने स्वरूप पर कुर्बान थी और इस समर्पित भावना के कारण ही वह मुसलमान होकर भी हिंदवानी ही रहेंगी। इसके बाद सौख नामक एक कवयित्री की चर्चा भी मिलती है, जिसके बारे मे कहा जाता है कि काव्य प्रतिभा मे तो वह धनी ही थी, रूप–यौवन मे भी धनी थी। उसी के प्रभाव से मूलतः ब्राम्हण जाति का कवी बाद में मुसलमान बनकर आजम नाम से प्रसिध्दी पा सका। हिंदी साहित्य में संत–काव्य–परंपरा मे सहजोबाई का नाम भी बडे आदर के साथ लिया जाता है, कहा जाता है कि वह भी एक प्रतिभावान कवयित्री थी। और इस क्षेत्र मे उनका खासा प्रभाव था। इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से भक्ति–काल से नारियों का हिंदी काव्य के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान आरंभ हो जाता है।

आगे चलकर रीतिकाल में भी कुछ ऐसी नारियों की चर्चा मिली है जो विशिष्ट काव्य–प्रतिभा की धनी थीं। कहा जाता है कि रीतिकाल के प्रमुख एवं प्रतिनिधी कवि बिहारी की पत्नी भी कवयित्री थीं। आज जो दोहे बिहारी की रचना माने जाते है, उनमें से अनेक उनकी पत्नी ने रचे थे। आधुनिक काल हिंदी–साहित्य के लिए नारी–सर्जकों का योगदान बढ गया हैं। काव्य और गद्य दोनों क्षेत्रों में नारियां समान स्तर पर सक्रीय रही हैं। काव्य और गद्य के विभिन्न विधात्मक क्षेत्रों मे इनके योगदान को आने वाली शताब्दियों भुलाया नहीं जा सकता। हमारे विचार से काव्य की चर्चा हो या गद्य श्रीमती महादेवी की चर्चा के बिना उसे अपूर्ण ही समझा जाएगा।

आज सभी क्षेत्रों मे नारी ने पुरूष से साझेदारी निभाई है। महिलाओं मे बढ़ती चेतना और जागरूकता ने नारी पारंपरिक छवि में बदलाव लाया है।

आजादी की लड़ाई के समय जो स्वर साहित्य मे

उभरा, उसमें देशकालिक परिस्थितियाँ और देश–प्रेम की अभिव्यक्ति स्पष्ट लक्षित होती थी। सुभ्रदा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सरोजिनी नायडू, उषादेवी मिश्रा आदि कई लेखकाओं ने समय को अभिव्यक्ति दी। उनके सशक्त लेखन का योगदान हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता के बाद नारी–लेखन में मुक्ति के स्वर उभरे। वह नारी जिसे पुरूषो ने या तो सती सावित्री का जामा पहना रखा था एवं स्वप्नलोक मे रची–बसी एक खूबसूरत देह थी, एक ऐसी बेजान, जो भावनाहीन होती है। जिसे पुरूष प्रधान समाज मे पुरूष के इशारो पर नचाया। उस नारी ने अपनी पारंपरिक बंधनों को तोडा।

नीति ने ही नारी के पीड़ा व व्यथा को अपनी जीवन की लेखनों द्वारा शब्द दिए। उसके जीवन की व्यथा कथा को लिखा। मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, चंद्रकिरण सौनरिक्सा, शशिप्रभा शास्त्री का लेखन नारी अस्मिता की तलाश है।

धीरे–धीरे सामाजिक, पारंपरिक मूल्यो के बीच पिसते नारी अस्तित्व ने नए मूल्य तलाशने आरंभ कर दिए। दाम्पत्य जीवन के बदलते संबंध–संदर्भ, पारिवारिक मूल्यों व मान्यताओं मे बदलाव, वैयक्तिक चेतना, परिवेश के प्रति सजगता तथा अपने पर हो रहे अन्याय का प्रतिरोध, विवाहेत्तर संबंधो का स्वीकार, नीति–अनीति, और फिर समय बीतने के समय साथ–साथ पुरूषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में कार्यरत महिला की भूमिका, घर और बाहर के दोहर बोझ से उत्पन्न द्वंद–दुविधा और संघर्ष, इन सब तत्वो ने समकालीन स्त्री कथा–साहित्य के नए यथार्थ को देखा, समझा और उसे अपने जीवन मे ज्यों का त्यों उतारा। दीप्ति खंडेलवाल, मेहरूनिनसा परवेज, सूर्यबाला, कृष्णा सोबती, शिवानी, निरूपमा सेवती के लेखन ने नए नारी मूल्यों को गढ़ा, उसे एक पहचान दी।

पारंपरिक भारतीय समाज, नारी के परिवर्तन के प्रयासों को, संस्कृती का अवमूल्यन मानकर, बराबर खारिज करता आया है और आज भी कर रहा हैं साहित्यिक कृति मे, स्थापित मूल्यों के विखंडन को अभारतीय या पश्चिमी भाव–बोध से संचलित बताकर, खारिज किया जाता रहा है।

नारी लेखन मे किसी प्रकार से पुरूष से प्रतिद्वंद्वता नही थी। पुरूष को नकारना अथवा उसका विरोध करना न होकर स्वयं की अस्मिता की तलाश थी। शिक्षा और कानून के प्रति जागरूकता ने उसे आत्मनिर्भरता दी है। नारी ने उस दोनों प्रकार की स्त्रियों को अभिव्यक्ति दी, एक तो वे, जिन्होने दैहिक प्रवित्रता का ढिंढोरा नही पीटा और हर स्तर पर पुराने मूल्यो को विघटित कर अपने अनुसार नए मूल्यो को गढा। बिना किसी मानसिक संताप के पुरूषो की तरह बेबाक जीवन जिया। और दूसरी ओर वह नारी वर्ग था जिसके अपने मर्यादित दायरे मे स्त्रीयोचित गुणों की नाजाकत को बनाये रखा। स्त्री घर के भीतर हो या बाहर, कही भी पुरूष हिंसा, दमन, उन्पीडन और शोषण से मुक्ति नही। आदर्श पत्निया के रूप मे जो स्त्रियाँ सुरक्षित और सम्माननीय दिखाई देती है, वे भी शायद तब तक ही है, जब तक चुपचाप पति या घर के अन्य मर्द का हर हुक्म सिर झुका कर मानती रहे और उनके अनैतिक, अवैध और त्यभिचारी व्यवहार का प्रतिरोध न करें। इन सभी अत्याचारों एवं नारी ने अपने विचारों को कलम वद्य कर किया। अतः पारंपरिक समाज को नारी के अस्तित्व को मानने पर मजबूर होना पड़ा।

रितीका तोलीवाल
B.Sc. I

हिंदी साहित्य और महिलाएं

साहित्य क्षेत्र हो अथवा अन्य क्षेत्र, नारी किसी क्षेत्र में पीछे नही है। सभी क्षेत्र में नारी ने पुरूष से साझेदारी निभाई है। महिलाओं में बढ़ती चेतना और जागरूकता ने उनकी पारंपरिक छवि को तोड़ा है।

आजादी की लड़ाई के समय साहित्य में देशकालिक और देश–प्रेम की अभिव्यक्ति स्पष्ट लक्षित होती थी। सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, ने समकालिन स्त्रियों को अपने लेखन मे स्थान दिया।

स्वतंत्रता के पूर्व वह नारी जिसे पुरूषों ने या तो सती सावित्री का जामा पहना रखा था या फिर वह जो उसके स्वप्नलोक मे रची–बसी एक खूबसूरत देह थी। एक ऐसी बेजान देह, जिसके भीतर कोई भावना नहीं होती। जिसे पुरूष प्रधान समाज में पुरूष के इशारों पर नचाया जा सकता है। उस नारी ने अपनी पारंपरिक छवि तो तोड़ा है।

नारी भावनाओ की यही अभिव्यक्ति थी जो सदियों से भीतर ही छटपटा रही थी। वह नारी लेखन में ही अभिव्यक्त हुई। नारी ने ही नारी के पीड़ा को शब्द दिये। उनके जीवन की व्यथा को लिखा। धीरे–धीरे सामाजिक, पारंपरिक मुल्यों के बीच पिसते नारी अस्तित्व ने नए मूल्य तराशने आरंभ कर दिये। दाम्पत्य जीवन के बदलते संबंध–संदर्भ, पारिवारिक मूल्यों व मान्यताओं में बदलाव, परिवेश के प्रति सजगता तथा अपने पर हो रहे अन्याय का प्रतिरोध, विवाहेत्तर संबंधो का स्वीकार, नीति–अनीति और समय के साथ पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र मे कार्यरत महिला की भूमिका घर और बाहर के दोहरे बोझ से उत्पन्न दुविधा और संघर्ष इन सब तत्वों ने समकालीन स्त्री कथा साहित्य के नए यथार्थ को देखा, समझा और उसे अपने लेखन मे ज्यों का त्यों उतारा।

भारतीय समाज, नारी परिवर्तन के प्रयासों को, संस्कृती का अवमुल्यन मानकर बराबर खारीज करता आया है। और आज भी कर रहा है। समाज में ही नहीं, साहित्य मे भी यही संस्कार काम कर रहा है। साहित्यिक कृति में, स्थापित मूल्यों के विखंडन को पश्चिमी संस्कृति से संचालित बताकर, खारीज किया जाता रहा है।

नारी लेखन में किसी प्रकार से पुरूष से प्रतिद्वंदिता नहीं है। उसमें पुरूष को नकारना अथवा उसका विरोध करना ना होकर स्वयं की अस्मिता की तलाश करना है। औरत ने अपने औरत होने के पारंपरिक अर्थ को बदला है। शिक्षा और कानून के प्रति जागरूकता ने उसे आत्मनिर्भरता दी है। नारी ने उन दोनों प्रकार की स्त्रियों को अभिव्यक्ति दी, एक तो वे, जिन्होने दैहिक पवित्रता का ढिंढोरा नहीं पीटा और हर स्तर पर पुराने मुल्यों को विघटित कर नए मूल्यों को गढ़ा। बिना किसी मानसिक संपात के पुरूषों की तरह बेबाक जीवन जिया। और दूसरी तरफ वह नारी वर्ग था जिसने अपने मर्यादित दायरे मे स्त्रीयोचित गुणों की नजाकत को बनाये रखा। परंपरागत स्त्री की पहली शर्त है, पराधीनता। स्त्री घर के भीतर हो या बाहर, कही भी पुरूष हिंसा, दमन, उत्पीड़न और शोषण से मुक्ती नहीं। आदर्श पत्नियों के रूप मे जो स्त्रिया सुरक्षित और सम्माननीय दिखाई देती है वे भी शायद तब तक ही हैं, जब तक चुपचाप पती या घर के अन्य मर्द का हुक्म सिर झुका कर मानती रहे और उनके अनैतिक और व्यभिचारी व्यवहार का प्रतीरोध ना करें। विद्रोह की बड़ी किमत चुकानी पड़ती है।

महिला लेखन में सामाजिक प्रतिबद्धता तो झलकती है, लेकिन राजनैतिक विचारधारा का प्रभाव कम दिखता है। आलोचना के क्षेत्र में जरूर नारियां की पैठ कम है। ऐसा नहीं है कि लेखिकाओं ने राजनैतिक उपन्यास कहानियाँ लिखी ही नहीं। 'जिंदगीनामा', 'महाभोज', 'अनित्य', 'सात नदियाँ–एक समंदर' आदि प्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक सामाजिक चिंतन से उपन्यास है। कहानियाँ तो ऐसी अनेक है, जो नारी को लगाए गये मुखौटों को उतारकर वर्तमान समाज के मूल पक्षों से सामना कराती है।

आजादी के बाद भारतीय समाज मे शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता और नारीवादी आंदोलनों का भी प्रभाव रहा, जो शिक्षीत और स्वावलंबी स्त्रियों के निर्णय लेने की शक्ती मे लक्षीत होता है। पुरूष प्रधान परिवार व समाज मे भी स्त्रियों का प्रतिरोध करना उनके अपने मैं को पहचानने की कोशिश है।

भारतीय समाज नारी के अस्तित्व बोध की समस्या से अनभिज्ञ रहा। विषमता की इन त्रासदियों की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करना नारी की पहली अनिवार्यता थी। एक सच्चे साहित्यिक की पहचान भी यही है की वह अपना कर्म बखुबी निभाये, चाहे उसका दायरा कितना भी सीमित क्यों

न हो परंतु वह जो कुछ अनुभव करे उसका यथार्थ चित्रण करे और यह कल्पनाशील न होकर यथार्थ की धरती पर खड़ा हो। यही तस्वीर समाज के समक्ष प्रस्तुत करे। आज की महिला कथाकार अपने कर्म को बखूबी निभा रहीं है।

कन्हैया श्रीवास
B.Sc. I

शहर मेरा आज गाँव हो गया है
पड़ोसी कौन है मालूम हो गया है

गाड़ी मोटर की आवाज नही है
पंछियों की आवाज से सवेरा हो गया है।
सड़को के दर्द को महसूस कर रहा हूँ
पेड़ पौधों को सुकून की सांस दे रहा हूँ
दौड़ भाग भरी जिंदगी मे सुकून हो गया है।

सुनो शहर मेरा आज गाँव हो गया है।

वो कूकर की सीटियां सुन रहा हूँ
वो छत पे झगड़ते बच्चों को देख रहा हूँ
पेड पे हिलते पत्तों की आवाज सुन रहा हूँ
बहती हवाओं का भी एहसास हो गया है।

शहर मेरा आज गाँव हो गया है।

आज समझ आ रहा है दो निवाले ही बहुत थे
गाड़ी बंगला सब फिजूल ही तो है
देखा देखी मे क्या क्या जाने जोड़ दिया है।

शहर मेरा आज गाँव हो गया है।

समझूँगा बैठ कर विज्ञान ने क्या ज़िदगी आसान बनायी है ?
पसीन बहाना छोड़ कर पसीना आना सिखाया है।
कुदरत से कहीं खिलवाड़ ज्यादा
तो नही हो गया है

शहर मेरा आज गाँव हो गया है।
..... वो ही पुरानी कलम

- अनाम

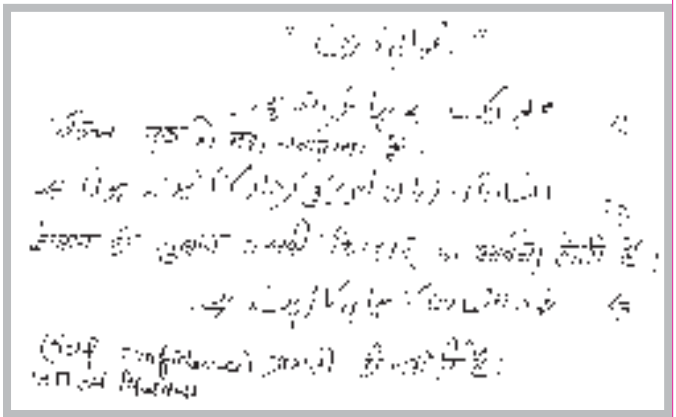

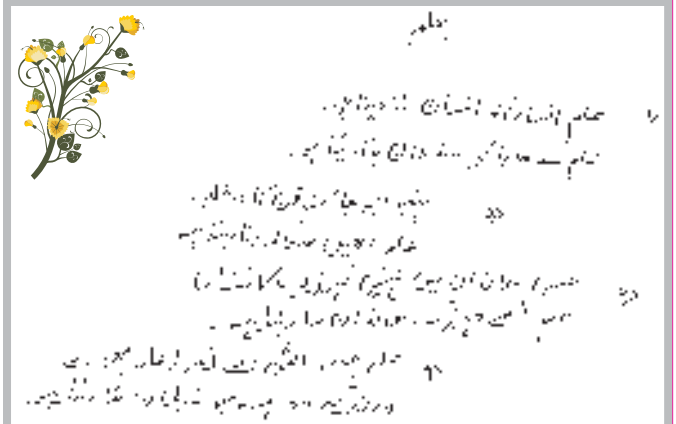

- D विद्या (ईल्म) इंसान को इंसान बना देता है अर्थात विद्या से इंसान अपने आप मे कई खूबीयाँ पैदा कर सकता है और अपने जीवन में प्रगती प्राप्त कर सकता है, और जिसके पास कुछ नही होता या जो फकीर है वह भी विद्या के कारण बादशाह एवं मधन बन सकता है।
- D ऐसे लोग जो कला का अर्थ या महत्व भी नही जानते वे लोग भी ईल्म के कारण कलाकार बन सकते है या ईल्म ऐसे लोगो को फनकार बना देता है।
- D जिस खानदान मे नही तहजीब यानी तमीज, एहतराम अदम ऐसे खानदान या खानदान के लोगो को भी ईल्म तहज़ीब वाला (मोहज्ज़ीब) बना देता है।
- D उदा. के तौर पर जो पढ़ा लिखा नही होता उसकी भाषा से ही उसकी विद्या या माहोल का पता चल जाता है जबकी जो पढ़े लिखे होते है वे नम्र, सभ्य एवं शीलन होता है।
- D ईल्म जैसे अल्लाह दे उसे ईमान भी दे अर्थात विद्या का सही प्रयोग करना भी आवश्यक है वरना वह ईल्म वो है वो शैतान बना देता है।

  यदि विद्या का सही उपयोग किया जाए तो वह वरदान है और अगर गलत किया जाए तो अभिशाप।

हिंदी साहित्य मे महिलाओं का योगदान

जीवन के सभी क्षेत्रो में स्त्री ने पुरूष का साथ दिया हैं। वह उसकी सहधर्मिणी हैं। वह उसके पीछे कैसे रह सकती हैं। वीर क्षत्राण्यिो ने तो युद्ध भूमि मे भी पुरूषो का साथ नही छोडा था। साहित्य के क्षेत्र मे, जहाँ महाकवियो ने साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की वहाँ महिलाओं ने भी अपनी अमूल्य कृतियो से साहित्य के इतिहास मे एक नवीन पृष्ठ जोड़ दिया। हिन्दी साहित्य का आदिकाल वीरगाथा काल कहा जाता हैं। वह राजनैतिक आँधी और तूफान का युग था। मुसलमानो का आक्रमण जिस समय भारतवर्ष पर हो रहा था और वे क्रमशः अपना अधिकार जमाते जा रहे थें। यह समय महिलाओं की कोमल भावनाओ का भी नही था। अतः हिंदी साहित्य के आदिकाल मे कोई महिला साहित्यकार प्रकाश में नही आया। परंतु उसके पश्चात् सभी कालो मे महिलाओं ने साहित्य के विकास मे यशाशक्ति योगदान दिया। भक्तिकाल की मधुर एवं कोमल साहित्यिक प्रवृत्तियाँ महिलाओ की रूचि के अनुकूल थी। इस काल मे कोई उच्चकोटि की महिला कवियत्रियो के दर्शन होते हैं, जिन्होंने निराकार ब्रम्ह और साकार ब्रम्ह श्रीकृष्ण को पति के रूप में स्वीकार करके अपने अन्तर्मन की भावनाओ को कोमलकान्त पदावली मे व्यक्त किया। भक्तिकालीन महिला काव्यकाशे में सहजोबाई, दयाबाई, और मीराबाई का नाम विशेष रूप मे उल्लेखनीय हैं। सहजोबाई चरणदास की शिष्या थीं, उन्होने निराकार प्रियतम के प्रति अनूठी उक्तियाँ कहा हैं। प्रियतम की भक्ति माधुरी में प्रेमरत होकर सहजो कहने लगती –

बाबा नगरू बसाओ -

ज्ञान दृष्टि सूँ घट से देखौ, सुरति निरति लो लावौ।

पाँच मारि मन बसकर अपने तीनो ताप नसावो।''

दयाबाई भी चरणदास की शिष्या थी। उनका विषय वर्णन भी सहजोबाई की भाँति अपने निराकार प्रियतम का आह्वान और बिहार निवेदन ही हैं। मृतप्राय हिंदू जाति पर इन कवियात्रियो ने अपनी रसमयी काव्य–धारा की ऐसी पीयूष वर्षा की कि वह आज तक सानन्द जीवित हैं। इसके पश्चात मीरा का नाम आता हैं। मीरा भक्ति साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री मानी जाती हैं। मीरा की कोमल वाणी ने भारतीय साहित्य मे प्रेम और आशा से भरी हुई वह पावन सरिता प्रवाहित की जिसकी वेगवती धारा आज भी भारतीय अन्नरात्माओ मे त्यों का ज्यो अबाध गति से बह रही हैं। मीरा ने अपने पदों में अनुभूत प्रेम और विरह वेदना को स्थान दिया हैं। आज भारत के घर–घर मे मीरा के पद गाए जाते हैं। मीरा की–सी वेदना, टीस और कसक सम्भवतः हिन्दी की किसी अन्य कवयित्री में नही मिल सकती। मीरा के पद हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

एक पदम मे मीरा ने कहा हैं -

'हे री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय।

दरद की मारी बन-बन डोलूँ, वैद मिला नहि कोय।

सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय,

मीरा की प्रभु पीर मिटै जब, वैद साँवरिया होय।'

अकबर के शासनकाल मे 'राय प्रवीण' नाम की एक वेश्या थी। नृत्य और गीत के साथ वह सुंदर कविता भी करती थी। वह महाकवि केशव की शिष्या थी। केशवदासजी ने कविप्रिया मे इसका वर्णन भी किया हैं। पहले तो उसने मना किया, परंतु बाद में विवश होकर उसे गाना पड़ा। इसके तत्काल बाद निम्नलिखित दोहा बनाकर सुनाया, जिसे सुनकर अकबर बहुत ही लज्जित हुआ

''विनती राय प्रवीण की सुनिए शाह सुजान। जूठी पातर चखत हैं, बारी बायस स्वान।।

इनके बाद 'ताज' का नाम आ जाता हैं, यद्यपि ये मुस्लमान थी, फिर भी इन्हें श्री कृष्ण से प्रेम हो जाता हैं।

इनकी कविता भक्ति रस से ओत प्रोत हैं। ताज श्रीकृष्ण के चरणो मे अपना तन, मन, धन संपत्ति समर्पित करने को उत्सुक थी। प्रभु की आशिकी का जो प्रदर्शन मुसलमान होकर भी ताज ने अपनी कविता मे करने का साहस किया हैं।

सुनो, दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम

दस्त ही बिकानी, बदनामी भी सहूँगी मैं।

देव पूजा ठानी हो, नमाज हूँ भुलानी,

तज कलाम कुरान सारे गुनन कहूँगी मैं।।

ईशिका मंशानी
B.Sc. I

धर्म और विज्ञान

विज्ञान और धर्म, समान्यताया बल्कि संपूर्ण तथा दोनों के क्षेत्र अलग–अलग हैं। 'धरातये इति धर्म' इस उक्ति के अनुसार धर्म वह है, जिसमें समस्त उदात्त, उदार और महान माननीय वृत्तियों, सदगुणों को धारण करने की अद्‌भुत क्षमता विद्यमान रही है। इस दृष्टि से धर्म का कोई स्थल एवं निर्धारित स्वरूप नहीं होता। अपने–आपमें वह मात्र एक पवित्र एवं सूक्ष्म हमेशा विकास करते रहनेवाली भावना है। जीवन जीने की एक आस्था और विश्वास है। जीवन जीने की एक आस्था और विश्वास है। पूजा–पाठ, व्रत–उपवास या रोजा–नमाज जैसे ब्रहनाचार भी धर्म नहीं है। इन्हें धर्म के सतस्वरूप बाह्य माध्यम अवश्य कहा जा सकता है। धर्म का वास्तविक संबंध जाति–पाति या मज़हब के साथ ही नहीं हुआ करता। ये सब तो मानव को बाह्य स्तर पर विभाजित करनेवाली स्थूल क्यारियां मात्र हैं। धर्म है पवित्र आचरण एवं व्यवहार का नाम। धर्म है सत्य भाषण, प्राणिमात्र के प्रति प्रेम एवं अपनत्व का नाम। धर्म है सभी प्रकार के सद्‌भावों और सद्‌गुणों का नाम। इसके अतिरिक्त यदि किसी अन्य बहों को धर्म कहा जाता है, तो वह प्रवंचना और छलावे से अधिक कुछ नहीं। रूढ़ियां, अंधविश्वास, या अंधपरंपराएं भी धर्म नहीं हुआ करतीं। तभी तो प्रत्येक देश–काल के महापुरूषों ने इनका विरोध कर एकात्मभाव जगाने का काम किया है। वह एकात्मक भाव की मानवीय दृष्टि से आध्यात्मिक जागृति का वस्तुतः धर्म कहा जा सकता है।

इसके विपरित विज्ञान का अर्थ है – विशेष प्रकार का स्थूल ज्ञान, जो हमें भौतिक तत्वों की जानकारी कराता है, भौतिकता की ओर अग्रसर करके उसी की उपलब्धियां प्रदान करता है। जो दृश्य है, जिसे छुआ, नामा तोला या गणित की परिधियों में लाया जा सकता है। वही विज्ञान का सत्य है। वह तो धर्म और संस्कृति का विहार–क्षेत्र है। धर्म और विज्ञान दोनों का जीवन जीने व जीवन जीने के लिए समान आवश्यकता और महत्वपूर्ण हैं। दोनों मानव जीवन की महान उपलब्धियां हैं। दोनों सत्य तक पहुंचने–पहुंचाने के मार्ग हैं, पर अपने–अपने ढंग से, अपने–अपने स्थूल–सुक्ष्म साधनों और माध्यमो से।

सत्य तो यह है कि जब हम गंभीरता से विचार करके देखते हैं तो पाते हैं कि अपने आप में न तो धर्म अंधा हुआ करता है और न विज्ञान ही। इनका उपयोग–उपभोग करने वाला मानवऊंर्धा जो जाया करता हैं। कभी अपनी श्रेष्ठता के मद में और कभी अपनी साधना–संपन्नता के मद में। इस प्रकार के मदों में अंधा होकर जब वह दूसरों पर भी प्रभावी होने का प्रयत्न करने लगता है, तब धर्म और विज्ञान दोनों की प्रगतियों, गतिविधियों और अस्तित्व के वास्तविक उद्‌देश्यों का अंत हो जाया करता है। तब दोनो ही मानवता को विनाश की विभीषिका ही दे पाते हैं।

धर्मरहित विज्ञान लंगडा हैं,
और विज्ञान रहित धर्म अंधा।

- अल्बर्ट आंइस्टीन

''धर्म, विज्ञान और कला,
वास्तव में एक ही पेड़ की शाखा - प्रशाखाएं हैं।

सलोनी निरवान
B.Sc. I

पर्यावरण और प्रदूषण - कारण और उपाय

पर्यावरण प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है। धरती के प्राणियों एवं वनस्पतियों को स्वस्थ व जीवित रहने के लिए हमारे पर्यावरण का स्वच्छ रहना अति आवश्यक है, किन्तु मानव अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रकृति का इस प्रकार से दोहन किया जा रहा है कि हमारा पर्यावरण दूषित हो चला है और आज पर्यावरण प्रदूषण भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की एक गंभीर समस्या बन गई है। प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ है – गंदगी। वह गंदगी जो हमारे चारों ओर फैल गई है और जिसकी गिरफत में पृथ्वी के सभी निवासी हैं।

प्रदूषण को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है – वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। ये तीनों प्रदूषण मानव के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिध्द हो रहे हैं। इसकी चपेट में मानव–समुदाय ही नहीं, समस्त जीव–समुदाय आ गया है। इसके दुष्प्रभाव चारों ओर दिखाई दे रहे हैं। प्रौद्योगिक उन्नति की आधुनिक दुनिया में, प्रदूषण एक गंभीर पर्यावरणीय मुद्दा बन गया है जो कि पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित कर रहा है। स्वाभाविक रूप से सुंदर वातावरण दिन–ब–दिन बिगड़ता जा रहा है। वाहनों के परिवहन की वजह से शहरों में प्रदूषण की दर गांवों की तुलना में अधिक है। वाहनों, फैक्टरिओं और उद्योगों से निकलने वाले धुएं शहरों में स्वच्छ हवा को प्रभावित कर रहे है जो कि सांस लेने के लिए उचित नही है।

बड़े सीवर सिस्टम से गन्दा पानी, घरों का कचरा, कारखानों और उद्योगों से निकलेवाला केमिकल मुक्त पानी, सीधे नदियों, झीलों और महासागरों को मिल रहें हैं। ज्यादातर ठोस अपशिष्ट, कचरा और अन्य अनुपयोगी वस्तु लोगों द्वारा भूमि पर फेंके जाते हैं जो की फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। शहरों में अधिकांश लोग सिर्फ अपने क्षणिक खुशी के लिए जन्मदिन, विवाह या अन्य अवसरों के दौरान फटाके फोड़कर व लाऊडस्पीकार से वायु व ध्वनि प्रदूषण फैलाते हैं। वाहनों की बढ़ती संख्या की वजह से शहरों में सभी सड़के दिन भर वाहनों से भरी रहती हैं। जो कि वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण के कारण हैं।

जीवन को बेहतर बनाने की भीड़ में, हर कोई अपनी आसान दिनचर्या के लिए अच्छी तरह के संसाधन चाहता है। इसकी चपेट में मानव–समुदाय ही नहीं, समस्त जीव–समुदाय आ गया हैं। लेकिन वे अपने प्राकृतिक परिवेश के बारे में नहीं सोचते। ज्यादातर वायु प्रदूषण सार्वजनिक परिहवन द्वारा होता है। कार्बनडाइऑक्साइड और कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसी विषैली गैसें है जो की वायु को प्रदूषित करती हैं और वातावरण में ऑक्सीजन के स्तर को कम कर रही हैं।

उत्पादक कारखानें भी लोगों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए वायु प्रदूषण में योगदान कर रहे हैं। निर्माण प्रक्रिया के दौरान कारखानों के द्वारा कुछ विषाक्त गैसें, गर्मी और ऊर्जा रिलीज होती है। कुछ अन्य आदतें जैसे कि खुले में घरेलू कचरे को जलाना आदि भी हवा की गुणवत्ता बिगाड़ रही हैं। वायु प्रदूषण इंसान और जानवरों में फेफड़ों के कैंसर सहित अन्य सांस की बीमारियां दे रहा है।

जल प्रदूषण भी एक बड़ा मुद्दा है जो सीधे समुद्री जीवन को प्रभावित करता है क्योंकि वे अपने उत्तरजीविता के लिए केवल पानी में पाए जाने वाले पोषक तत्वों पर निर्भर रहते हैं। धीरे–धीरे समुद्री जीवन का गायब होना वास्तव में मनुष्य और जानवरों की आजीविका पर असर डालेगा। कारखानों, उद्योगों, सीवेज सिस्टम और खेतों आदि के हानिकारक कचरे का सीधे तौर पे नदियों, झीलों और महासागरों के पानी के मुख्य

स्त्रोत में मिलना ही जल को दूषित करने का कारण है। दूषित पानी पीना गंभीर स्वास्थ्य संबंधी विकार उत्पन्न करता है।

अतः जलाशयों में प्रदूषित जल का शुध्दिकरण होना चाहिए। कोयला तथा पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग घटा कर सौर–ऊर्जा, पवन–ऊर्जा, बायोगैस, सी.एन.जी., एल.पी.जी., जल–विद्युत जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों का अधिकाधिक दोहन करना चाहिए। हमें जंगलों को कटने से बचाना चाहिए तथा रिहायशी क्षेत्रों में नए पेड़ लगाने चाहिए। इन सभी उपायों को अपनाने से वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को घटाने में काफी मदद मिलेगी।

ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए कुछ ठोस एवं सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है। रेडियो, टी. वी, ध्वनि विस्तारक यंत्रो आदि को कम आवाज में बजाना चाहिए।

प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है जिससे की हम एक स्वस्थ्य और प्रदूषण मुक्त वातावरण पा सकें। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदूषण को कम करने का एकमात्र उपाय सामाजिक जागरूकता है।

रश्मी बडेरे
B.Sc. I

प्रकृति एवं पर्यावरण प्रदूषण

प्राचीन काल से प्रकृति और मानव के बीच भावनात्मक संबंध रहा है। मानव अत्यंत कृतज्ञ भाव से प्रकृति के उपहारों को ग्रहण करता आया है। प्रकृति के किसी भी अवयय को क्षति पहुँचाना पाप समझा जाता है। बढ़ती जनसंख्या एवं भौतिक विकास के फलस्वरूप प्रकृति का असीमित दोहन प्रारंभ हुआ। भूमि से हमने अपार खनिज सम्पदा, डीजल, पेट्रोल आदि निकाल कर धरती की कोख को उजाड़ दिया। वृक्षों को काट–काट कर मानव समाज ने प्राकृतिक संपदा का उपयोग किया। वन्य जीवों के प्राकृतवास वनों के कटने के कारण वन्य–जीव बेघर होते गए। असीमित उद्योगों के कारण लगातार जहर उगलती चिमनियां वायुमंडल को विषाक्त कर रही है। हमारी पावन नदियाँ अब गंदे नाले का रूप ले चुकी हें। नदियों का जल विशाक्त होने के कारण उसमें रहने वाली मछलियाँ एवं अन्य जलीय जीव तड़प–तड़प कर मर रहे हैं। बढ़ते ध्वनि प्रदूषण से कानों के परदों पर लगातार घातक प्रभाव पड़ रहा है। लगातार घातक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग भूमि का उसरीला बना जा रहा है। पृथ्वी पर अम्लीय वर्षा का प्रकोप धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है तथा लगातार तापक्रम बढ़ने से पहाड़ों की बर्फ पिघल रही है जिससे पृथ्वी के अस्तित्व को खतरा होता रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण जो मानव सभ्यता के अस्तित्व को चुनौती दे रहा हैं स्थिती यहाँ तक आ गई है कि सृष्टि का भविष्य संकटग्रस्त हैं। पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख स्वरूप निम्न प्रकार है :–

१. वायु प्रदूषण :- मानव को प्रकृति प्रदत्त एक निःशुल्क उपहार मिला है और वह है वायु। यह उपहार सभी जीवों का आधार है

क्र.	प्रदूषक	प्रभाव
१.	आर्सेनिक	कैंसर, ब्लेट फुट रोग
२.	कैडमियम	उच्च रक्तचाप, रक्तकणिकाओं का क्षय, मिचली, दस्त, हृदय रोग
३.	बेरेलियम	कैंसर
४.	फ्लोराइड	दांतो का फ्लोरोसिस रोग, हड्डियों का क्षय
५.	सिलेनियम	बालों का झड़ना, त्वचा संबंधी रोग

२. सूक्ष्म–जीव जल में घुले हुये ऑक्सीजन के एक बड़े भाग को अपने उपयोग के लिए अवशोषित कर लेते है। जब जल में जैविक द्रव्य बहुत अधिक होते हैं तब जल में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है। जिसके कारण जल में रहने वाले जीव–जन्तुओं की मृत्यु हो जाती है।

३. औद्योगिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न रासायनिक पदार्थ प्रायः क्लोरीन, अमोनिया, हाइड्रोजन सल्फाइड, जस्ता, सीसा, निकिल एवं पारा आदि विषैले पदार्थो से युक्त होते हैं। यदि यह जल पीने के माध्यम से शरीर में पहुँच जायें तो गंभीर बीमारियों का कारण बन जाता है जिसमें अंधापन, शरीर के अंगो को लकवा मार जाना और श्वसन क्रिया आदि का विकार शामिल है। जब यह जल, कपड़ा धोने अथवा नहाने के लिये नियमित प्रयोग में लाया जाता है तो त्वचा रोग उत्पन्न हो जाता है।

४. प्रदूषित जल से खेतों में सिचाई करने पर प्रदूषक तत्व पौधों में प्रवेश कर जाते हैं। इन पौधों अथवा इनके फलों को खाने से अनेक संक्रामक बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

जल प्रदूषण रोकने के उपाय :-

१. अत्याधिक रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को रोका जाना चाहिए तथा उसके स्थान पर गोबर की खाद का प्रयोग किया जाना चाहिए।

२. रासायनिक साबुनों के बढ़ते प्रयोग को कम किया जाना चाहिए।

३. उद्योगों के कचरे को नदियों में मिलाने से पूर्व उसमें उपस्थित कार्बनिक तथा अकार्बनिक पदार्थों को नष्ट कर देना चाहिए।

४. रेडियो एक्टिव पदार्थ, अस्पतालों एवं रासायनिक प्रयोगशालाओं के कूड़े को जल में मिलाने के स्थान पर उसे जमीन में गाड़ना चाहिएं। जल संकट की ओर विश्व जनमन का ध्यान आकृष्ट करने हेतु प्रति वर्ष २२ मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है।

३. ध्वनि प्रदूषण :- अनियंत्रित, अत्यधिक तीव्र एवं असहनीय ध्वनि को ध्वनि प्रदूषण कहते हैं। ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता को 'डेसिबल इकाई' में मापा जाता हैं। शून्य डेबिल, ध्वनि की तीव्रता का वह स्तर है, जहाँ से ध्वनि सुनाई देने लगती है। फुसफुसाहट में बोलने पर ध्वनि की तीव्रता ३० डेसीबल होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार ४० से ५० डेसिबल तक की ध्वनि मनुष्य के सहने लायक होती हैं। उससे अधिक की तीव्रता की ध्वनि मनुष्य के लिए हानिकारक होती है। मानव के परिप्रेक्ष्य में ध्वनि का स्तर निम्न प्रकार है –

क्र.	क्रिया	ध्वनि का स्तर (डेसिबल में)
१.	सामान्य श्रवण की सीमा	२०
२.	सामान्य वार्तालाप	५०–६०
३.	सुनने की क्षमता में गिरावट	७५
४.	चिड़चिड़ाहट	८०
५.	मांस–पेशियों में उत्तेजना	९०
६.	दर्द की सीमा	१२०

ध्वनि प्रदूषण का कारण :-

१. औद्योगिक क्षेत्रों में उच्च ध्वनि क्षमता के पावर सायरन, हॉर्न तथा मशीनों के द्वारा होने वाले शोर।

२. शहरों एवं गाँवों में किसी भी त्यौहार व उत्सव में, राजनैतिक दलों के चुनाव प्रचार व रैली में लाउडस्पीकरों का अनियंत्रित उपयोग।

३. अनियंत्रित वाहनों के विस्तार के कारण उनके इंजन एवं हार्न के कारण।

४. जनरेटरों एवं डीजल पम्पों आदि से ध्वनि प्रदूषण।

ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव :- पर्यावरण प्रदूषण के अन्य स्वरूपों के साथ ध्वनि प्रदूषण भी हमारे लिये बड़े खतरे का कारण है। अधिक शोर से हमारे मस्तिष्क पर धातक प्रभाव पड़ता है तथा सुनने की शक्ति लगातार घटती जाती है जिससे धीरे–धीरे बहरापन आ जाता है। ध्वनि प्रदूषण से हृदय गति बढ़ जाती हैं। नवजात शिशुओं के स्वास्थय पर ध्वनि प्रदूषण का बुरा प्रभाव पड़ता है तथा इससे कई प्रकार की शारीरिक विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं। गैस्ट्रिक, अल्सर ओर दमा जैसे शारीरीक रोगों तथा थकान एवं चिड़चिड़ापन जैसे मनोविकारों का कारण भी ध्वनि प्रदूषण ही है।

ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण :

१) यथासंभव लाउडस्पीकरों का उपयोग प्रतिबंधित कर

देना चाहिये। जब तक अत्यंत आवश्यक न हो इनके उपयोग की अनुमति नहीं देनी चाहिये। लाउडस्पीकरो का उपयोग चिकित्सालयों एवं शिक्षण संस्थानों आदि से ५०० मी. से अधिक दूरी पर ही किया जाना चाहिये।

२) घरों में रेडियो, टेप, टेलीविजन का उपयोग कम आवाज में करना चाहिये।

३) वाहनों के हार्न का उपयोग कम से कम करना चाहिये।

४) वाहनों के सायलेंसरों एवं इंजन की देखभाल समय से करनी चाहिये।

५) हवाई जहाजों एवं जेट विमानों को निर्धारित उँचाई पर ही उड़ाना चाहिये।

६) पटाखों का उपयोग कम से कम करना चाहिये।

७) सड़कों के किनारे वृक्ष लगाकर ध्वनि प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

८) रेलगाड़ी से उत्पन्न शोर को बैलास्ट विहीन रेल पथों के निर्माण द्वारा दूर किया जा सकता है।

मृदा प्रदूषण : वर्षा से भूमि की संरचना का बिगड़ना, दिन–प्रतिदिन उर्वरकों का प्रयोग, चूहे मारने की दवा आदि का प्रयोग तथा फसलों को बीमारी से बचने के लिये दवा का छिड़काव भूमिक की उर्वरकता को नष्ट कर देता है तथा ऐसा प्रदूषण मृदा प्रदूषण कहलाता है।

मृदा प्रदूषण का कारण :

१. सल्फर डाईऑक्साइड एवं नाइट्रोजन डाइऑक्साइड वर्षा से क्रिया करके अम्ल बनाती हैं जिसे अम्लीय वर्षा करते हैं। अम्लीय वर्षा भूमि की उर्वरकता को नष्ट करती है।

२. कई उर्वरक जैसे अमोनियम सल्फेट, यूरिया, कैल्शियम सायनामाइड, अमोनियम नाईट्रेट एवं कैल्शियम सुपर फॉस्फेट आदि का लगातार प्रयोग मृदा की उर्वकरता को नष्ट करता है।

३. सब्जी, फलों तथा फूलों पर लगने वाले कीड़ों को मारने के लिये किया जाने वाला रासायनिक छिड़काव मृदा को प्रदूषित करता है।

रेडियो एक्टिव प्रदूषण : नाभिकीय परमाणु परिक्षणों के फलस्वरूप कई रेडियो एक्टिव तत्व जैसे यूरेनियम, थोरियम, प्लूटोनियम तथा रेडियो एक्टिव किरणें जैसे–अल्फा, बीटा व गामा किरणें वातावरण में प्रवेश करके रेडियोधर्मी प्रदूषण उत्पन्न करते है।

रेडियो एक्टिव प्रदूषण का कारण : नाभिकीय भट्टियाँ तथा युध्द में प्रयोग हो रहे नाभिकीय बम तथा अन्य सामग्री तथा नाभिकीय परिक्षण आदि रेडियोधर्मी तत्व, किरणें आदि निकलकर वातावरण में प्रवेश कर वायु, जल तथा मृदा को हानि पहुँचाती है।

रेडियो एक्टिव प्रदूषण का प्रभाव

१) रेडियोएक्टिव पदार्थ वातावरण में इतनी अधिक मात्रा में ऊर्जा उत्सर्जित करते हैं की इससे पौधों की कोशिकाएं तथा जानवरों एवं मनुष्यों की कोशिकाएं भी नष्ट हो जाती है।

२) रेडियो धर्मी प्रदूषण के आस–पास रहने के टयूमर हो जाता है तथा समय से पूर्व की बाल सफेद हो जाते है।

३) नाभिकीय विस्फोट से नदियों तथा समुद्र का जल प्रदूषित हो जाता है जिससे समुद्री जीव–जंतु नष्ट हो जाते है।

४) रेडियोएक्टिव तत्व स्ट्रान्शियम मृदा को नष्ट कर देता है।

५) गामा रेडियो एक्टिव किरणें अत्यधिक खतरनाक होती हैं। अत्याधिक भेदन क्षमता होने के कारण इनसे उत्सर्जित ऊर्जा से जीवित कोशिकाएं आदि नष्ट हो जाती है।

रेडियो एक्टिव प्रदूषण का निदान : परमाणु एवं नाभिकीय परिक्षणों को सीमित करना।

जलवायु परिवर्तन : पृथ्वी के उपद्रव से लेकर आज तक इसमें निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इसकी गती कभी तीव्र होती है तो कभी मंद। पर्यावरण के प्रमुख भौगोलिक घटक जैसे ताप, वायुदाब, आर्द्रता, वायु वेग, वर्षा आदि जलवायु का निर्माण करते हैं।

विगत वर्षों से जनसंख्या वृध्दि, औद्योगिकरण, वन विनाश, स्वचालित वाहनों में वृध्दि तथा रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से पर्यावरण को क्षति पहुँची है तथा जलवायु के विभिन्न तत्वों जैसे – ताप, वायुदाब, आर्द्रता वायु वेग, वर्षा आदि में व्यापक परिवर्तन हुआ हैं। इन

परिवर्तनों के कारण मानव अस्तित्व खतरे में है। जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण के निम्न प्रकार है –

प्राकृतिक कारण :- मृदा क्षरण, बाढ़, तूफान, चक्रवात, भूस्खलन, ज्वालामुखी, दावाग्नि, सूखा, आँधी एवं भूकम्प आदि।

मानवीय कारण :- जनसंख्या वृध्दि, औद्योगीकरण, वन विनाश, यातायात के साधन, अनियोजित नगरीकरण, संसांधनों का असीमित दोहन आदि।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य प्रभाव के निम्न प्रकार है :-

१) ग्रीन हाऊस, प्रभाव तथा वैश्विक ताप में वृद्धि
२) अम्लीय वर्षा
३) ओजोन परत का क्षरण
४) नाभिकीय दुर्घटनाएं
५) प्रचण्ड अग्निकाण्ड
६) भू–स्खलन
७) अकाल

पॉलीथीन प्रदूषण - प्राथमिक रूप से प्लास्टिक थैलों, प्लास्टिक फिल्म व बोतल आदि जैसे वाहकों में प्रयुक्त होने वाली पॉलीथीन सर्वप्रथम संयोगवश संश्लोषित हुई। वर्ष १८९९ में जर्मन रसायनशास्त्र हास वान पेचमान द्वारा डाइ एजोमीथेन को गर्म करते समय पॉलीएथीलीन या पॉलीथीन सर्वप्रथम संयोगवश संश्लेषित हुई। सर्वाधिक प्रयोग होनेवाली प्लास्टिक उनके सहयोगियों यूजेन बामबर्गर व फ्रेडिक शीरनर ने इस वेत पदार्थ जो – CH_2 की लंबी श्रृंखला धारित करती है, को पॉलीमेथीलीन नाम दिया। पॉलीएथीलीन या पॉलीथीन का वैज्ञानिक (IUPAC) नाम पाली ईथीन या पालीमेथीलीन है।

पॉलीथीन प्रदूषण के प्रभाव :-

१) पॉलीथीन थैली या प्लास्टिक को जलाने पर जहरीली गैस निकलती है।
२) पॉलीथीन या प्लास्टिक भूमि, जल एवं वायु तीनों के लिये अभिशाप है। धरती पर इसके गलने में ४०० वर्ष से भी अधिक का समय लगता है।
३) जहाँ अत्यंत आवश्यक न हो, पानी हेतु प्लास्टिक की बोतल का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
४) विवाह समारोह व अन्य पर्वों पर प्लास्टिक का प्लेट तथा कप के स्थान पर पत्तल देना तथा मिट्टि के कुल्हड़ के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता है।

मानव बिना भोजन एवं बिना जल के कुछ समय भले ही व्यतीत कर ले, बिना वायु के वह दस मिनट भी जीवित नहीं रह सकता। यह अत्यंत चिन्ता का विषय है की प्रकृति प्रदत्त जीवनदायिनी वायु लगातार जहरीली होती जा रही है। शहरों का असीमित विस्तार, बढ़ता औद्योगीकरण परिवहन के साधनों में लगातार वृद्धि तथा विलासिता की वस्तुएं वायु प्रदूषण को लगातार बढ़ावा दे रही है। मानव २४ घंटे में लगभग २२,००० बार साँस लेता है तथा इसमें प्रयुक्त वायु की मात्रा लगभग ३५ गैलन या १६ कि.ग्रा. है। ऐसी वायु जो हानिकारक अवयवों से मुक्त हो, उसे शुद्ध वायु कहते हैं। वायु के मुख्य संघटकों में नाइट्रोजन, ऑक्सीजन एवं कार्बन डाई ऑक्साईड हैं। उक्त के अतिरिक्त वायुमण्डल में थोडी मात्रा में आर्गन या नियॉन जैसी विरल गैसें भी पाई जाती है। वायुमण्डल में प्रमुख गैसों की सान्द्रता निम्न प्रकार है –

१.	नाइट्रोजन	७९.२० प्रतिशत
२.	ऑक्सीजन	२०.६० प्रतिशत
३.	कार्बन डाइ ऑक्साइड	०.२० प्रतिशत
४.	अन्य	अति सूक्ष्म रूप में

आधुनिक युग में उद्योगों की चिमनियों, बढ़ते वाहनों एवं अन्य कारणों से वायुमण्डल में अनेक हानिकारक गैसें मिश्रित हो रही है जिनमें सल्फर डाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, नाइट्रोजन के विभिन्न ऑक्साइड, क्लोरो फ्लोरो कार्बन एवं फार्मेलिडहाड मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त सड़कों पर चल रहे वाहनों से निकला सीसा (लेड), अधजले हाइड्रोकार्बन और विषैला धुआँ भी वायुमण्डल को लगातार प्रदूषित कर रहे हैं। वायुमण्डल वातावरण के इस असंतुलन को 'वायु प्रदूषण' कहते हैं।

२. जल प्रदूषण - जल में ठोस कार्बनिक, अकार्बनिक पदार्थ, रेडियोएक्टिव तत्व, उद्योगों का कचरा एवं सीवेज से निकला हुआ पानी मिलने से जल प्रदूषित हो जाता है।

जल प्रदूषण के कारण :-

१. उद्योगों से निकलनेवाला कचरा कई धातुयें जैसे

मरकरी, कैडमियम एवं लेड आदि अपने साथ निकालता है।

२. सीवेज का जल मानव तथा पशुओं के मल को अपने साथ ले जाता है, जिसमें कई जीवाणु, हानिकारक पदार्थ जैसे यूरिया एवं यूरिक एसिड आदि मिले रहते हैं।

३. बहुत से साबुनों से निकालने वाला पानी भी जल को प्रदूषित करता हैं।

४. निर्माण कार्य में प्रयुक्त पदार्थ, इमारतों में प्रयोग होने वाले पदार्थ जैसे फास्फोरिक एसिड, कार्बोनिक एसिड, सल्फयूरिक एसिड आदि नदि में मिलकर जल प्रदूषण फैलाते है।

५. कुछ कीटनाशक पदार्थ जैसे डीडीटी, बीएचसी आदि के छिड़काव से जल पद्रूषित हो जाता है तथा समुद्री जानवरों एवं मछलियों आदि को हानि पहुँचाता है। अतंतः खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करते हैं।

६. नाइट्रेट तथा फॉस्फेट लवण ही साधारणतया उर्वरक के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। यह लवण वर्षा में मिट्टी के साथ मिलकर जल को प्रदूषित कर देते हैं।

७. कच्चा पेट्रोल, कुँओं से निकालते समय समुद्र में मिल जाता है जिससे जल प्रदूषित होता हैं।

जल प्रदूषण के प्रभाव - भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली बीमारियों का एक मुख्य कारण प्रदूषित जल है। अतिसार, पेचिश, हैजा एवं टायफाइड आदि दूषित जल के प्रयोग से ही होते है।

निदा शेख
B.Sc. I

जल संवर्धन मानवी आवश्यकता

पानी या जल एक रासायनिक पदार्थ हैं। जिसका अणु दो हाइड्रोजन परमाणु और एक ऑक्सीजन परमाणु से बनता हैं। यह सारे प्राणियों के जीवन का आधार हैं। आमतौर पर जल शब्द का प्रयोग द्रव के लिए उपयोग में लाया जाता हैं। यह गैस अवस्था बर्फ और गैसीय अवस्था (भाप या जल बाष्प) में भी पाया जाता हैं। पानी जल–आत्मीय सतहों पर तरल–क्रिस्टल के रूप में भी पाया जाता हैं।

जल लगातार एक जल चक्र में घूमता रहता हैं। जिसे जलचक्र कहते हैं, इसमें वाष्पीकरण या ट्रांस्पिरेशन, वर्षा और बह कर सागर में पहुँचना शामिल हैं। साफ़ और ताज़ा पेयजल मानवीय और अन्य जीवन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन दुनिया के कई भागों में खासकर विकासशील देशों में भयंकर जलसंकट हैं और अनुमान हैं कि दो हजार पच्चीस तक विश्व की आधी जनसंख्या इस जलसंकट से जूझेगी। जल विश्व अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

पानी के स्त्रोत

प्रत्येक आवास स्थल पर पानी की आवश्यकता पूर्ती के लिए कुँआ, बोरवेल अथवा भूमिगत पानी के टैंक का निर्माण किया जाता हैं। इसके लिए वास्तु विषय हमें सही दिशा–निर्देश देता हैं, जिसका पालन करना अत्यंत आवश्यक होता हैं। वास्तु के दिशा निर्देष के अनुसार बनाये गये भूमिगत पानी के स्त्रोत से शुभ फल तथा वास्तु के सिध्दांतों के विपरित दिशा में बनाने में दुष्परिणाम प्राप्त होते हैं, ऐसा लोगों का मानना है।

नीचे दिए गए निर्देशित अलग अलग दिशा में बनाये गऐ भूमिगत पानी के स्त्रोत से प्राप्त होने वाले पृथक परिणाम हैं :–

दिशा		परिणाम
१) पूर्व	–	मान –सम्मान एवं ऐश्वर्य में वृध्दि
२) पश्चिम	–	मानहानि, शरीर के आंतरिक शक्ति एवं अध्यात्मिक भावना में वृध्दि
३) उत्तर	–	सुखदायक, धन लाभ
४) दक्षिण	–	स्त्री नाश, धनहानि महिला वर्ग का जीवन कष्टमय

५) पूर्व–ईशान – अत्यंत शुभ–सौभाग्य–समृध्दिदायक

६) उत्तर–ईशान– आर्थिक उन्नतिकारक

७) आग्नेय – पत्नी व संतान के लिये घातक, पुत्र नाश अनारोग्य, वाद–विवाद, विशेषतः द्वितीय संतान के जीवन के लिए अशुभ फलदायक

८) वायव्य – मानसिक अंशाति, शत्रु पीड़ा, निर्धनता, चोरी, अदालत के चक्कर, शुभ कार्य में विध्न

९) नैऋत – गृह मालिक का जीवन मृत्यु तुल्य, अत्ति अशुभ फलदायक, धन नाश, बुरे व्यसन का शिकार

१०) ब्रहम स्थल – धन नाश, मानसिक, विक्षिप्तता, आर्थक दिवालियापन की स्थिति

पानी बचाने के उपाय :-

- टपकता हुआ नल सप्ताह में ९० लीटर तक पानी बर्बाद कर सकता हैं। इसलिए हमें नल अच्छे से बंद करना चाहिए।
- ब्रश करते समय पानी चलता रखने में ६ लीटर प्रति मिनट पानी बर्बाद होता हैं, मग का प्रयोग करने से पानी बचाया जा सकता हैं।
- पानी फ्रीज में रखने से ठंडे पानी के लिए जल खुला नहीं छोडना चाहिए। इससे पानी की बचत होती हैं।
- टैंक में पानी बचाने वाले उपकरण के प्रयोग से पानी बचाया जा सकता हैं। टैंक खरीदकर वर्षा जल का संग्रह किया जा सकता हैं।
- स्थानीय गार्डन सेन्टर से किस पौधे को कितने पानी की आवश्यकता है, कुछ पौधे शुष्क मौसम में सूख सकता हैं। इसकी जानकारी के अनुसार पौधों को पानी डालना चाहिए।
- बाथटब से पानी जयादा बर्बाद होता हैं, जितना पानी एक दिन में चार सदस्यों के परिवार के लिए पर्याप्त हैं उतना पानी बाथटब से बर्बाद होता हैं।
- गंदा पानी अपने फिश टैंक को साफ़ करने के बाद पौधों में डालें, इसमें फास्फोरस और नाइट्रोजन की अधिकता होने के कारण पौधों को अच्छा पोषण मिलेगा।
- वाशिंग मशीन का प्रयोग करके भी पानी बचाया जा सकता हैं। इससे ऊर्जा की भी बचत होगी।
- पाँच मिनट के शावर से पानी बचाया जा सकता हैं।
- वाटर मीटर लगाने से, यह देखकर कि कितना पानी प्रयोग हुआ हैं आप पानी बचा सकते हैं।
- पानी बगीचे को तापमान कम होने पर दें ताकि वाष्पीकरण तेज़ी से न हो।
- जल संरक्षण के लिए बगीचे में ही कंकड़, पत्थर, ईंटों आदि के प्रयोग द्वारा सजावट के साथ–साथ जल संरक्षण भी किया जा सकता हैं।

पानी के बर्बाद होने के दुष्परिणाम

इस समय हमारे देश में ऐसे कई गाँव हैं जहाँ पानी की कमी है इसीलिए उन गाँव के लोग पानी के लिए तरसते हैं लेकिन यह बाह कई लोगों को समझ ही नहीं आती। दरअसल हम पानी को अपने हिस्से में आयी जायदाद मानते हैं। शासकीय हैंडपंप को इतनी बेरूखी से चलाते हैं कि उसके प्राण चलाने वाले के हाथ में आ जाते हैं। आज ज्यादातर लोगों की सोच दूसरे की प्यास की कीमत पर अपना आनन्द भोगने की है। इस प्रकार हमने पानी को बहाकर बर्बाद किया है और धरती के अंदर छिपे हुए भूमिगत पानी के घड़े का भी भी अनियंत्रित तरीके से दोहन करके खाली कर दिया है और आज सभी के सामने सूखा, गर्मी और अनावृष्टि जैसे परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

बुजुर्गों ने कहा भी है -

धरती माँ की कोस में जल के हैं भंडार।
बूँद–बूँद को तड़फते, फिर भी हम लाचार।
जल के दोहन के लिए, लगा दिया सब ज्ञान।
पुनर्भरण से हट गया, सब कृषकों का ध्यान।।

हमने गलती कहां की – हमने अपने ज्ञान का उपयोग पानी को बर्बाद करने के साथ–साथ धरती के अंदर छिपे हुए भूमिगत जल को अनियंत्रित तरीके से उसकी छाती से

मशीनों के द्वारा छिद्र करके दोहन किया। हमने कभी भी इस जल को फिर से जमीन में पहुंचाने का प्रयास ही नहीं किया। बल्कि कुंए और नलकूपों की गहराई ही बढ़ाते चले गए।

यदि पानी ना हो तो

क्या आपने कभी सोचा कि अगर दुनिया से पानी खत्म हो गया तो क्या होगा। कैसा होगा तब हमारा जीवन। आमतौर पर ऐसे सवालों को हम और आप कंधे उचकाकर अनसुना कर देते हैं और ये मान लेते हें कि ऐसा कभी नहीं होगा। काश हम बुनियादी समस्याओं की ओर गंभीरता देखे तो तर्को, तथ्यों और हकीकत के धरातल पर महसूस होने लगेगा कि वाकई हम खतरनाक हालात की ओर बढ़ रहे हैं।

पानी की कमी की बात करते ही एक बात हमेशा सामने आती हैं कि दुनिया में कहीं भी पानी की कमी नहीं है। दुनिया के दो तिहाई हिस्से में तो पानी ही पानी भरा है। यहां ये बताना जरूरी होगा की मानवीय जीवन जिस पानी से चलता है उसकी मात्रा पूरी दुनिया में पाँच से दस फीसदी से ज्यादा नहीं है। नदियाँ सूख रही हैं। ग्लेशियर सिकुड़ रहें हैं। झीलें और तालाब लुप्त हो चुके है। कुओं का रखरखाव नहीं होता। भूगर्भीय जल का स्तर तेजी से कम होता जा रहा हैं। हालात सचमुच चिंताजनक है – आखिर किस ओर बढ़ रहे हैं हम। हमें पानी को बर्बाद होने से बचाना चाहिए इसिलिए इस संदर्भ मे रहीम ने कहा है –

रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे, मोती, मानुस, चून।।

रहीम जी कहते हैं कि पानी को बर्बाद मत करो, बिना पानी के कुछ नहीं है क्योंकि अगर पानी नहीं होगा तो मोती, मनुष्य और आटा का कोई मुल्य नहीं होगा।

पानी संवर्धन का महत्व

हमारे जीवन में जल का अनन्य महत्व है। जल के बिना कुछ भी संभव नहीं है। पृथ्वी पर जल पाया जाता है इसलिए इसे अनोखा ग्रह कहते हैं। जल के कारण ही आज मनुष्य जाति पृथ्वी पर विकसित हो सकी है। मनुष्य पशुओं पेड़–पौधों सभी के लिए जल आवश्यक होता है।

मानव जीवन के लिए जल का महत्व :- मनुष्य के लिए जल बहुत महत्वपूर्ण है। बिना भोजन किए मनुष्य ७ दिनों तक जीवित रह सकता है पर बिना जल पिए वह ३ दिन में ही मर जाएगा। हम सभी लोगों को प्यास लगती हैं और प्यास बुझाने के लिए जल का प्रयोग करते हैं।

स्वस्थ रहने के लिए जल का महत्व - मनुष्य के शरीर में ७५ से ८०% तक जल पाया जाता है। रक्त में ७% जल होता है। स्वस्थ रहने के लिए हमें साफ और शुध्द जल का सेवन करना चाहिए। दूषित जल पीने से पीलिया, गैस, संक्रामक रोग, चेचक जैसी बीमारियां हो जाती हैं।

पेड़ पौधों के लिए जल का महत्व - मनुष्य की तरह पेड़ पौधों को भी जल की आवश्यकता होती है। पौधे अपनी जड़ों से जल ग्रहण करते हैं और सभी शाखाओं पत्तियों तक जल पहुंचा देते हैं। पेड़ पौधे विकसित नहीं होते। पानी ना मिलने पर सभी पेड़ पौधे मुरझा जाते हैं और शीघ्र ही सूख जाते हैं।

पशु, पक्षी और अन्य जीवों के लिए जल का महत्व - मनुष्य की तरह पशु–पक्षियों और अन्य जीवों को भी प्यास लगती है। गाय, भैंस, बकरी, भेड़, शेर, पक्षी और दूसरे जीव भी पानी पीते हैं। पानी बिना कोई भी जीवित नहीं रह सकता है। कुछ ही ऐसे दुर्लभ जीव हैं जो ना के बराबर पानी का सेवन करते हैं, पर अधिकतर पशु–पक्षी और जीव–जंतु पानी का इस्तेमाल करते हैं।

गायत्री देवतळे
B.Sc. I

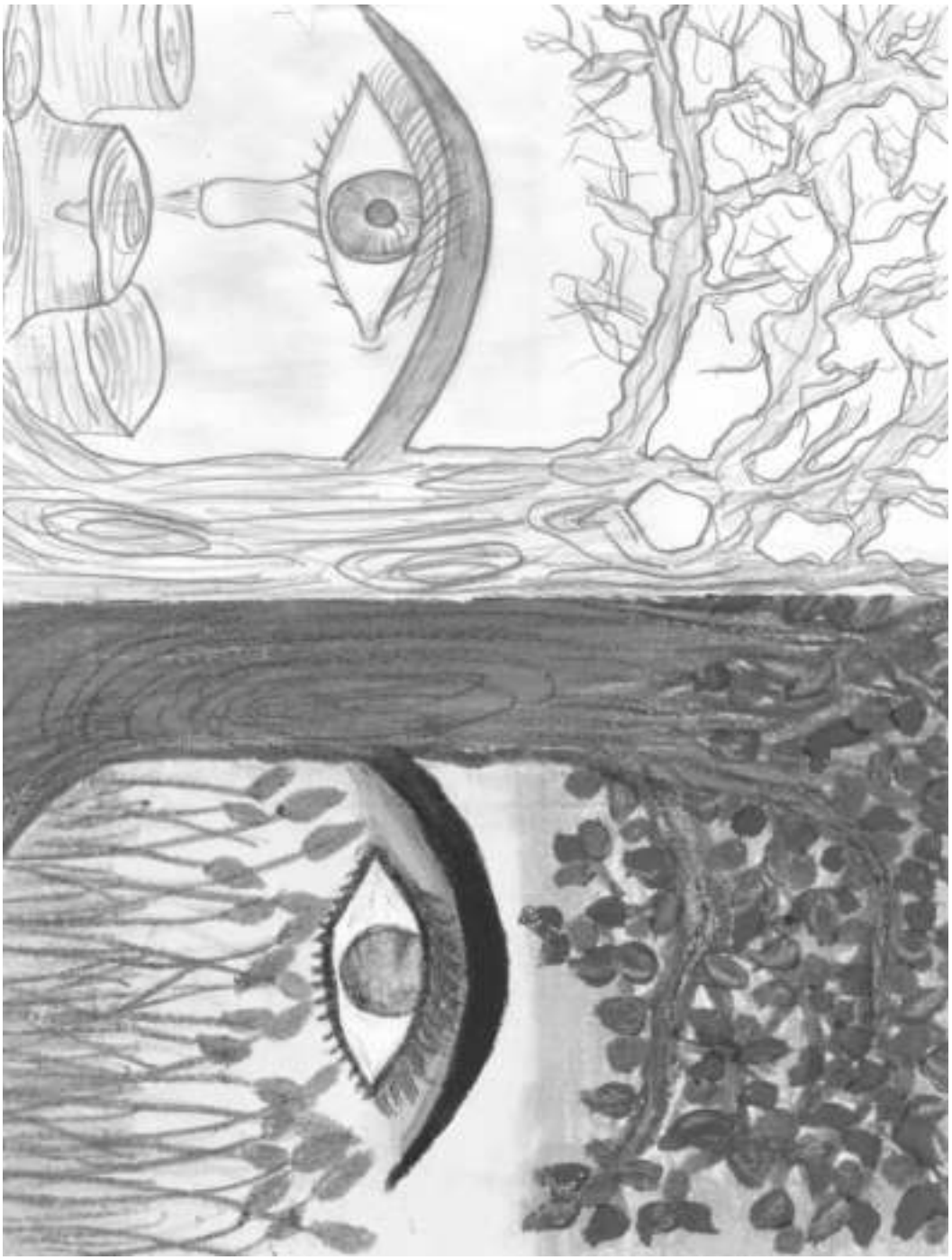

रुचिका निंबाळकर
B.Sc. I

अपेक्षा गारसे
B.Sc. III (Sem V)

अंजली टिगाले
B.Sc. Sem (III)

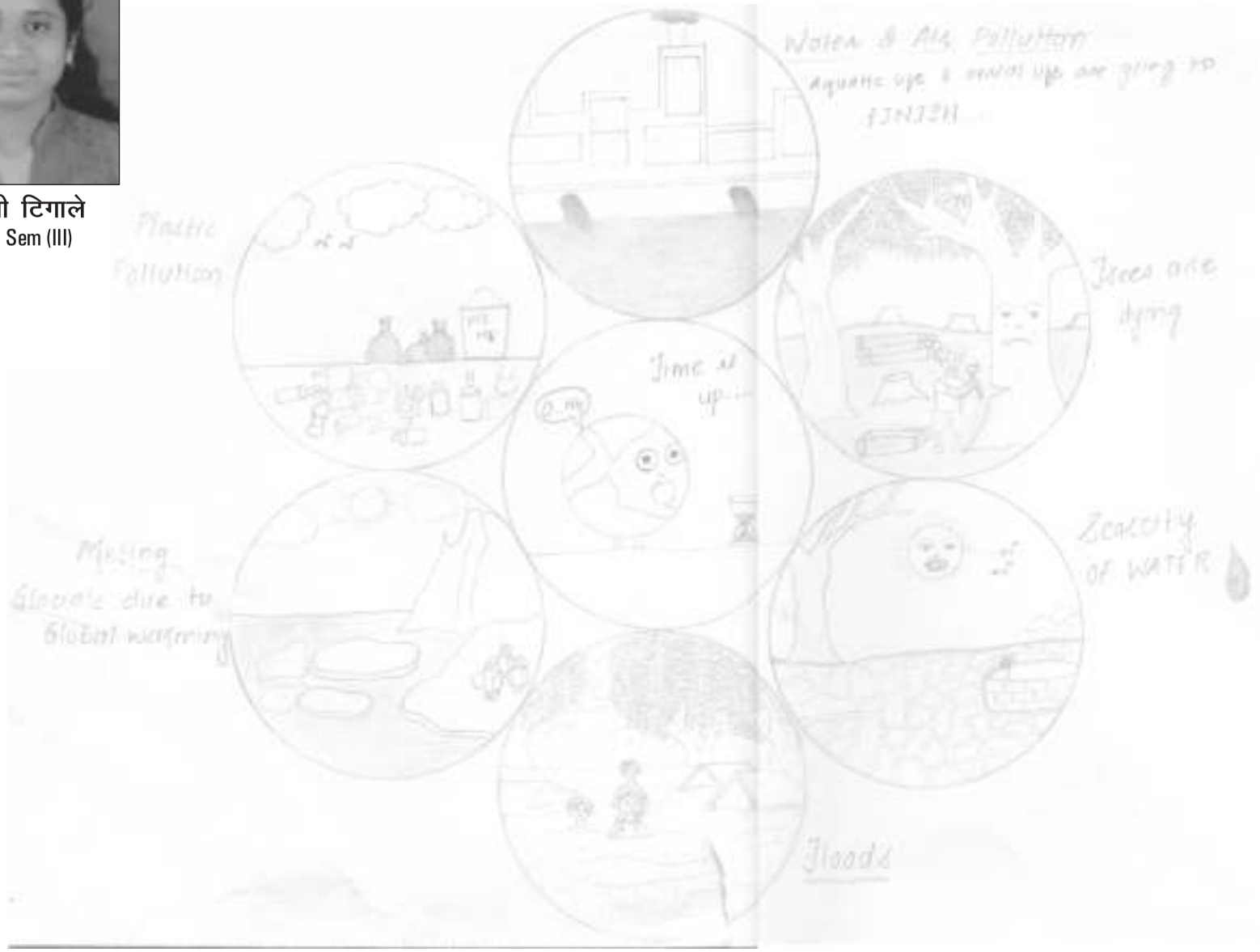

VIGYANIKA
2019-20

महाराष्ट्राचे लाडके व्यक्तीमत्व - पु.ल. देशपांडे

'पुलस्पर्श होताच, दुःखे पळाली
नवा सूर, आनंदयात्रा मिळाली
निराशेतुनी माणसे मूक झाली
जगू लागली, हास्यरांगे न्हाली'

सुप्रसिध्द कवी मंगेश पाडगावकरांनी पु.ल. विषयी काढलेले वरील मौखोद्‌गार अगदी सार्थ आहेत. पु.ल. देशपांडे या अष्टपैलू कलावंताचा जन्म १९१९ मध्ये झाला. त्यांचे शिक्षण मुंबई व पुणे एम.ए.एल.एल.बी. पर्यंत झाले. त्यांच्या साहित्य वाचनाच्या आवडीमुळे विशेष करून बंगाली साहित्याबद्‌दल त्यांना आत्मीयता असल्यामुळे, संस्कृतबरोबर बंगाली भाषा ते परिश्रमपूर्वक शिकले. त्यांच्या सुरूवातीच्या काळात त्यांनी लिपिक, शिक्षक, पुढे कॉलेजात प्राध्यापक पदाचा कार्यभारही सांभाळला. साहित्यातील सर्वच कलेच्या प्रातांत त्यांनी मुशफिरी केली. आकाशवाणीवर काही वर्षे नाट्यविभागाचे प्रमुख म्हणून काम केले. विशेष म्हणजे दिल्ली दूरदर्शनवरील कार्यक्रमांचे ते पहिले निर्माते होते.

'बटाटयाची चाळ' नावावे त्यांचे पुस्तक मला खूप आवडले. केवळ विनोद म्हणून त्यात बाष्कळपणा येऊ न देता, हसवत–हसवत त्यांनी मानवी जीवनातील कारूण्याचा पदर नकळत आपल्या लेखनातून उलगडून दाखवला. त्यांच्या लेखनातील सर्वच पात्रे ही सर्वसामान्य स्तरावरील आणि दैनंदिन जीवनाचा भाग असलेली अशीच आहेत, म्हणून वाचणाऱ्याला ती आपलीशी वाटतात. त्यातून होणारी विनोद निर्मिती आनंद देऊन जाते, तर कधी आपसूक डोळ्यांच्या कडा ओलावते.

पु.ल. जवळ असामान्य निरीक्षणशक्ती होती. त्यांच्या लहानपणी त्यांच्या घरी येणाऱ्या सर्वच लहान–मोठ्या पाहुण्यांचे पु.ल. अगदी बारकाईने अचूक निरीक्षण करीत असत. त्यामुळे त्यांच्या घरातील लोकांना छोटा बाळ पु.ल. काहीतरी भयंकर तर बोलणार नाही ना ? अशी भीती वाटे.

पु.ल. च्या स्वभाव निरीक्षणाच्या अचूकतेतूनच 'व्यक्ती आणि वल्ली' साकार झाले. मानवी स्वभावाचे वैविध्यपूर्ण पैलू उलगडून त्याच्या आयुष्यातील दुःखाची हलकी किनार आपल्यापर्यंत पोहचवण्याची पु.ल. ची शब्दकिमया काही औरच होती. याच पुस्तकातील 'नारायण' हे पात्र तर आपल्या मनाच्या कोपऱ्यात चिरकाल स्थान मिळवून होते. तीच गोष्ट पु.लं. च्या 'गणगोत' पुस्तकाबाबतही सांगता येते. ही व्यक्तिचित्रे वाचत असतांना कळत–नकळत ती आपल्या भोवतालची आसपासची वाटू लागतात. आता चाळ संस्कृती लोप पावते आहे. तो आपलेपणा, देवाणधेवाणीचे कार्यक्रम हे प्रकार 'बटाटयाची चाळ' वाचतांना अनुभवास येतात. तिथे जीवाला जीव देणारे अडीअडचणीला उपयोगी पडणारे शेजारी भेटतात. तसेच आपापल्या स्वभाव वैशिष्ट्यांनी आपला वेगळेपणा टिकवून ठेवणारे काही नमुनेदार व्यक्तिसुध्दा भेटतात. पु.ल. च्या प्रत्येक पुस्तकातील प्रत्येक माणूस तसेच आपापल्या स्वभाव वैशिष्टयांनी आपला वेगळेपणा टिकवून ठेवणारे काही नमुनेदार व्यक्तिसुध्दा भेटतात. पु.ल. च्या प्रत्येक पुस्तकातील प्रत्येक माणूस आपल्यापरीने वेगळा आहे.

पु.ल. नी आपल्या आयुष्यात देश–विदेशात भरपूर प्रवास केला. या प्रत्येक प्रवासात त्यांनी भेटलेल्या माणसांचे बेरकेपण, भेटलेल्या माणसांच्या स्वभाववृत्तीच्या सूक्ष्म वर्णनासह त्या व्यक्तिरेखाही 'अपूर्वाई' 'पूर्वरंग', 'जावे त्याच्या देशा', इत्यादि प्रवासवर्णानांतून त्यांनी साकारल्या. ज्ञानेश्वरांनी वर्णन केलेला कोटी चंद्रप्रकाशाचा अनुभव युरोपातील काप्री बेटावर त्यांनी घेतला.

पु.ल. चे चित्रपट, नाटके, एकपात्री प्रयोग, सर्वच गोष्टी लोकांना आनंद देणाऱ्या, ताजे–तवाने करणाऱ्या ठरल्या. सबकुछ पु.ल. असणाऱ्या 'गुळाचा गणपती' चित्रपटात एका भोळया, सरळ, साध्या मुलाचे भावविश्व त्यांनी जे साकारले आहे. त्यास तोड नाही. म्हणजे लेखन, सादरीकरणाबरोबर अभिनेत्याचीही जबाबदारी त्यांनी उत्तमपणे पार पडली.

पु.ल. चे संवाद, गीते, अभिनय आणि दिग्दर्शनाने रसिकांना आमाप आनंद दिला. एक मात्र महत्वाचे पु.लं. चा शब्दनिष्ठ, कोटीनिष्ठ विनोद हा अभिजात होता. तो कुणालाही दुखावणारा, कुणाच्याही व्यंगावर बोट ठेवणारा नव्हता. शब्दाशब्दांवर ते लीलया, कोट्या सफाईदारपणे

करत. त्याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे 'कोट्याधीश' हे पुस्तक होय. जे वाचकाला मनसोक्त हसवते.

कवी मनाच्या पु.ल. नी संगीताच्या दुनियेतसुध्दा तेवढीच आनंददायी कामगिरी केली. त्यांचे 'नाच रे मोरा' हे गाणे आजही ताजे, टवटवीत वाटते. त्याच्या चालीवर, लयीवर मुलांचे पाय थिरफू लागतात.

स्वानंदासाठी काव्यवाचन करता करता त्यांना जवळपास शेकडो कविता मुखोद्‌गत होत्या.

'देणाऱ्याचे हात हजारो
दुबळी आमुची झोळी'

या उक्तीचा प्रत्यय पु.ल. बाबत येते. साहित्य लेखनातून, अभिनयातून, नाटकातून पु.ल. नी जे पैसे कमावले आणि ज्या समाजाने त्यांच्या कलेचा आदर म्हणून त्यांनी दिले, त्या समाजालाच पु.ल. नी ते साभार परत केले. त्यांच्या शोधकवृत्तीमुळे कोणी अडचणीत आहे वा आजरपणासाठी पैसे हवे आहेत, असे कळले की, पु.लं. चा मदतीचा हात तेथे पोहचत असे. सर्वांना गरजेच्यावेळी त्यांनी भरभरून मदत केली.

अशा थोर दात्याचे निधन १२ जून २००० रोजी झाले. तेव्हा नभोवाणीसह मासिके, वृत्तपत्रे, साप्ताहिके, वर्तमानपत्रे सर्व प्रसारमाध्यमातून त्यांच्यावर आदरांजलीपर, संस्मरणपर लेखन केले गेले. या सर्वांनी 'पु.ल. एक आनंदयात्री' असाच गौरव केला. विविध कलांच्या क्षेत्रात वावरतांना जो आनंद पु.ल. ना मिळाला, तो त्यांनी सर्वांसाठी मुक्तपणे उधळला.

नविन्या शेंडे
B.Sc. Ist Year (B6)

Chemical हा असाच घडत असतो....

आनंदी असतो, रम्य आयुष्यात रमत असतो,
Chemical शी Bonding जोडत,
Chemical हा असाच घडत असतो....

Practical जिद्दीने करत असतो,
Beaker, Burette हा फोडत असतो,
Chemical हा असाच घडत असतो....

Analysis च्या quality control पासून तर,
Chemistry Lab पर्यंत,
विनाकारण चक्कर हा मारत असतो,
Chemical हा असाच घडत असतो....

सकाळी Submission, रात्री हा हाती पेन घेत असतो,
डोळे लागतात तरी, हात मात्र चालत असतो,
Chemical हा असाच घडत असतो....

नऊ ला येतो, पाच ला जातो
पांढर कबूतर बनून कॉलेज मध्ये फिरत असतो,
internal fail झाला तरी, External मात्र काढत असतो,
घडत असतो, Chemical हा असाच घडत असतो.

प्रतिक्षा खरडे
B.Sc. IIIrd Year (Vth Sem)

माझ्या महाविद्यालयातील शैक्षणिक वातावरण आणि मी

Education is the Movement
from Darkness to Light

विद्येविना मती गेली
मतोविना नीती गेली
नीतीविना गती गेली
गतीविना वित्त गेले
वित्ताविना शूद्र खचले
इतके अनर्थ एका
अविद्येने केले.

आयुष्य म्हटलं की, शिक्षणाची पायरी आलीच ! अर्थात यशस्वी जीवनाचा मूलमंत्र म्हणजे 'शिक्षण'. मानवी जीवनाचा सर्वांगीण विकास हा त्याच्या शिक्षणावरच अवलंबून असतो. तो जितका शिक्षणामध्ये ज्ञान अर्जित करतो तो तितकाच यशाच्या शिखरावर जाऊन बसतो. शिक्षणाची दिशा ही माणसाच्या संपूर्ण विकासासाठी आणि त्याच्या मूलभूत अधिकारांसाठी महत्त्वाची असते. म्हणूनच, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात...

'शिक्षण हे वाघीणीचे दूध आहे
ते जो प्राशन करेल तो गुरगुरल्या शिवाय
राहणार नाही'

उच्च शिक्षण घ्यायचे असेल तर महाविदयालयात प्रवेश घेणे ही पहिली पायरी. मी माझ्या इयत्ता १२ वी नंतरच्या उच्च शिक्षणाकरिता बी.एससी चा मार्ग पत्ळारला. कारण मला एक शिक्षक होण्याची मनापासून फार इच्छा आहे. आणि त्यातही महत्त्वाचे म्हणजे माझा ग्रुप गणित विषयाचा होता. कारण, मला माझ्या आयुष्यात आलेल्या गणित विषयाच्या शिक्षकांनी शुन्याचे महत्त्व कळवून गणित विषयाची गोडी निर्माण करून दिली आणि आता गणित हा विषय इतका आवडीचा झाला की त्यातच पी.एच.डी. करावी असा संकल्प केला आहे.

तर मग प्रश्न बि.एस्सी. साठी सर्वात उत्तम आणि दर्जेदार महाविदयालय कुठलं असेल बरं ! कानावर माहिती आली की, 'जानकीदेवी बजाज विज्ञान महाविद्यालय, वर्धा' हे वर्धा जिल्ह्यातील पहिल्या नंबरचं महाविद्यालय आहे. तर मी त्या महाविद्यालयाबद्दल संपूर्ण माहिती काढली आणि मलाही वाटले की या महाविद्यालयात प्रवेश घ्यावा. प्रवेशप्रक्रीया पूर्ण करून शेवटी त्या महाविद्यालयात प्रवेश घेतला.

मला तर खूप जास्त उत्सुकता होती महाविद्यालयामध्ये जायची. कधी एकदाच्या सुट्टया संपेल आणि कधी मी जाईल असं माझ्या मनाला झालं होतं.

१ जून २०१९ ला महाविद्यालय सुरू झाले आणि तो माझा महाविद्यालयातील पहिला दिवस होता. मनात थोडी भीतीही होतीच. नवनविन शिक्षक, महाविद्यालयाचा इतका मोठा परीसर, नविन आलेले सर्व विद्यार्थी सर्व काही माझ्यासाठी अनोळखी होतं.

महाविद्यालयं म्हटलं की मजा, मस्ती, गंमती–जमती गप्पा–गोष्टी या सर्व बाबी येतातच हे मला माहिती होते. परंतु अभ्यासही तीतकाच भारी असतो हे तिथे गेल्यावर कळले. कारण तिथे गेल्यावर मला कळले इथे सर्व काही शिकायला मिळेल 'बजाज कॉलेज ऑफ सायन्स' हे शिस्तबद्ध महाविद्यालय आहे. तिथला प्रत्येक विद्यार्थी हा शिस्तीततच दिसतो. मला त्या शिस्तीत यायला थोडा वेळ लागला पण हळू–हळू जमलं सर्व काही. या महाविद्यालयात नियमितपणा, प्रामाणिकपणा, हार्डवर्क या गोष्टी असल्याच पाहिजे आणि त्या तेथील प्रत्येक विद्यार्थ्यांमध्ये दिसून येतात.

माझ्या महाविद्यालयातील आजुबाजूचा परीसर हा रमणीय आहे. बाजूला खेळण्यासाठी मोठे मैदान पण आहे. मला या सर्व गोष्टी खूप जास्त प्रमाणात आवडल्या. तेथील सर्व शिक्षक पण खूप छान आहेत. त्यांच्यातील युनिटी मला खूप आवडली. विद्यार्थ्यांवर खूप चांगले संस्कार करून त्यांना घडवतात.

आता सर्वात महत्त्वाचा मुद्दा म्हणजे येथील शिक्षण पद्धती. मला सर्वात जास्त जर कोणती गोष्ट आवडली असेल तर, येथील शिक्षकांची शिकविण्याची पद्धत. प्रत्येक वेळची वेगवेगळी पद्धत मनाला खूप जास्त प्रमाणात पटण्यासारखी आणि समजण्यासारखी आहे.

सर्वात पहिले म्हणजे केमिस्ट्री या विषयाचे शिक्षक आणि शिक्षिका आम्हाला प्रोजेक्टर वर शिकवतात आणि त्यांचं शिकवणं पण इतकं इन्ट्रेस्टिंग असतं की कधी तास संपल्याची वेळ होते कळतच नाही. नंतर दुसरे म्हणजे गणित विषयाचे शिक्षक ते तर शिकवतांना दोन्ही गोष्टी होतात. मस्ती आणि संख्यांचा खेळ. तो गणिताचा तास पण खूप मस्त जातो. आणि फिजिक्स विषयाचे शिक्षक थोडे, कडक आहे परंतु ते आम्हाला जे पण वर्क देतात ते आमच्या चांगल्यासाठीच असते. त्यातून आम्ही खूप काही शिकत असतो. तसेच इंग्लिश हा विषय खूप मजेदार वाटतो. आणि मराठी विषयाच्या शिक्षिका यांचा तो प्रेमळ स्वभाव आणि त्यांच ते शिकवण खूप दर्जेदार, अभ्यासपूर्ण आणि मराठी बद्दल रूची निर्माण करणारे आहे.

अशाप्रकारे येथील सर्व शिक्षक आणि त्यांची शिकवण्याची पध्दत खूप चांगली आहे आणि मला तरी वाटते की मी या महाविद्यालयात प्रवेश घेऊन खूप चांगले काम केले आणि मला गर्व आहे की मी जानकीदेवी बजाज विज्ञान महाविद्यालयात शिकत आहे. 'जानकीदेवी' या खूप महान व्यक्ती होऊन गेल्या. त्यांच्या पासून शिकायला मिळते की शिक्षण म्हणजे 'फक्त पुस्तकी ज्ञान नव्हे तर जीवन जगण्यापासून पण आपण खूप काही शिकू शकतो.'

पल्लवी वांढरे
B.Sc. Ist Year

माझ्या महाविद्यालयातील शैक्षणिक वातावरण आणि मी

नाव आहे अपेक्षा
CBZ ची मी विद्यार्थींनी
लिहिली एक कविता
माझ्या या महाविद्यालयासाठी

म्हणतात ज्याला RAP
म्हणजे आहे ते मी आज,
पण मराठी भाषा आवडते मला जाम.

मराठी साठी होते आम्हा डंभारे सर,
इंग्लिश शिकवायचे आम्हा माखनवार सर

इंग्लिश, मराठी, हिंदी, Bot and Zoo
Chem, Micro, Biotech घेवूनी आला Biology group

प्रोफेसर्स आहे आम्हा सगळे मस्त
पण काय कराव राव या Chemistry ने होतो व्यस्त–व्यस्त

वर्गामध्ये असते मुलींची संख्या जास्त,
कारण फुलेंनी दिले आम्हा उडण्याचे धैर्य

जसे घडती मूर्त्या त्या कुंभारामुळे
तसे घडतो विद्यार्थी त्या शिक्षकांमुळे

मंचावर येवूनी बोलतो आम्ही बिंधास्त
कारण Professor's नी train केल आम्हा २ वर्षात.

अपेक्षा गारसे
B.Sc. IIIrd Year (V Sem)

महाराष्ट्राचे लाडके व्यक्तिमत्व - पु.ल. देशपांडे

पुरूषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे म्हणजेच पु.ल. देशपांडे उर्फ भाई उर्फ पु.ल. हे लोकप्रिय मराठी लेखक, नाटककार, नट, कथाकार व पटकथाकार दिग्दर्शक आणि संगीत दिग्दर्शक होते. त्यांना महाराष्ट्राचे लाकडे व्यक्तिमत्व असे म्हटले जाते. त्यांच्या आद्याक्षरांवरून महाराष्ट्रात ते प्रेमाने पु. ल. म्हणून ओळखले जातात. यांच्या आईचे नाव लक्ष्मीबाई लक्ष्मण देशपांडे व वडीलांचे नाव लक्ष्मण त्रिंबक देशपांडे असे आहे.

पु.ल. देशपांडे हे शिक्षक, लेखक, नट, नकलाकार, गायक, नाटककार, विनोदकार, कवी, पेटीवादक, संगीत दिग्दर्शक, वक्ते होते. त्यांनी एकपात्री बहुपात्री नाटक, चित्रपट, नभोवाणी, दूरचित्रवाणी अशा सर्व क्षेत्रांत काम केले.

पु.ल. देशपांडे यांचे मराठी भाषेवर विलक्षण प्रभुत्व होते. त्यांच्या भाषाप्रभुत्वाचे अनेक किस्से आहेत. त्यांच्यावर मराठीत 'भाई' हा चित्रपट बनला आहे.

देशपांडे यांचा जन्म नोव्हेंबर ८ इ.स. १९१९ रोजी मुंबईतील गावदेवी या भागात झाला. त्यांचे बालपण जोगेश्वरी येथील सारस्वत कॉलनीत गेले. त्यांनी पार्ले टिळक विद्यालयात शालेय शिक्षण घेतले आणि नंतर पुण्याच्या फर्ग्युसन महाविद्यालयात आणि सांगलीच्या विलिंग्डन महाविद्यालयात ते शिकले. १९४० च्या दशकात साहित्यक्षेत्रात पदार्पण करण्यापूर्वी ते काही काळ शाळेमध्ये शिक्षक होते. १९४६ साली ते सुनीताबाईंशी विवाहबध्द झाले.

१२ जून २००० रोजी वयाच्या ८१ व्या वर्षी पुण्यात प्रयाग रूग्णालयात त्यांचे निधन झाले.

बालपण आणि शिक्षण :-

देशपांडे यांचे वडील हे अडवाणी कागद कंपनीत दीडशे रूपये पगारावर फिरते विक्रेते होते. फिरतीवर असतांना जेवणाखाण्याचा भत्ता मिळे. एकदा कोल्हापूरला असतांना ते बहिणीकडे जेवले. त्यादिवशी त्यांनी भत्ता घेतला नाही अशी आठवण पु.ल. देशपांडे यांनी सांगितली.

देशपांडे लहानपणापासूनच धष्टपुष्ट होते. वयाच्या दुसऱ्या वर्षी ते पाच वर्षांच्या मुलाएवढे दिसत होते. ते हुशार होते आणि सतत काही ना काही करत असत. त्यांना स्वस्थ बसण्यासाठी घरचे लोक पैसा देऊ करायचे. पण हे त्यांना जमले नाही. आजोबांनी लिहून दिलेले आणि पु.ल. नी पाठ केलेले दहा–पंधरा ओळीचे पहिले भाषण पु.ल. नी वयाच्या पाचव्या वर्षी त्यांच्या शाळेत हावभावासहित खणखणीत आवाजात म्हणून दाखवले. सात वर्षे अशी भाषणे केल्यानंतर वयाच्या बाराव्या वर्षांपासून देशपांडे स्वतःची भाषणे स्वतःच लिहायला लागले आणि इतरांनाही भाषणे आणि संवाद लिहून देऊ लागले. त्यांच्या घरी संगीताच्या बैठकी होत असत. ते घरीच बाजाची पेटी शिकले. टिळक मंदिरात एकदा बालगंधर्व आले असतांना पु.ल. नी त्यांना पेटी वाजवून दाखवली. बालगंधर्वानी शाबासकी दिली आणि भावी कलाजीवनासाठी शुभेच्छा दिल्या. लोकांच्या वागण्यातील विसंगती आणि हास्यास्पद गोष्टी हेरून पु.ल. त्या लोकांच्या नकला करायचे, म्हणून घरी कुणी आले असतांना पुरूषोत्तम जवळ नसलेलाच बरा असे आईला वाटे. देशपांड्यांची आई कारवारी, वडील कोल्हापुरचे आणि बहीण कोकणात दिलेली, त्यामुळे घरात भोजनात विविधता असे. यातूनच पु.ल. खाण्याचे शौकीन झाले. वडिलांच्या मृत्युनंतर देशपांडे गाण्याच्या, पेटीच्या व अन्य शिकवण्या करू लागले. ते शाळेत असल्यापासूनच भावगीते गायचे आणि गीतांना चाली लावायचे. कॉलेजात असतांना त्यांनी राजा बढे यांच्या 'माझिया माहेरा जा' या कवितेला चाल लावली. आज ते गाणे मराठी भावसंगीतातील अनमोल ठेवा समजला जातो. ग.दि. माडगूळकरांनी लिहिलेल्या आणि भीमसेन जोशींनी गायलेल्या 'इंद्रायणी काठी'ला पु.ल. नी चाल लावली होती.

कॉलेजमध्ये असतांना पु.ल. गायकांना साथ करीत. पु. ल. पेटी वाजवत. त्यांचा भाऊ रमाकांत तबला आणि मधुकर गोळवलकर सारंगी वाजवत. मिळालेले १५ रूपये तिघेही वाटून घेत. पार्ले टिळक विद्यालयातून माध्यमिक शिक्षण पूर्ण करून पु.ल. देशपांडे मुंबईतील इस्माईल युसुफ कॉलेजमधून इंटर व सरकारी लॉ कॉलेजमधून एल.एल.बी. झाले आणि कलेक्टर कचेरी व प्राप्तीकर विभागात काही काळ नोकरी करून पुण्याला आले. त्यापूर्वी ते पेट्रोल

रेशनिंग ऑफिसमध्ये कारकून आणि ओरिएंटल हायस्कूलमध्ये शिक्षक होते. पुण्याला आल्यावर त्यांनी फर्ग्युसन कॉलेजमधून बी.ए. आणि नंतर एम.ए. केले.

लेखक - अभिनेते - नाटककार म्हणून कारकिर्दीत सुरुवात -

१९३७ पासून नभोवाणीवर पु.ल. देशपांडे छोट्या मोठ्या नाटिकांत भाग घेऊ लागले. त्यावर्षी त्यांनी अनंत काणेकरांच्या 'पैजार' या श्रुतिकेत काम केले. १९४४ साली पु.ल. नी लिहिलेले पहिले व्यक्तिचित्र. अभिरूची या नियतकालिकावून प्रसिद्ध झाले. याच दरम्यान त्यांनी सत्यकथामध्ये 'जिन आणि गंगाकुमारी' ही लघुकथा लिहिली. २०१४ मध्ये प्रकाशित झालेले 'बटाट्याची चाळ' हे त्यांचे विनोदी पुस्तक प्रसिद्ध झाले. फर्ग्युसन महाविद्यालयामध्ये असतां देशपांडे यांनी चिंतामण कोल्हटकरांच्या 'ललितकला कुंज' व 'नाट्यनिकेतन' या नाट्यसंस्थांच्या नाटकांतून भूमिका करायला सुरूवात केली.

चित्रपटसृष्टीत पर्दापण -

१९४७ ते १९५४ या काळात त्यांनी चित्रपटांमध्ये आणि चित्रपटांसाठी काम केले. 'वंदे मातरम्', 'दूधभात' आणि 'गुळाचा गणपती' या चित्रपटांत त्यांनी अष्टपैलू कामगिरी केली. 'गुळाचा गणपती' या चित्रपटांत त्यांनी अष्टपैलू कामगिरी केली. या चित्रपटात कथा, पटकथा, काव्य, संगीत, भूमिका आणि दिग्दर्शन सर्वच पुलचे होते. भाग्यरेखा या मराठी चित्रपटात पुलची भूमिका होती.

१९४७ सालच्या मो.ग. रांगणेकरांच्या कुबेर चित्रपटाला देशपांडे यांनी संगीत दिले. आणि चित्रपटातील गाणी देखील गायिली. वंदे मातरममध्ये देशपांडे व त्यांच्या पत्नी सुनीताबाई यांच्या प्रमुख भुमिका होत्या. यात पु.ल. देशपांडे गायक–नट होते. पु.ल. देशपांडे यांचा 'देवबाप्पा' प्रसिद्ध झाला व त्यातील 'नाच रे मोरा' हे गाणे अनेक दशके प्रसिध्दीत राहिले.

१९५५ मध्ये पु.ल. देशपांडे हे आकाशवाणीत नोकरीला लागले. आकशवाणीसाठी त्यांनी अनेक श्रुतिका लिहिल्या आणि भाषणे दिली. १९५६–१९५७ मध्ये ते आकाशवाणीवर प्रमुख नाट्यनिर्माता झाले.

१९५८ मध्ये पुलना आकशवाणीने युनेस्कोच्या शिष्यवृत्तीवर 'मिडिया ऑफ मास कम्युनिकेशन' या अभ्यासक्रमासाठी लंडनला बीबीसीकडे पाठवले. १९५९ मध्ये पु.ल. देशपांडे भारतातील पहिले दूरचित्रवाणी कार्यक्रम निर्माते झाले.

उल्लेखनीय -

- दूरदर्शनच्या पहिल्यावाहिल्या प्रसारणासाठी पंडीत नेहरूंची दूरदर्शनसाठी मुलाखत घेणारे पुल हे भारतीय दूरदर्शनचे पहिले मुलाखतकार होते.
- साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी या दोघोंच्या पुरस्कार मिळवणाऱ्या मोजक्या प्रतिभावंतात पुलंचा समावेश होतो.
- पु.ल. भाषा प्रेमी होते. त्यांना बंगाली, कानडी येत असल्याने ते त्या त्या समाजातील लोकांत सहज मिसळत.
- पु.ल. देशपांडे यांच्या जीवनावर महेश मांजरेकर यांनी 'भाई' व्यक्ती की वल्ली' या नावाचा चित्रपट काढला आहे.

पु.लाची काही टोपण नावे -

- धोंडो भिकाजी कडमडे जोशी
- मंगेश साखरदांडे
- बटाट्याच्या चाळीचे मालक
- भाई
- कोट्याधीश पु.ल

कथासंग्रह

- अघळ पघळ (पुस्तक १९९८)
- असा मी असामी (१९६४)
- आपुलकी
- उरलं सुरलं (१९९९)
- एक शून्य मी
- कान्होजी आंग्रे
- काय वाट्टेल ते होईल
- कोट्याधीश पु.ल (१९९६)
- मराठी वाड्याचा इतिहास (१९९४)
- व्यंगचित्रे (१९७४)
- हसवणूक (१९६८)

अनुवादित कादंबऱ्या -
- एक कोळयाने
- कान्होजी आंग्रे

प्रवासवर्णने -
- पूर्वरंग
- अपूर्वाई
- जावे त्याच्या देशा
- वंगचित्रे

व्यक्तिचित्रे -
- आपुलकी
- गणगोत
- गुण गाईन आवडी
- मैत्र

चरित्रे -
- गांधीजी (२ ऑक्टोबर १९७०)

एकांकिका संग्रह -
- आम्ही लटिके ना बोलू
- मोठे मासे आणि छोटे मासे

नाटके -
- एक झुंज वाऱ्याशी (१९९४)
- तीन पैशाचा तमाशा (१९७८)
- तुझे आहे तुझपाशी (१९५७)
- भाग्यवान (१९५३)
- नवे गोकुळ

लोकनाट्ये
- पुढारी पाहिजे (१९५१)
- वाऱ्यावरची वरात

काही विनोदी कथा -
- एका रविवारची कहाणी
- बिगरी ते मॅट्रिक
- मुंबईकर, पूणेकर कि नागपूरकर ?
- पाळीव प्राणी
- उरला सुरला

व्यक्तिचित्रे -
- गजा खोत
- ते चौकोनी कुटुंब
- चितळे मास्तर
- दोन वस्ताद
- परोपकारी गंपू
- बबडू
- बापू काणे
- सखाराम गटणे

चित्रपट
- कुबेर (१९४७)
- भाग्यरेषा (१९४८)
- वंदे मातरम् (१९४८)
- गोकुळचा राजा (१९५०)
- मोठी माणसे (१९४९)
- नवरा बायको (१९५०)
- दूधभात (१९५२)
- संदेश (१९५२)
- देवबाप्पा (१९५३)
- महात्मा (१९५३)

पुस्तके -
- अमृतसिद्धी
- कसा मी असा मी
- जीवन त्यांना कळले हो
- पाचामुखी
- पुरूषोत्तमाय नमः

पुरस्कार -

विष्णूदास भावे यांच्या स्मृतीनिमित्त सांगलीची अखिल भारतीय नाट्य विद्यामंदीर समितीही ही इ.स. १९६० पासून विष्णूदास भावे पुरस्कार देत आहे. पु.ल. देशपांडे यांना हा पुरस्कार मिळाला आहे.

प्राजक्ता मुलकलवार
B.Sc. Ist Year

माझा आवडता चित्रपट

'नटसम्राट.....असा नट होणे नाही'

वि.वा. शिरवाडकर लिखित 'नटसम्राट' या नाटकावर आधारित 'नटसम्राट....असा नट होणे नाही' हा चित्रपट आहे. नाटक आणि चित्रपट यांत जमीन–अस्मान्चंच अंतर असतं. चित्रपटाचं माध्यम भव्य आहे. नाटकाला काही मर्यादा असतात. पण मर्यादा हेच नाटकाचं वैशिष्ट्य असतं. त्या मर्यादेत राहून केवळ एका रंगमंचावर तुम्हाला अखंड विश्व उभं करायचं असतं. म्हणून चित्रपट व नाटक ही दोन वेगवेगळी माध्यमं आहेत. यात श्रेष्ठत्व कुणालाच बहाल करता येत नाही. दोन्ही माध्यमं आपापल्या जागी ठामपणे उभी आहेत. तुम्ही जर नटसम्राट हे नाटक पाहिलं असेल, तर ते काही वेळेसाठी विसरून 'नटसम्राट....असा नट होणे नाही' हा चित्रपट पाहण्यासाठी चित्रपटगृहात प्रवेश करावा. त्यामुळे नाटकात असं दाखवलं होतं. चित्रपटात असं नाही दाखवलं. नाटकातले अप्पासाहेब वेगळे होते. चित्रपटातले वेगळे आहेत, वगैरे वगैरे अशी तुलना करणं कटाक्षानं टाळलं जाईल. मुळात नाटक आणि सिनेमाची तुलना होऊ शकत नाही. ८–१० प्रवेशात तुम्हाला नाटक मांडायचं असतं. चित्रपटांत अनेक सीन्स असतात. चित्रपटाला पटकथा असते. म्हणून मूळ नाटकाचा भाग किंवा गाभा हरवू न देता नव्याने पटकथा मांडण्यात आली आहे. स्टोरी लाईनमध्ये म्हणजेच मूळ कथानकामध्ये हलकासा बदल करण्यात आलेला आहे. चित्रपटात दोन नवे प्रमुख पात्र घेण्यात आलेले आहेत. एक सिध्दार्थ, जो आपली विदेशातली प्रशस्त नोकरी सोडून नाटकाच्या वेडाने भारतात परततो, दुसरं पात्र म्हणजे राम अभ्यंकर जो नटसम्राट अप्पासाहेब बेलवकरांचा मित्र आहे व स्वतः एक उत्कृष्ठ नट आहे. पण नशीबाने या नटाला साथ दिली नाही.

चित्रपट हा नाटकापेक्षा किती वेगळा असतो याचं भान पहिल्या सीनपासून येतं. चहाच्या किटलीत चहा ओतला जातो इथून सीन उघडतो. एक वयोवृध्द दाढी वाढलेली व्यक्ती बसलेल्या ग्राहकांना चहा देत आहे व काही तरी पुटपुटत आहे. तो त्यानेच निभावलेल्या भूमिकांचे संवाद म्हणत असतो. काही लोक आश्चर्यानं व कौतुकानं या माणसाकडे पाहतात. तिथेच सिध्दार्थ बसलेला असतो. सिध्दार्थ हा उच्चाशिक्षीत तरूण आहे. नाटकाच्या वेडापायी आपली प्रशस्त नोकरी सोडतो. त्याला अप्पासाहेब बेलवकर दिसतात. तो पाहताक्षणी अप्पासाहेबांना ओळखतो. पण हे अप्पासाहेबांपासून लपवून ठेवतो. बेलवलकर जिथे जातील तिथे त्यांचा पाठलाग करतो. बेलवलकरांकडून नाटकाविषयी त्याला जाणून घ्यायचं असतं. बेलवलकर बऱ्याचदा त्याला सांगतात की माझा पाठलाग करू नकोस. पण तो काही ऐकत नाही. एकदा नाट्यगृहाला आग लागली अशी बातमी वर्तमानपत्रात छापून येते आणि बेलवलकर अस्वस्थ होतात व ते तडक नाट्यगृहाकडे निघतात. त्यांच्या पाठोपाठ सिध्दार्थ जातो आणि आग लागलेल्या नाट्यगृहात फ्लॅशबॅकच्या स्वरूपातून सुरू होते नटसम्राट अप्पासाहेब बेलवलकर यांची शोकांतिका. हा फरक आहे नाटकातील प्रवेश आणि पटकथेमधला. जळलेलं नाट्यगृह आणि फ्लॅशबॅक ही महेश मांजरेकर यांनी दिलेली मेजवानीच आहे. हे समिकरण खूप छान जमलंय. ४० वर्ष प्रेक्षकांच्या मनावर अधिराज्य गाजवलेला नट स्वेच्छानिवृत्ती स्वीकारतो. आपली इस्टेट, बचत सर्व काही मुलांच्या नावावर करून मोकळा होतो. हा निर्णय बेलवलकरांचा मित्र राम अभ्यंकर आणि बेलवलकरांच्या पत्नीला पटत नाही. बेलवलकरांचं स्वच्छंदी, बिनधास्त वागणं त्यांच्या सुनेला आणि मुलाला खटकतं. ते आपल्या मुलीकडे राहायला जातात. पण त्यांचं वागणं मुलीलाही खटकतं व त्यांच्यावर चोरीचा आळ घेण्यात येतो. अर्थात त्यांनी चोरी केलेली नसते हे सिध्द होतं, ते घर सोडण्याचा निर्णय घेतात. मुलीनं बजावलेलं असतं की घर सोडायचं नाही. तरी पावसाळयात रात्री ते घर सोडतात

त्या प्रवासात बेलवलकरांच्या पत्नीचा मृत्यू होतो. महान नटसम्राट रस्त्यावर राहू लागतो. चहाच्या दुकानात नोकरी करू लागतो. त्यांची मुलं त्यांचा शोध घेण्याचा प्रयत्न करतात. या कथेमध्ये राम अभ्यंकर या उपेक्षित राहिलेल्या नटाची कथा उत्तमरित्या दाखवण्यात आलेली आहे.

राम अभ्यंकरांची भूमिका अतिशय समर्थपणे विक्रम गोखले यांनी निभावली आहे. नाना पाटेकर आणि विक्रम गोखले या दोघांचे एकत्रित सीन्स इतके बहारदार झाले आहत की अभिनयाच्या प्रांगणात वावरणाऱ्या कलाकारांसाठी ते अभिनयाची कार्यशाळाच ठरले आहेत. विक्रम गोखले यांचा शेवटचा सीन तर इतका नाटकी तरीही कथानकला साजेसा आणि गोखलेंच्या अभिनयाचं कौशल्य दाखवणारा आहे. विक्रम गोखलेंचे हाव–भाव कमी अधिक होणारा धीरगंभीर आवाज. यामुळे तो सीन चित्रपटसृष्टीतल्या उत्कृष्ट सीन्सपैकी एक आहे. अजित परब (मकरंद, बेलवलकरांचा मुलगा), नेहा पेंडसे (नेहा, बेलवलकरांची सून) यांची भुमिका छान झाली आहे. मृण्मयी देशपांडे (विद्या, बेलवलकरांची मुलगी) हिने उत्तम अभिनय केलाय. तिचं गोड दिसणं. हे तिच्या भूमिकेची जमेची बाजू ठरते. सुनील बर्वे (राहूल बव्रे, बेलवलकरांचा जावई) यांनी अतिशय समतोल राखणारी भूमिका निभावली आहे. हळू आणि कमी बोलणं, जास्त एक्सप्रेस न होणं, एक टिपिकल सज्जन माणूस अशी ही भूमिका आहे. नेहमीप्रमाणे बर्वेंचा अभिनय उत्कृष्टच आहे. मेघा मांजरेकर (सरकार, बेलवलकरांच्या पत्नी) या चित्रपटातील महत्त्वाचे पात्र असूनही यांना फार कमी संवाद आहेत.

पण त्यांची बॉडी लॅग्वेज व त्यांनी डोळ्यांनी केलेला अभिनय जबरदस्त आहे. कमी पण महत्वाचे बोलणे, आपल्या नवऱ्याचा अपमान सहन न होणे, आपला नवरा नट आहे, तो दौऱ्यावर असतो, त्याच्या गैरहजिरीमध्ये कुटुंबाची जबाबदारी आपल्यावर आहे, हे सगळे भाव त्यांच्या डोळ्यात दिसतात. अभिनयाची दुनिया तशी रंगीत दुनिया. या रंगीत दुनियेत स्त्री पुरूषांचे संबंधही रंगीत असतात, हे ती जाणून आहे, तरीही तिला नवऱ्याबद्दल कुठलीच तक्रार नाही. त्यांच्या गावाच्या घरामागील अंगणात तुळशी वृंदावन बांधणं ही या बाईची राहून गेलेली हौस आहे व ती नवऱ्याला पूर्ण करण्यास सांगते. महेश मांजरेकरांच्या दिग्दर्शनाखाली मेधा मांजजेकरांनी भारतातील त्याग–वृत्तीच्या स्त्रीचं दर्शन घडवून आणलं आहे. राजा हे मूळ नाटकात असलेलं पात्र इथे वेगळ्या पध्दतीनं पाहायला मिळतं. हे पात्र सुध्दा सुंदर रंगवलंय. संदिप पाठकने दारूडयाची भूमिका निभावली आहे. छोट्या भूमिकेत तोही प्रेक्षकांच्या लक्षात राहतो. जितेंद्र जोशी सुध्दा या चित्रपटात आहे. त्यानेही आपली भूमिका चांगली केली. आता महत्वाचं पात्र म्हणजे अप्पासाहेब बेलवलकर. नाना पाटेकर यांनी त्यांच्याकडे जे काही होतं, ते सर्व या नट सम्राटाला अर्पण केलं आहे. या चित्रपटाची थीम जरी गंभीर असली तरी हसत खेळत चित्रपट पुढे जातो. सर्व प्रसंगात नाना उजवे ठरतात. नानांनी खूपच वेगळ्या पद्धतीने ही भूमिका साकारली आहे. यात बऱ्याचदा नानांचा टिपिकल स्पर्श होतो. पण तो खटकत नाही. अनेक अग्रेसिव्ह सीन्समध्ये नाना स्पष्टपणे जाणवतात. पण अनेक नटांनी नटसम्राट ही भूमिका साकारली आहे. प्रत्येकाने वेगवेगळ्या प्रकारे ही भूमिका निभावलेली आहे. नाना यांनी त्यांच्या पद्धतीने ही भूमिका साकारली व ती प्रेक्षकांना नक्कीच आवडेल. फ्रेममध्ये असतांना त्यांची बॉडी लॅग्वेज आणि क्लोज अपमध्ये त्यांनी दिलेले एक्स्प्रेशन उत्तम आहेत. हे एका उत्कृष्ट नटालाच जमतं. नानांचा अनुभव, त्यांची इतक्या वर्षांची अभिनयाची तपस्या त्यांनी या भूमिकेत ओतली आहे. नाना पाटेकर यांच्या आयुष्यातली ही सर्वोत्कृष्ट भूमिका आहे. नानांनी सगळया भूमिका उत्तम निभावल्या आहेत. परंतु नाना पाटेकर यांच्यामुळे नटसम्राट या भूमिकेला न्याय मिळाला आहे व नटसम्राट या भूमिकेमुळे नानांच्या अभिनय कौशल्याला, प्रवासाला न्याय मिळाला आहे. असंच म्हणावसं वाटतं. उत्तम दिग्दर्शन, कथा, पटकथा, संवाद, संगीत, अभिनय, छायांकन आणि बरचं काही असं

या चित्रपटाचं गणित आहे. महेश मांजेरकरांनी नटसम्राट ही कलाकृती चित्रपटाद्वारे मांडण्याचं आवाहन स्वीकारलं व ते त्यांनी उत्तमरीतीने निभावलं आहे. कथेत थोडासा बदल करूनही शिरवाडकरांच्या मूळ संहितेला कुठेच धक्का बसू दिलेला नाही. शिरवाडकर जर आज असते तर ते मांजरेकरांच्या पाठीवर हात ठेवून लढ म्हणाले असते. नटसम्राटाचा शेवटचा संवाद, यात ते त्यांनी निभवलेल्या भूमिकाचं वर्णन करून सांगत की 'मी आहे हॅम्लेट, मी आहे ऑथेल्लो', असं म्हणत म्हणत ते शेवटी म्हणतात 'मी आहे नटसम्राट अप्पासाहेब बेलवलकर'.....आणि चित्रपटगृहात टाळयांचा कडकडाट होतो. आपासाहेब जमीनीवर कोसळतात. सिध्दार्थ त्यांना धरतो. सगळी प्रमुख पात्रे अप्पासाहेबांच्या जवळ येतात. ''कळलं का रे सिध्दार्थ, असं असतं नाटक'' असं म्हणत, आपल्या रक्ताच्या नातेवाईं काकडे दुर्लक्ष करत अप्पासाहेब स्तब्ध होतात. ते काहीच बोलत नाहीत. एक अश्रूचा थेंब त्यांच्या डोळ्यांतून गालावर उतरतो. तो अश्रूचा थेंब तुम्हाला प्रत्येक प्रेक्षाकाच्या डोळ्यांतून उतरतांना दिसतो. तो अश्रूचा थेंब तुमच्या डोळ्यांतूनही उतरत असतो. न कळत तुमचे हात अश्रूच्या थेबाचं अस्तिव पुसण्याचा प्रयत्न करतात. पण तुमचे प्रयत्न असफल होतात. कारण असे असंख्य अश्रूंचे थेंब तुमच्या डोळ्यातून उतरून नटसम्राट नाना पाटेकर यांना सलामी देत असतात. खरंच असा नट होणे नाही..... आबालवृद्धांनी बऱ्याचदा पहावा असा हा चित्रपट आहे, 'नटसम्राट.... असा नट होणे नाही'.

तुनश्री बुधबावरे
बी.एस.सी. भाग १

दुष्काळ : एक नैसर्गिक समस्या व उपाय

प्रस्तावना - गेली अनेक वर्षे दुष्काळ ही भारत देशाची प्रमुख समस्या बनली आहे. पुरेशा पाण्याअभावी शेती ओसाड होती. पर्यायाने पिकांचे व शेतकऱ्यांचे मोठे नुकसान होते. मात्र आज ही भीषण दुष्काळी परिस्थिती उभ्द्रवण्यामागे निसर्गापेक्षा मनुष्यच अधिक जबाबदार आहे. भारतासारख्या उष्णकटिबंधीय देशात, तिथे मान्सून असतो तेथे पाण्याची वानवा निर्माण होणे ही खरेतर फार मोठी विसंगती आहे. इतर देशांच्या तुलनेत आपल्याकडे पर्जन्यवृष्टीमुळे अमाप पाणी उपलब्ध होते. या पाण्याचा साठा करण्याच्या पद्धती आपण अजुनही आचरणात आणल्या नाहीत. पावसाचे पाणी अडवून, साचवून जमिनीत मुरवले म्हणजेच पुनर्भरण केले तरी दुष्काळाचा तडाखा कमी होण्यास मदत होईल.

याशिवाय पाण्याचा अमाप वापर, अपव्यय आणि बचतीची सवय नसणे आणि पाणीगळती हीदेखील दुष्काळाची प्रमुख कारणे आहेत. पिण्याचे पाणी इतर कामांसाठी वापरणे, २४ तास पाणी आहे म्हणून वाहत्या नळाखाली काम करणे, नादुरूस्त जलवाहिन्या, नळ इत्यादींमधून होणारी पाणीगळती, यामुळे पाणी वापरले जाण्यापेक्षा ते अधिक वायाच जाते. हल्ली दुष्काळी भागांना टँकरने पाणी पुरविण्याची सोय केली आहे. तसेच, श्रीमंत लोक चढ्या भावात पाणी खरेदी करतात व त्यामुळे गरीबांना पाण्यालाही मुकावे लागते. पाणी ही मुळात राष्ट्रीय संपत्ती आहे.

दुष्काळ

रणरणत्या उन्हात किती राबले तरी,
पाणी तयार करता येत नाही...
निसर्गच लहरी झालाय जरा,
मानवाला आता सोसवत नाही...
पाणी म्हणजे जीवन आहे,
त्याच्या शिवाय भागत नाही...
माणूस बेपर्वाइने वागला,
निसर्गाची किंमत कळली नाही...
थेंब थेंब पाण्यासाठी तरसतो,

तरीही माणूस सुधारत नाही
पाणी जपून वापरले पाहिजे,
अजूनही वेळ गेली नाही...
नाही तर दुष्काळ पडतच राहणार
तेव्हा देवही धावणार नाही..

.. निलीमा

नैसर्गिक आपत्ती

पृथ्वीची उत्पत्ती आणि तिच्यावरील संपूर्ण सृष्टी म्हणजे नैसर्गिक परिस्थिती होय. त्यामुळे मृदाभरण, भू–गर्भातील विभाग, जलावरण, वातावरण समाविष्ट आहे. याच नैसर्गिक परिस्थितीमधील मानव हा मूळ सजीव घटक आहे. मानवावर येणारी निसर्गनिर्मित अरिष्टे म्हणजेच नैसर्गिक आपत्ती होय.

निसर्गातील निरनिराळ्या घटना आपत्तीशी संबंधित असतात. निर्माण होणाऱ्या आपत्तीमध्ये नैसर्गिक शक्तीचा, घटकांचा सहभाग असतो. अनेक प्रकारचे नैसर्गिक घटक आपत्तीस कारण ठरतात. उदा. भूकंप, ज्वालामुखी, त्सुनामीलाटा, भूमीपात, चक्रीय वादळे, महापूर, दुष्काळ, हिमपात, हिमवादळे, अतिवृष्टी, गारपीट, जमिनीची धूप, प्रस्तरभंग इत्यादी निरनिराळ्या प्रकारची संकटे नैसर्गिक शक्तीतून निर्माण होतात.

२२ मार्च जलसंधारण दिवस

पृथ्वीचा ७१% भाग पाण्याने व्यापलेला आहे. ९६.५ टक्के पाणी समुद्राचे आहे. आपल्याला उपयोगी येणाऱ्या पाण्याचे प्रमाण फारच कमी आहे. पाणी वाया जाणार नाही याची खबरदारी ह्या कारण पाणी आहे तरच जीवन आहे. अमूल्य जीवनासाठी बहुमूल्य पाण्याची बचत तर करायलाच पाहिजे.

उपाययोजना

पासाचे पाणी साठवणे फायदयाचे - पाणी हे निसर्गाने दिलेले अमूल्य असे स्त्रोत आहे. पाणीच जर नसेल तर... ही कल्पना सुद्धा अंगावर शहारे आणून सोडते. सकाळपासून तर रात्रीपर्यंत पाण्याचा प्रत्येक कार्यात उपयोग होतो. विशेषतः पाणी पिण्यासाठी वापरले जाते. पृथ्वीचा ७० टक्के भाग पाण्याचे व्यापला आहे. मोठ्या प्रमाणात होणारे व्यापारीकरण, शहरीकरण यामुळे पाण्याच्या साठवणीचा तडा जात आहे. रस्ते बांधकामासाठी नदी नाल्याची दिशा बदलली जात आहे. रस्ते बांधकामासाठी नदी नाल्याची व त्यामुळे सर्वदूर पाण्यासाठी वणवत होत आहे, म्हणूनच सर्व नागरिकांनी, आपल्या दैनंदिन जीवनात पाण्याचा वापर सांभाळून करावा.

घरातील सांडपाणी शेतात सोडावे, वॉटर हार्वेस्टिंगची सुविधा करावी, जास्तीत जास्त पाणी जमिनीत कसे मुखता येईल याचा अभ्यास करावा. लोकसहभागात शेतात बंधारे तयार करावे, कारण ''जल है तो कल है।''

असे वाचवा पाणी :- आरोग्य चांगले राहण्यासाठी आपण पाणी पितो. सर्वसाधारणपणे पिण्यासाठी पेलाभर पाणी घेतो मात्र, खुपदा दुसरा घोट पाणी पिऊन उरलेले पाणी आपण फेकून देतो. हे दृश्य घरी, समारंभात बऱ्याचदा पाहायला मिळते, हे फेकून दिलेले पाणी आपण मोजले, तर आपण किती मोठया प्रमाणात अपव्यय करतो हे कळेल.

जल प्रतिज्ञा :- पाणी हे जीवन आहे. पाण्याचा प्रत्येक थेंब हा माझ्या जीवनाचा अविभाज्य घटक आहे. माझे माझ्या जीवनावर प्रेम आहे. माझ्या गावातील समृद्ध आणि विविध पाणी स्त्रोंताचा मला अभिमान आहे. त्याची जपवणूक करण्याची पात्रता माझ्या अंगी यावी यासाठी मी सदैव तप्पर असेन. माझ्या गावातील उपलब्ध पाण्याचा मी काटकसरीने वापर करण्याची प्रतिज्ञा करीत आहे.

पाण्याची शुद्धता जपणे आणि त्याची वृद्धी करणे यातच माझे व पर्यायाने सर्व समाजाचे सौख्य व हीत सामावले आहे. त्यासाठी आटोकाट व मनःपूर्वक झटण्याची मी प्रतिज्ञा करीत आहे. भूगर्गात पाणी जमा केल्याशिवाय जमिनीतून पाणी उपसण्याचा मला नैतिक अधिकारच नाही. माझ्या शेतातील घराच्या छपरावरील, अंगणातील पाणी बाहेर वाहून जाणार नाही याची काळची घेईल.

पावसाचे जास्तीत जास्त पाणी मी, जमिनीत जिरविन आणि ''पाणी अडवा, पाणी जिरवा'' या तत्वाचा मी, अंगीकार करीन.

नुपूर परते
B.Sc. Ist Year

माझ्या जीवनाची अस्मिरणीय आठवण

जीवनात येणारा प्रत्येक क्षण येतो आणि जातो. त्या क्षणांमध्ये जर काही सामर्थ्य असेल तेव्हाच ते क्षण स्वतःचे अस्तित्व टिकवून धरतात आणि त्यालाच आपण 'अविस्मरणीय' म्हणतो. प्रत्येक अविस्मरणीय आठवण हे ध्येय झाले पाहिजे, तेव्हाच जगण्यात एक नवी उभारी येते. यासाठी किंवा स्वतःच्या नाममुद्रेसाठी माणूस आयुष्यभर झटत असतो.

माझ्याही जीवनात एक अविस्मरणीय आठवण दडलेली आहे ४ वर्षापूर्वीची जेव्हा मी इयत्ता ८ वी मध्ये शिकत होती. तेव्हा मला एक अशी संधी मिळाली ज्यामुळे ती आजही माझ्या जीवनातील अविस्मरणीय आठवण बनली आहे. 'रोटरी क्लब वर्धा' द्वारा संचालीत 'विमान प्रवास' यात माझी निवड झाली. मला इयत्या ८वी मध्ये वर्गातून प्रथम क्रमांक पटकाविल्या कारणाने माझी निवड करण्यात आली. 'रोटरी क्लब वर्धा' हे आमच्या विद्यालयात – 'मातोश्री रमाबाई माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय' येथे प्रथमच आले होतो. आमच्या विद्यालयातील तिघांची निवड करण्यात आली होती आणि त्यात मी ही एक. हा आनंद अगदी मनात सामावणारा नव्हताच आणि 'विमान प्रवास' करण्याचे भाग्य ही मला प्रथमच लाभले.

आम्ही सर्व २० जनांना १० मुली तसेच १० मुले अश्या इयत्ता ८ वी, ९ वी च्या विद्यार्थांनाच ही संधी मिळालेली होती. वेग–वेगळया विद्यालयातून विद्यार्थी आले होते. त्यावेळी केवळ मलाच नव्हे तर २० ही विद्यार्थांना 'रोटरी क्लब गांधी सिटी, वर्धाच्या 'सपने सच हुऐ' या उपक्रमात आपली निवड होण्याचा आनंद होता.

पाच दिवस घराच्यांपासून व वर्धेतून दूर राहायचे होते. दिनांक १९ ते २३ फेब्रुवारी २०१५ या दरम्यानचा आमचा हा प्रवास होता. आम्हाला तिथे वेगवेगळया गोष्टींचा अनुभव घेण्याकरिता व पर्यटनाकरिता, आपल्या आयुष्यातील प्रथम विमान प्रवासातून काही तरी घडावे या उद्देशांकरिता नेण्यात आले होते. पाच दिवसांचा प्रवास ग्वालियर, आगरा, दिल्ली या टप्यांतील होता.

सर्वप्रथम आम्ही दि. १९/२/१५ ला सायंकाळी ७ वाजता सेवाग्राम रेल्वेस्थानक येथे हजर झालो. त्यानंतर ७.१५ ला रेल्वे आली आणि आमचा प्रवास सुरू झाला...

आम्ही प्रथम टप्पा गाठला म्हणजेच ग्वालियर दि. २०/२०१५ ला वेळ १ वाजता दुपारी रेल्वेस्टेशनला पोहचलो. तेथे आम्ही 'चिप्स कारखान्याला' व 'ब्रेड कारखान्याला' भेट दिली. भरपूर मज्जा आली.

दुसऱ्या दिवशी दि. २१/२/१५ ला आम्ही सूर्य मंदिर (Sun Temple) येथे भेट दिली. आमचा दुसराही दिवस ग्वालियर मध्येच गेला. आम्ही तिथला प्रसिध्द 'शेख मोहम्मद गोस' यांचा मकबरा पाहिला. जगप्रसिद्ध सुखीर 'तानसेन' यांची समाधी ही पाहिली. त्यानंतर 'जिवाजी सिंधीया पॅलेस' येथे आम्ही भेट दिली. ते अत्यंत आकर्षित आणि प्रचंड मोठे होते. त्यानंतर आम्ही 'जिवाजी सिंधिया स्कूल' येथे सुद्धा भेट दिली. आम्हाला हे ऐकून अत्यंत आश्चर्य झाले की अभिनेता सलमान खान यांनीही येथून शिक्षण प्राप्त केले आहे. त्याचदिवशी आम्ही सायंकाळी ग्वालियर Fort म्हणजेच 'ग्वालियर चा किल्ला' सुद्धा पाहिला. ग्वालियर मध्ये भरपूर मज्जा केली.

दि. २२/२/१५ ला जायचे होते आगरा म्हणजेच दुसरा टप्पा. आम्ही आगरा येथे गेलो. ग्वालियर तसेच आगरा येथे दोन्ही कडे आमची राहण्याची व खाण्या–पिण्याची व्यवस्था ही हॉटेलातच केली गेली होती. आम्ही आग-याला 'ताजमहल' तसेच 'लाल किल्ला' पाहिला. 'ताजमहाल' पाहाताच मी अगदी थक्क झाली आणि शब्द देखील माझ्याकडे उरले नव्हते ते भव्य आणि सुंदर ताजमहाल रेखाटायला. आम्ही आग-याला भरपूर खरेदी ही केली आणि खूप–खूप मज्जा ही केली.

आता शेवटचा आणि तिसरा टप्पा म्हणजेच दिल्ली. दि. २३/२/१५ ला आम्ही दिल्ली विमानतळावर पोहचलो. विमानाजवळ आल्यानंतर सगळयांच्याच काळजाचे ठोके वाळले होते. २.५ तासांत आम्ही विमानात बसून दिल्लीपासून नागपूरला परतलो आणि त्यानंतर घरी आली... हे पाच दिवस आणि २३/२/१५ चा तो 'विमान प्रवास' हेच माझ्या जीवनाची अविस्मरणीय आठवण बनली आहे.

कृतिका पानबुडे
B.Sc. Ist Year (M3)

भारतीय तरूण : काल, आज आणि उद्या

"मला एक असा तरूण मिळवून द्या की जो
शरीराने तंदुरूस्त आहे. त्याच्या इच्छा व
विकार त्याच्या ताब्यात आहेत. त्याचे मन
आरशासारखे पारदर्शक व स्वच्छ आहे. तर
मी जगात कोणताही चमत्कार करून दाखवेन.''

खरं आहे, आजच्या जगाला विकसित करणारा एकमेव सक्षम घटक म्हणून तरूणाईकडे पहिले जाते. सामाजिक उत्थानाची जबाबदारी असलेल्या या तरूणांपुढे काय आदर्श व आव्हाने आहेत? आपण बघतो की कालचा तरूण हा काही न काही समोरच्या पिढीला आदर्श वाटेल असे काही करीत आणि आजची तरूण पिढी ही उद्याची मार्गदर्शक पिढी असेल. त्यामुळे या तरूणांनी दूरदृष्टीने विचार करून काही मूलभूत आव्हाने पेलणे आवश्यक आहेत.

तरूण वर्गाविषयी विचार व त्यांना देण्यात येत असलेले महत्व वेगळया प्रकारचे आहे. समाजाचा विचार करतांना वर्गानुसार, जातीनुसार गट पाडून विश्लेषण केले जाते.

वयानुसार समाजाची विभागणी करून युवक हा वेगळा सामाजिक गट निर्माण करण्याची प्रवृत्ती नवीन आहे. त्याचप्रमाणे तरूण माणसांनाही आपण युवक म्हणून कोणीतरी वेगळे आहोत, वेगळी सामाजिक जबाबदारी आपल्यावर आहे व समाज परिवर्तनाच्या कामात आपल्याला विशेष स्थान आहे, ही जाणीव होत आहे, मात्र ही जबाबदारी पार पाडत असतानाच काही गोष्टींचे भान तरूण वर्गाने ठेवले पाहिजे. या मध्ये प्रमुख म्हणजे नैतिकता, विचारसरणी व आदर्शवाद. आपण असे वागणार आहोत, जी कार्ये करणार आहोत, ती इतर कुणाला लक्षात ठेवाविशी वाटली नाहीत तरी काळ व इतिहास यांना मात्र निश्चित नोंद घ्यावी लागेल.

प्रबोधनाचे फलीत म्हणून आपणास युवक चळवळीकडे बघता येईल. स्वातंत्र चळवळीनंतर, देशव्यापी स्वरूपावर फक्त संपच दिसतात. युवकांना राजकारणी लोक केवळ मतदार म्हणून पाहतात व राजकीय फायद्यासाठी लोक केवळ उपयोग बरेचदा करून घेतात. त्यांच्या समस्यांकडे खऱ्या अर्थाने पाहिलेच जात नाही. युवकांचे सामाजिक प्रबोधन, रोजगार उपलब्धता, व्यक्तिमत्व विकास यांकडे कानाडोळा केला जाते.

ध्येयाच्या वेदना मनाला होऊ दे
वार तुझ्या प्रत्येक क्षणास होऊ दे,
अशक्य सुद्धा म्हणेन शक्य आहे,
इतका गर्व तुझ्या बुद्धीच्या मीपणास होऊ दे!

जेव्हा या तरूणांना ध्येयाने पछाडले जाईल, संकटांना सामोरे जाण्यासाठी निधडी छाती निर्माण होईल, आकाशाला गवसणी धालण्याचे सामर्थ्य अंगी येईल, त्यावेळेस उज्ज्वल भारतवर्षाची निर्मिती होऊ शकेल ही जबाबदारी पेलण्याचे जबरदस्त आव्हान नियतीने तरूणांसमोर ठेवले आहे. या आव्हानाला सामोरे जाताना दुसरे पुढे ठाकणारे आव्हान म्हणजे समाजकारण व राजकारणात युवा शक्तीचा सहभाग. ढोबळमानाने युवा समाजाचा विकास हाच उद्याच्या समाजाचा विकास आहे. फायद्याच्या राजकारणापासून स्वतःला दूर ठेवणे व समाजाच्या फायद्यासाठी काम करणे हेच हितावह ठरेल.

शहरी भागातील तरूणांनी भागातील युवकांना शिक्षित व संघटीत करणे, तेथील जनतेशी आपुलकीचे संबंध निर्माण करण्यासारख्या प्रयत्नांवरच इतर आव्हाने पेलण्याची क्षमता येऊ शकेल. खेड्यातील तरूणांमध्ये संघर्ष करण्याची भावना प्रज्वलित ठेवणे हे त्यांच्या प्रगतीतील महत्त्वाचं अस्त्र ठरू शकेल.

संघर्षाच्या आधीच हार मानलीस तू,
कर्तबगारी आधीच गमावलीस तू,
जीवन हा संघर्ष आहे, तोच नको म्हणतोस तू,
अरे जगण्या आधी संपलास तू।

या कुसुमाग्रजांच्या म्हणण्याप्रमाणे या शक्तीला वेळेआधीच नष्ट होण्यापूर्वीच एका परमशक्तीमध्ये परावर्तीत करणे हे युवकांच्या अग्रक्रमात असणे आवश्यक आहे. बऱ्याचदा शिक्षण घेऊन काही कामधंदा व नौकरी नसल्याने वैफल्यग्रस्त होणाऱ्या तरूणांमध्ये जिद्द निर्माण करणे हे ही या प्रयत्नामध्ये ओघाने आलेच. नैतिकता, वैचारिक जडणघडण वा प्रबोधन काहीही असो, या सर्वानाच भांडवल हे शिक्षणातूनच पुरविले जाते. शिक्षण म्हणजे योग्य व अयोग्य यामधील फरक समजणे व व्यवहार ज्ञान प्राप्त करणे. युवकांना पडणारा प्रश्न म्हणजे काय करावे व काय करू नये?

हा प्रश्न सोडवण्यासाठी शिक्षण, अनुभव व कौशल्य यांची सांगड घालणे महत्वाचे, माहिती व तंत्रज्ञानाचा वापर सुयोग्य पद्धती हा तरूण वर्ग करताना दिसून येत नाही. स्वतःचा विकास स्वतःच करणे व त्यासाठी लागणारे भांडवल शिक्षणातून उभे करणे गरजेचे आहे.

या कलेचा सर्वोत्कृष्ट उपयोग युवकांच्या एका समस्येवर करता येईल व ती समस्या म्हणजे बेकारी. स्वतःचा आर्थिक विकास, सामाजिक बांधिलकी, देशाचा विकास, स्वतःच्या ज्ञानात भर घालणे इत्यादी बाबींना जोडणारा दुवा म्हणजे स्वयंरोजगार. तो इतर विकासांबरोबरच इतर तरूणांना रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देतो, त्यांचे जीवनमान उंचवण्यास मदत करतो व भरभराटीला चालना देतो.

उत्तम व्यावसायिकतेचे लक्षण म्हणजे भरभराट. भारतीय तरूणांची मते याबाबतीत काहीशी उदासीन दिसतात. रोजगार व स्वयंरोजगार कार्यालयातील बेकारींची आकडेवारी बोलकी आहे. उद्योगधंदा चालवितांना येणारी महत्वाची अडचण म्हणजे व्यवस्थापन.

आजची तरूण पिढी धाडसी, पराक्रमी, आक्रमक आहे, तरूण पिढी अनुकरणप्रिय आहे पण ती थोडीशी संभ्रमितही (Confused) आहे. थोडीशी आगाऊही आहे. स्वतःला प्रगत म्हणवते पण मागासली आहे. या पिढीला एक धुंदी आहे आणि नशा जास्त प्रिय आहे.

आजची तरूण पिढी धाडसी, पराक्रमी, आक्रमक आहे, काय छान वाटले ना ऐकून हे पण ते तर आम्हीही आहोत. आम्ही धाडस दाखवले ते नवीन तंत्रज्ञाना बरोबर जुन्या संस्कृतीची सांगड घालण्याची! आम्ही पराक्रम करत आहोत तो दोन पिढयांना (आधीचा आणि आजची) बरोबर घेऊन पुढे जाण्याचा! जे आम्हाला पटत नाही त्याचा विरोध करतांना आम्हील आक्रमक हातोच. उदाहरण दयायचे झाले तर स्त्रीयावरचे अत्याचार. आजच्या तरूण पिढीला अनुकरण करावेसे वाटते ते पाश्चात्य देशातील संस्कृतीचे. करा न जरूर करा. पण तुम्ही अनुकरण करत आहात जे सोपे आहे त्या गोष्टींचे. त्यांना आकर्षण वाटते ते फक्त त्यांच्या व्यसनाचे, त्यांची दारू, सिगारेट आणि नशा निर्माण करणारे ड्रग्स तुम्हाला जास्त प्रिय आहेत आणि बरेच काही.... !

आम्हाला आकर्षण वाटते ते त्यांनी ठेवलेल्या स्वच्छ परिसराचे, त्यांनी निर्माण केलेल्या तंत्रज्ञानाचे ज्यामुळे आपण जगाच्या कुठल्याही कानाकोपऱ्यातील लोकांशी संपर्कात राहू शकतो. तसेच ज्यामुळे आपल्याला चांगले आणि योग्य ज्ञान मिळते. तंत्रज्ञानाचा उपयोग योग्य रितीने केला तर आपण निश्चितच प्रगतीपथावर असू.

तशी तरूण्याला धुंदी आणि नशा कायम असतेच पण या धुंदीत आम्ही भान विसरलो नाही किंवा या नशेतून आम्ही आत्मघातही करून घेतला नाही. आपल्याला वाटते we will look cool if we follow the attractive but cheap things of Foreigners.

आजच्या पिढीत अपवाद खूप आहेत आणि ते अपवाद आम्हाला प्रिय वाटतात कारण आमच्या मते त्यांनी त्यांच्या जीवनात समतोल साधला आहे.

सर्वात शेवटची व तितकीच महत्वाची बाब म्हणजे कर्तव्य पालन. स्वार्थातून परमार्थाकडे या दृष्टीकोनातून पाहातांना जर आपली कर्तव्ये आपण योग्य प्रकारे पार पाडली तरच परमार्थ करण्यासाठी वेगळे श्रम घ्यावे लागणार नाहीत. देश व त्यांची प्रगती सर्वांवर अवलंबून आहे. त्यावेळी असे म्हणुन चालणार नाही की, मी एकटाच आहे का हे सर्व करणारा? प्रत्येकाचा हातभार विकासात आवश्यक असतो. त्यासाठी प्रत्येकाने आपले कर्तव्य ओळखले पाहीजे व कर्तव्यपुर्तीला प्राधान्य देऊन, तिला तन, मन, धन अपर्ण केले पाहिजे. तरूणांकडे आव्हाने पेलण्याची ताकद निश्चितच आहे. नव्हे ती फक्त त्यांच्या मध्येच आहे. गरज आहे प्रबळ इच्छाशक्तीची व इच्छेस पेटून उठवण्याची, अजुनही वेळ गेलेली नाही म्हणून बा.भ. बोरकर म्हणतात –

तुला एवढे कसे कळत नाही ?
फुलत्या वेलीस वय नाही !
क्षितीज ज्याचे थांबले नाही,
त्याला कसलेच भय नाही!

रोशनी मरघाडे
B.Sc. Ist Year

विज्ञान शाखेतील विद्यार्थ्यांचे भविष्य

विज्ञान शाखेत करीअरच्या अनेक नवीन संधी उपलब्ध होते आहेत. या शाखेत प्रवेश घेऊ पाहाणाऱ्या विद्यार्थ्यांसमोर काय पर्याय आहेत? विद्यार्थ्यांनी कोणत्या गोष्टींकडे लक्ष देणे आवश्यक आहे ? याविषयी मुंबई विद्यापीठाच्या विभागाचे डीन सिद्धिविनायक बर्वे यांनी केलेले मार्गदर्शन महत्त्वाचे आहे.

विज्ञान शाखेची निवड करताना विद्यार्थ्यांनी कोणत्या गोष्टीकडे लक्ष देणे गरजेचे आहे?

कोणत्याही शाखेची निवड करताना विद्यार्थ्यांनी आत्मपरीक्षण करून स्वतःच्या क्षमतेचा आधी विचार करायला हवा. विज्ञान शाखेत शिक्षणासाठी विद्यार्थ्यामध्ये विश्लेषणात्मक विचारसरणी व चिकित्सक बुध्दिमत्ता असणे गरजेचे आहे. त्याशिवाय या शाखेत अगदी सूक्ष्म निरीक्षण व सृजनशीलतेची गरज भासते. विज्ञान शाखेत भविष्य घडवू इच्छीणाऱ्या विद्यार्थ्यानी या तीन मुख्य गुणांवर भर देणे आवश्यक आहे. या शाखेत संयमी वृत्तीचा बराच फायदा होत असतो.

विज्ञान शाखेतील अभ्यासक्रमांच्या माध्यमातून नोकरीच्या कोणत्या संधी उपल्बध आहेत?

एका विभागात व्यावसायिक अभ्यासक्रम जसे की इंजिनीअरिंग, मेडिकल या क्षेत्रांचा समावेश होतो तर दुसऱ्या विभागात संशोधन व सुधारणा संबंधित, जीवशास्त्र, रसायनशास्त्र, भूगर्भशास्त्र या व अशा अनेक अभ्यासक्रमांचा समावेश होतो. त्यासोबतच माहिती तंत्रज्ञान (आयटी) व जैवतंत्रज्ञान (बी.टेक.) हे विविध अभ्यासक्रम केंद्रीत करून तयार केलेले विभागही विद्यार्थी निवडू शकतात. या अभ्यासाक्रमातून विद्यार्थ्यांना पदवी, पदव्युत्तर शिक्षण घेण्याचे अनेक पर्याय उपलब्ध आहेत. या शिक्षणावर आधारित नोकऱ्या देखील आज मुबलक प्रमाणात उपलब्ध आहेत. शाळा, कॉलेजमध्ये शिक्षकांचे काम करण्यापासून ते अगदी संशोधन विभागात वैज्ञानिक या पदवीपर्यंतचे काम ही विद्यार्थी आपल्या कौशल्यावर मिळवू शकतात. या क्षेत्रात दरवर्षी जवळपास तीन लाखांपर्यंत नोकऱ्या उपलब्ध होत असतात. मात्र अशा ठिकाणी स्वतः मधील कौशल्यांवर काम करण्याची गरज असते. त्याचबरोबर विद्यार्थ्यांमध्ये स्वतंत्र नवोद्योगांचा पर्याय ही अलिकडे विकसित होऊ लागला आहे.

विज्ञान शाखेतील विविध अभ्यासक्रम आणि संशोधनासाठी कोणत्या संस्था उपलब्ध आहेत व त्यांची निवड प्रक्रिया कशी असते?

राष्ट्रीय पातळीवर काम करणाऱ्या अनेक संस्था जसे की, आयआयटी, एनआयटी, भारतीय वैज्ञानिक शिक्षण संशोधन संस्था (IISER), राष्ट्रीय वैज्ञानिक शिक्षण संशोधन संस्था (NISER) या सर्वत्र प्रसिद्ध आहेत. त्यासोबतच शहरी व ग्रामीण पातळीवर देखील अनेक कॉलेजचे पर्याय विद्यार्थ्यांना निवडता येऊ शकतात. ही निवड करतांना विद्यार्थ्यानी त्या कॉलेजमधील प्रयोगशाळा, विज्ञानपुरक वातावरण तपासून घेणे आवश्यक आहे. या व्यतिरिक्त विज्ञान क्षेत्रात शिक्षण घेताना किंवा त्यानंतरही सतत नवनवीन तंत्रज्ञानाशी संलग्न राहण्याची गरज असते. त्यासाठी विविध संशोधन मंडळांचा आधार घेता येऊ शकतो.

प्रवेश घेताना नेमका कोणता दृष्टिकोण विद्यार्थ्यांनी समोर ठेवायला हवा?

भारतात सर्वाधिक लोकसंख्या तरूणांची आहे आणि त्यातील बरेच विद्यार्थी हे विज्ञान शाखेशी निगडीत आहे. असे असले तरी विज्ञान क्षेत्रात भारताला मिळालेल्या नोबेल पारितोषिकांची संख्या कमीच आहे. विद्यार्थी विज्ञान शाखा निवडताना व्यावसायिक विभागाची अधिक निवड करतात मात्र संशोधन व विकास विभागाकडे अनेकांचे दुर्लक्ष होताना दिसत आहे. विज्ञान शाखा म्हणजे केवळ इंजिनीअरिंग किंवा मेडीकल ही विचारसरणी बदलली पाहिजे व इतर विभागाना देखील समान महत्त्व द्यायला हवे त्यासाठी या दोन विभागातील परस्परसंबंधांचे महत्त्व विद्यार्थ्यांना पटवून दयाद्यायला हवे.

भारतासारख्या तरूण देशातील विद्यार्थ्यांनी विज्ञान संशोधनाकडे मोठ्या प्रमाणात वळलं तर देशाला प्रगतीपथावर नेता येणं सहज शक्य आहे.

प्रत्येक विद्यार्थ्याला आपल्या जवळचं किंवा आवडीचं कॉलेज हवं असतं. पण देशात कित्येक विद्यापीठे आहेत. जिथे गुणवत्तापुर्ण शिक्षण मिळू शकते. तसंच विज्ञान संशोधनाला वाव दिला जातो. विद्यार्थ्यांनी अशा विद्यापीठांचाही विचार केला पाहिजे.

बारावीनंतर पुढे मेडीकल आणि इंजिनीअरींगला जाणाऱ्या विद्यार्थ्यांची संख्या अधिक आहे. पण, सायन्सकडे वळणारे विद्यार्थीही आता आहेत.

बायोलॉजी विषय घेतलेला असल्यास मेडिकल आणि त्या संबंधित शाखांची दारे खुली होतात. तसेच विद्यार्थ्यांना ॲग्रीकल्चर आणि कॅटरिंगमध्येही जाता येतं.

बायोलॉजी विषय नसेलेले विद्यार्थी इंजिनीअरींगच्या विविध शाखांचा विचार करू शकतात. चार वर्षे इंजिनीअरींग करून पुढेही त्यांना शिक्षण घेण्याचे विविध पर्याय उपलब्ध आहेत.

बायोलॉजी विषय नसलेले विद्यार्थी बारावी नंतर आर्किटेक्चरला प्रवेश घेऊ शकतात.

दहावी नंतर अकरावी–बारावी न करताही या शाखेतील काही पर्याय विद्यार्थ्यापुढे आहेत. विद्यार्थी डिप्लोमा इंजिनीअरींगला प्रवेश घेऊ शकतात. पुढे डिप्लोमा पूर्ण केलेल्या विद्यार्थ्याला थेट इंजिनीअरींगच्या दुसऱ्या वर्षाला प्रवेश घेता येतो. दहावीनंतर विद्यार्थ्यांना आयटीआय तसेच काही प्रमाणपत्र अभ्यासक्रमांचा विचार करता येतो. आज–काल विद्यार्थ्यांना बारावीनंतर पुढे सैन्यदलात तसेच मर्चंट नेव्हीमध्ये प्रवेश घेता येतो. रेल्वेसारख्या शासकीय विभागांत तसेच उद्योग जगात विद्यार्थ्यांना अप्रेंटीस्ट म्हणून संधी मिळू शकते.

बारावीनंतर टूरिझम, पेंटिग टेक्नॉलॉजी, टेक्सटाईल टेक्नॉलाजी आदी अभ्यासक्रम पूर्ण केल्यास विद्यार्थ्याला क्षेत्राची दारे खुली होऊ शकतात.

तसेच विज्ञान शाखेबाहेर जाऊन विद्यार्थी बीएमएम, बीएमएस, बीएसडब्ल्यू आदी अभ्यासक्रम करू शकतात. विद्यार्थ्यापुढे आता नव्या शाखा खुल्या झाल्या आहेत. पारंपरिक शाखांसह ऑटोमोबाईल, मरीन, प्लास्टिक, मेटलर्जी, प्रिंटींग आदी अनेक नव्या शाखा उपलब्ध आहेत. या विद्यार्थ्यांपुढे इंडस्ट्रीअल डिझाइनचा नवा पर्याय हा उपलब्ध आहे. बीएससी पूर्ण केल्यावर विज्ञान तंत्रज्ञान क्षेत्रात करिअर करायचं असल्यास विद्यार्थी आपल्या आवडत्या विषयात एमएससी करू शकतात. एमसीएचा अभ्यासक्रमही ते करू शकतात.

विज्ञान तंत्रज्ञान क्षेत्राबाहेर पडून करीअर करायचं असल्यास बीएड करून शिक्षण घेता येईल. पत्रकारिता, विधी शिक्षण, व्यवस्थापन, क्लिनीकल रिसर्च, मास कम्युनिकेशन आदीही पर्याय खुले राहतात.

गेल्या काही वर्षाचे प्रवेश पाहता विद्यार्थिनीचें आयटीआयकडे वळण्याचे प्रमाण वाढत आहेत. आयटीआयच्या तीस टक्के जागा विद्यार्थिनींसाठी राखीव ठेवण्यात आल्या आहेत. तसेच खास मुलींचे आयटीआयही सुरू करण्यात आले आहेत.

तेजल मालोडे
B.Sc. Ist Year

'भारतीय तरूण : आज, काल आणि उद्या'

'गुरूजनांचा आदर आहे
दिन–दुबळयांचा मित्र आहे
सेवेसाठी तत्पर आहे
देवावरती भक्ती आहे
जीवनामध्ये निती आहे
मातृभूमीवर प्रेम आहे
चारीत्र्य ज्याचे शुद्ध आहे
तोच आदर्श युवक आहे.'

तरूण म्हटलं की आठवते एक धगधगतं सळसळतं तरूण रक्त ज्याच्यामध्ये लाथ मारेल तिथ पाणी काढण्याची धमक असते. ज्याच्या जिभेतून निघणाऱ्या प्रत्येक शब्दाला धारदार शब्दाची पात असते. देश जाच्या खांदयावर उदयाच्या विकासाची स्वप्ने पाहतो तो तरूण. पण काल एकाच दिवशी काही बातम्या वाचनात आल्या. पहिली होती की आईने पैसे दिले नाहीत व सारखी 'शेतात जा, काम कर' अस म्हणते म्हणून २२ वर्षाच्या युवकाने स्वतःच्या जन्मदात्या आईचा खून केला. वाचून खूप वाईट वाटले. मन सुन्न झाले. तोपर्यंत दुसरी बातमी होती की एका अल्पवयीन मुलीला एका युवकाने लग्नाचे आमीष दाखवून बलात्कार केला. तर तिसरी बातमी होती की, भर रस्त्यात आंतर जातीय विवाह केला म्हणून एका युवकावर काही लोकांनी प्राणघातक हल्ला केला.

या सगळया बातम्या वाचून मन सुन्न झाले, कारण हे वाचण्याआगोदर माझ्या हातात स्वामी विवेकानंदांचे पुस्तक मी वाचत होती, आणि मला प्रश्न पडला की ज्या स्वामी विवेकानंदानी म्हटले होते की ''मला फक्त १०० तरूण दया मी त्या राष्ट्राचे भवितव्य घडवून दाखवतो.''

त्याच स्वामींच्या देशात अशा घटना घडतातच कशा? खरे तर आपल्या देशाचा इतिहास पाहिला तर आपल्या देशाचा खूप मोठा इतिहास घडला तो तरूणांमुळेच. जेव्हा जेव्हा देशावर संकटे आली तेव्हा तेव्हा तरूण एक झाले आणि संकट परतवून लावलीत. संत ज्ञानेश्वर, शिवाजी महाराज, मंगल पांडे, भगतसिंग, विवेकानंद, सावरकर, आंबेडकर यांच्याकडे पाहिलं की जाज्वल्य इतिहासाचा अभिमान वाटतो.

पण आज मात्र खूप वाईट वाटतंय की थोर महापुरूषांचा इतिहास घेऊन जगणारी आजची पिढी इतकी कशी भरकटली ? आजच्या तरूण पिढीला तरूण म्हणायला पण लाज वाटतेय. कारण आजची तरूणाई दिसते ती दारू, गांज्या, गुटखा, सिगारेट यासारख्या वाईट व्यसनात अडकलेली. आई–वडिलांची सेवा न करता त्यांना वृद्धाश्रमात पाठवणारी. प्रसंगी त्यांच्यावर हात उचलणारी, आणि हे सगळं पाहिल्यानंतर प्रश्न पडतोय की खरंच आजची तरूणाई कुठे आहे?

एक वेळ होती जेव्हा नारा होता
'तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दुंगा'
पण आजची आमची तरूणपिढी म्हणतेय,
तुम मुझे तंबाखू दो मैं तुम्हे चुना दुंगा'

व्यसनांच्या आहारी गेलेली आजची पिढी पाहून खूप वाईट वाटते, कारण महासत्ताक भारताचे स्वप्न कलामांनी याच तरूणांच्या जीवावर पाहिले असताना आजची ही तरूणाई मात्र भरकटत आहे. एकीकडे महासत्तेच्या जवळ पोहोचणारा भारत दुसरीकडे मात्र तरूण पीढीला दूर लोटतोय की काय असा प्रश्न पडतोय.

वेळ बदलली काळ बदलला तसेच दुनियाही बदलली. पाश्चात्य देशाचं अनुकरण करताना आमची तरूणाई मात्र स्वतःच्या देशाची आदर्श संस्कृती मात्र विसरत चाललीय. इंटरनेटने जग जवळ आले, मात्र माणसातील माणुसकी संपत चालली. संवेदना हरवलेली तरूणाई अडीच अक्षरी प्रेमात वेडी झाली आणि एकतर्फी प्रेमातून हल्ला करू लागली. तर दुसरीकडे कधीच न जाणारी जात डोके वर काढताना जर एखादयाने आंतरजातीय विवाह केला तर त्याचा भर दिवसा खून होऊ लागला. जात, पात, धर्म यात अडकलेली तरूणाई कसला आणि काय देशाचा विकास करणार ? असा केविलवाणा प्रश्न पडतोय.

ज्या आईवडीलांनी जन्म दिला, लहानाचे मोठे केले, त्याच आईवडीलांना घराच्या बाहेर काढणारी तरूणाई एक दिवस या देशाचे वाटोळे करणार असे दिसते. पण जर हे होऊ दयायचे नसेल तर सर्व तरूणांनी एकत्र येण्याची गरज

आहे. बाबासाहेब आंबेडकरांनी शिका, संघटित व्हा संघर्ष करा असे सांगितले होते. ते आता तरूण शिकले आहेत. यांनी देशहितासाठी एकत्र येऊन अन्यायाविरूदध संघर्ष केला पाहिजे.... जर तरूणाई एकत्र झाली तर इथे स्वराज्य निर्माण होते. तरूण एक झाले तर १५० वर्षाची गुलामी नष्ट होते, हा आपला इतिहास आहे, पण त्यासाठी साऱ्या तरूणांनी एकत्र येऊन उद्याच्या महासत्ताक भारतासाठी जगले तर कोणाचीही जीभ उचलणार नाही की आजची तरूणाई आहे कुठे म्हणाया...

हल्लीचे तरूण आपल्या दिसण्याकडे जरा जास्तच लक्ष देतात. पुर्वीचेही द्यायचे, मात्र ते यासाठी आजच्या तरूणांइतके आग्रही नसायचे. आज आपल्या 'असण्या' पेक्षा 'दिसण्या' कडे तरूणांचा कल वाढलेला दिसतो. आजच्या तरूणी मध्ये चित्रपट मालिकांमधील नव्यांची नक्कल करण्याची जणू स्पर्धाच लागलेली आहे. या नट्यांची केशरचना, मेकअप, कपडे, शूज लगेच कॉपी केले जातात. सगळ्यांचा आपल्या चांगल्या दिसण्यावर भर असतो. पूर्वीच्या मुली कॉलेजला जातांना साडी नेसायच्या, नंतर सलवार–कमीजचा काळ आला जो आजही टिकून आहे, मात्र त्यात भर पडली वेस्टर्न लूक असलेल्या कमीच आणि जिन्सची एखादी मैत्रिण जरा जुन्या पद्धतीचे कपडे वापरत असेल किंवा साधीसरळ केशरचना अथवा साधे राहणीमाण असेल तर लगेच तिला कालबाह्य आणि काकूबाई ठरवलं जातं!

मुलंही यात मागे नाहीत! आताची मुलं जिममध्येच जास्त मिळतात. शरीर कमावणे ही चांगली गोष्ट आहे, मात्र इथे फक्त शरीर, कमावण्या किंवा तंदुरूस्त राहण्यासाठी नाहीतर 'माचो' लूक दिसण्यासाठी जिममध्ये जाणारे आहेत! फिट जिन्स, फीट टी–शर्ट घालून आपल्या डौलदार शरीरयष्टीयं दर्शन घडवलं जातं. टीव्हीवरील जाहीरातींमध्ये दाखवली जाणारी क्रिम्स, परफ्युम्स मिळवण्याकडे त्यांचा जोर असतो.

थोडक्यात काय तर आजच्या तरूणांचा असा गैर समज आहे की, जर तुम्ही चांगले दिसाल तरच लोक तुमची दखल घेतील. नाहीतर तुमच्याकडे त्याचं साफ दुर्लक्ष होईल आणि दिसण्यासाठी या सर्व गोष्टी करायलाच लागतील.

पण ह्या सर्वापेक्षा कितीतरी अधिक महत्वाचं आहे ते तुमचं चांगलं असणे! लोकांनी तुमचे दिसणे नाही तर तुमचे वागणे–बोलणे, तुमचे गुण, तत्व यांच्यामुळे तुम्हाला ओळखायला हवे आणि हीच ओळख तुम्हाला त्यांच्या चिरकाळ स्मरणात ठेवेल.

हरवली आहे आजची तरूणाई
गुरफटली आहे फेसबुकच्या जाळ्यात
विसरून खरी–खुरी परिवर्तनाची लढाई
अडकली आहे व्हाटसअपच्या वादात
कुठे गेले वाडवडिलांचे संस्कार
विसरून गेले का संस्कृती पार
नको त्या विकृतीला बळी पडून
कसे करतात हे सामुहिक बलात्कार
प्रेमभंगात रडणारे मरणारे हे
काय दिव्य करून दाखवतील
फक्त सोशल साइटस् वरतीच
आपलं रडगाणं गात राहतील
शोधतोय मी त्या तरूणाईला
जी पेटून उठेल अन्यायाला
दाखवून देईल साऱ्या जगाला
करू देणार नाही अन्याय कुणाला.

तरूण पिढी देशाचा, समाजाचा आणि कुटुंबाचा आधार स्तंभ आहे. तरूणांच्या हाताला काम मिळाले तरच तरूण सर्वांगीण विकास करू शकतात. तरूणांच्या हाताला काम नसेल तर तरूणाई भरकटते. दिशाहीन होते. वाम मार्गाला लागते.

आजच्या काळात तरूणांसमोर समस्यांचा ढीग पडला. समस्यातून आपली कशी सुटका करावी असाच प्रश्न जो–तो तरूण स्वतःला विचारत असतो. शासन तरूणांच्या हितासाठी चांगले उपक्रम राबवत नाहीत. नुसत्या शासनाच्या थापा आणि बाता ऐकून घ्याव्या लागतात. उद्योग क्षेत्राचा विस्तार झाला पण नितक्या नौकऱ्या उपलब्ध झाल्या नाहीत. दरवर्षी नोकऱ्यांच्या संख्येत वाढ होण्या ऐवजी घट होऊ लागली. नोटबंदीमुळे तर नोकऱ्यात मंदीच आली. हजारों तरूण बेकार झाले. देशातील प्रत्येक राज्यात

बेकारांच्या फौजा आहेत. ह्या फौजा कधी आपल्याला नोकरी लागते याची आतुरतेने वाट पाहत असतात. या गावातून त्या गावात कित्येक तरूण स्थलांतर करतात मात्र स्थलांतरीत तरूणांना शहराच्या ठिकाणी काम मिळेल अशी काही गॅरंटी राहली नाही.

उदा. गरूडाचं अंडे एका कोंबडीच्या पंखाखाली ठेवले. उबवल्यानंतर त्यातून गरूडाची पिल्ली बाहेर पडलीत, पण ते स्वतःला कोंबडीचं पिल्लू समजू लागलं. कोंबडीच्या पिलांच्या अनुकरणामुळे घाणीत पडलेले धान्याचे कण वेचणं, कर्कश आवाज करत इकडं–तिकडं हिंडणं यातच त्याचा वेळ जाऊ लागला. त्याला जमिनीपासून फारसे उंच उडता येत नसे. कारण त्याने अनुकरण केलं कोंबडीच्या पिल्लाचं, एकदा आकाशात डौलदारपणे उड्डान करणाऱ्या गरूडाकडं त्याच लक्ष गेलं. बरोबरीच्या पिल्लांना त्याने विचारलं, ''तो रूबाबदार पक्षी कोणता'' त्याला उत्तर मिळाले, तो गरूड आहे. अतिशय सामर्थ्यवान पक्षी, पण तुला त्याच्यासारखं उडता येणार नाही. कारण तू आहेस साधं कोंबडीचं पिल्लू'' अशा तऱ्हेने त्या गरूडाच्या पिल्लानं काहीही विचार न करता स्वतःला कोंबडीचं पिल्लू मानलं. स्वतःच्या आत्मियेतेला ओळखण्याच्या दृष्टीअभावी स्वतःचा उज्वल वारसा त्याला कधीच लाभला नाही. कोंबडा म्हणून तो जगला आणि कोंबडा म्हणूनच मेला. यशस्वी होण्यासाठी जन्माला आलेल्या त्या गरूडाला आपल्या काल्पनिक मर्यादामुळे अपयशी जिणे जगावं लागलं. अशीच गोष्ट बहुतेक तरूणांच्या बाबतीत घडते. स्वतः मधील सुप्त शक्तीचा साक्षात्कार न होताच बहुतेक तरूण जगाचा निरोप घेतात. हे त्यांचे दुर्देवच असते. आपल्यामधील दुरदृष्टीच्या अभावामुळे आपण उत्तम यशापर्यंत पोहोचण्यात कमी पडतो. गरूडासारखी भरारी घ्यावयाची असेल तर तुम्ही गरूडाचे कौशल्य आत्मसात केलं पाहिजे. कर्तृत्वसंपन्न माणसांच्या सहवासामुळे कर्तव्यसंपन्न होण्याची प्रेरणा मिळेल. विचारवंताचा सहवास विचारवंत बनवील. तक्रारखोर माणसांच्या सहवासामुळे तुम्ही स्वतःही तक्रारखोर बनाल. गुन्हेगारी वृत्तीच्या माणसासोबत राहिलाच तर गुन्हेगारच व्हाल. जशी संगत तसे गुण लागतात. त्यासाठी तरूणांनी ठरवावे आपल्याला नेमकं कुठल्या दिशेला जायचं. आपली दिशा भरकटू नये याची काळजी घ्यायला हवी!

तरूण शक्तीचे वर्णन करतांना भगतसिंह म्हणतात की, ''युवावस्था ही मानवी जीवनाचा वसंतकाळ आहे. युवाशक्ती वसंतातील कळीप्रमाणे नाजुकही असते व ज्वालामुखीप्रमाणे उद्रेकही असते. युवावस्थेत दोनच मार्ग असतात तो चढू शकतो उन्नतीच्या सर्वोच्च शिखरावर किंवा तो पडू शकतो अधःपतनाच्या खोल अंधाराच्या खाईमध्ये. युवक त्यागी होऊ शकतो आणि विलासीही होऊ शकतो.

तरूण जगाला त्रस्तही करू शकतो. तोच जगाला अभयदानही देऊ शकतो. त्यामुळे युवा शक्तीचा वापर कसा करायचा हे त्या देशातील समाजाने ठरवायचे असते. युवक काय करू शकतो हे सांगताना भगतसिंग लिहितात की, ''जगाचा इतिहास हा युवकांच्या कीर्तीने ओतप्रोत भरलेला आहे. आत्मत्याग फक्त युवकच करू शकतात. त्याने ठरवले तर रात्रीच्या रात्र जागणे त्याच्या डाव्या हाताचा मळ आहे. तरूणाने ठरवले तर तो समाजाची चेतना जागी करेल, देशाची लाज राखेल, राष्ट्राचा चेहरा ऊजळून शकेल, एवढेच नाही तर तरूणाने ठरवले तर तो मोठमोठी साम्राज्य उलथून टाकू शकतो. जगातील सर्व क्रांत्या आणि परीवर्तन युवकांनीच केले आहे.'' हे सांगून भगतसिंग म्हणतात की क्रांती कोणी केल्या तर ते लिहितात'' बुद्धीमान माणसं ज्यांना वेडी पोरं म्हणतात, वाट चुकलेले म्हणतात तेच क्रांती करत असतात'' युवा शक्तीचे एवढे चांगले वर्णन भगतसिंगांनी केले आहे. कोणत्याही देशाची सर्वात मोठी संपत्ती त्या देशाचा युवक असतो व त्याला दिशा मिळाली तर तो त्या देशाला जगाची महासत्ता बनववू शकतो. म्हणून देशातील तरूणांना दिशा देण्याची गरज आहे. त्यातूनच भारताची प्रगती शक्य आहे.

पल्लवी वांढरे
बी.एस.सी. भाग १

माझा आवडता चित्रपट

अनाथ उपेक्षित मुलाच्या आयुष्यात पहाट निर्माण करणाऱ्या समाजसेविका, ज्यांच्या आयुष्यावर आधारित मराठी चित्रपटाने आंतरराष्ट्रीय पातळीवर चमक दाखविली, हजारो अनाथांची माय, सेवाकार्य करणाऱ्या सामाजिक कार्यकर्त्या, अनेक खडतर प्रसंगाना तोंड देत देत हजारो अनाथ मुलांचा सांभाळ करणाऱ्या, माझ्यासुद्धा मनामध्ये मी पण असंच काही तरी करणार अशी भावना मनामध्ये जागृत करणाऱ्या असा हा माझा आवडता चित्रपट तो म्हणजे "मी सिंधुताई सपकाळ"

अनंत महादेवन दिग्दर्शित चित्रपटात तेजस्विनी पंडीत, उपेंद्र लिमये, ज्योती चांदेकर यांनी प्रमुख भूमिका बजावल्या आहेत.

महाराष्ट्राच्या विदर्भातील वर्धा जिल्हयाच्या जंगल भागातील नवरगाव येथे अभिमान साठे यांच्या घरी त्यांच्या पत्नीला मुलगी नको असताना मुलगी झाली म्हणून तिचे नाव चिंधी ठेवले. अभिमान साठे हे गुरे वळायचे काम करायचे. गाव खूप लहान असल्यामुळे तेथे सुविधांचा अभाव. चिंधी थोडी मोठी झाली. घरचे गुरे राखायला म्हणून रोज सकाळी बाहेर पाठवायचे आणि त्या शाळेत जाऊन बसत. जेवणाच्या सुट्टीत घरून डब्बा न आणल्यामुळे त्या शाळेतील मुलांनी झाडाखाली बसून खाल्येल्या डब्यामधून जेवण करताना जे शीत जमीनीवर पडायचे ते त्या, मुल परिसरात खेळायला गेले की तिथे जाऊन प्राजक्ताची फुले वेचून गुपचूप पणे त्या फुलांवर ते सांडले शीत ठेवून ते तोडांत टाकून त्या आपली भूक मिटवत आणि कुणालाही न कळावे म्हणून जणू प्राजक्ताची फक्त फुले वेचत आहेत, असे त्या दाखवत. कारण गुऱ्रांना रानात चारापाणी करून घरी आणल्याशिवाय त्यांना जेवायला मिळत नसायचे. मुळच्याच बुद्धिमान असल्यातरी आई नेहमी म्हणत असायच्या की "पोट्टी ९ वर्षाची झाली. काय कराची शाळा बिळा ? घरकाम, स्वयंपाकपाणी, शेणसडा कबा शिकणार ? नुसती शाळाच शिकून का व्हणार ? पण वडील नेहमीच म्हणायचे शिकेल. तर पुढे जाईल पण आई म्हणायची की पोट्टीनं पुडं जायचं म्हणजे लग्न करून सासरी जायचं. दोन पायांन जाचं आणि चार खांद्यावरूनच यायचं ही रीत हाय आणि तिच पाळायला पाहिजे. चिंधी चौथी पास झाली. जसा उगवलेला सूर्य मावळतो तसाच चिंधीच्या आयुष्यात परिवर्तन आले. ९ वर्षाची चिंधीचा वयाने २६ वर्षांनी मोठे असलेल्या श्रीहरी सपकाळ याच्यांशी त्यांचा विवाह झाला. इथे त्या चिंधुताई झाल्या, घरी प्रचंड सासुरवास होता. कुटुंबात शैक्षणिक वातावरण नाही. जंगलात लाकूडफाटा, शेण गोळा करताना सापडलेले कागदाचे तुकडे माई घरी आणायच्या आणि उंदराचा बिळांत लपवून ठेवायच्या. क्वचित घरी एकट्या असल्या तर त्या अभ्यास करण्याचा प्रयत्न करीत. त्या वाचनप्रिय होत्या. अठराव्या वर्षापर्यंत तीन बाळंतपणं झाली. त्या चौथ्या वेळी गर्भवती असताना त्यांनी त्यांच्या आयुष्यातला पहिला संघर्ष केला. तेव्हा गुरे वळणे हाच व्यवसाय असायचा. गुरेही शेकड्यांनी असायची. त्यांचे शेण काढता काढता बायकांचे कंबरडे मोडायचे. शेण काढून बायका अर्धमेल्या व्हायच्या पण त्याबद्दल कोणतीही मजुरी मिळायची नाही. रस्त्यावर मुरूम फोडणाऱ्यांना मजुरी, पण शेण काढणाऱ्यांना नाही. या शेणाचा लिलाव फॉरेस्टरचे लोक करायचे. इथे त्यांनी पहिले बंड पुकारले आणि लढा सुरू केला. त्यामुळे या लिलावात ज्यांना हप्ता मिळायचा त्यांच्या हप्त्यावर गदा आली. हा लढा त्या जिंकल्या पण त्यांना या लढ्याची जबर किंमत चुकवावी लागली. त्यांच्या या धैर्याने गावातील जमीनदार दमडाजी असतकर दुखावला गेला. जंगलखात्याकडून येणारी मिळकत बंद झाली. दमडांजीने त्यांच्या पोटातील मूल आपले असल्याचा प्रचार सुरू केला. नवऱ्याच्या मनात त्यांच्या चारित्र्याबद्दल संशय निर्माण झाला. आणि पूर्ण दिवस भरलेल्या चिंधूताईंना त्याने बेदम मारले आणि घराबाहेर काढले. गुरांच्या लाथा बसून मरतील म्हणून तशा अर्धमेल्या अवस्थेत त्यांना गोठ्यात आणून टाकले. त्या अवस्थेत त्यांची कन्या जन्माला आली. नवऱ्याने हाकलले, त्यानंतर गावकऱ्यांनी हाकलले. माराने अर्धमेल्या झालेल्या चिंधुताई माहेरी आल्या, पण सख्या आईनेही पाठ फिरवली. रेल्वे स्टेशानांवर भीक मागत हिंडायच्या. चतकोर भाकर, उष्टावलेले एखादे फळ हाती लागेल, म्हणून रात्रभर रेल्वे रूळाच्या कडेने फिरायच्या. एकदा त्यांनी आत्महत्येचा प्रयत्नही केला पण 'लहान मुलीचा जीव घेतला तर पाप लागेल' म्हणून मागे फिरल्या. मग पुन्हा गाणे म्हणून भीक मागत पोट भरणे सुरू झाले. दिवसभर भीक मागायच्या आणि रात्री स्टेशनवर झोपायच्या. पण तिथे त्यांनी कधी एकटे खाल्ले नाही. स्टेशनवरच्या

संगळ्या भिकाऱ्यांना बोलावून त्या मिळालेल्या अन्नाचा काला करायचा आणि मग सर्व भिकारी एकत्र बसून जेवायचे. पण स्टेशनवर उघड्यावर राहणे शक्य नसल्याने त्यांनी स्मशान गाठले. त्या स्मशानात राहू लागल्या. पण पोटातल्या भुकेचं काय? त्यावेळस एक मृतदेह आला. अंत्यसंस्कार झाले. अंत्यविधी करून लोक निघाले. त्या जळालेल्या प्रेता समोर थोडे पीठ आणि पैशाचा शिक्का ठेवला होता. चितेवरच्या मडक्याच्या टोकरात पीठ कालवले. आणि चितेवरच्याच निखाऱ्यावर भाजले आणि ती भाकर त्यांनी चितेवर जाळलेल्या मृतदेहाच्या निखाऱ्यावरची भाकर त्यांनी खाल्ली. त्याची चव ही कधी न विसरण्या सारखी होती. त्या काहीदिवसांनी तिथून ही बाहेर पडल्या, आणि भीक मागत, काम शोधत चिखलदऱ्याला पोहोचल्या. तिथे रस्ताबांधणीला सुरूवात झाली होती. स्थानिक आदिवासी आणि मध्य प्रदेशातील मजूर तिथे काम करत होते. कंत्राटदाराने माईंना कामावर ठेवण्यास नकार दिला. सकाळसंध्याकाळ कुटकी (भात), डाळ आणि आठवडयातून एकदा ताक या बोलीवर माईंनी तिथल्या मजुरांची मुलं सांभाळण्यास सुरूवात केली. चिखलदऱ्याचं काम संपल्यावर हे मजूर पुण्याला आले, आणि माई त्यांच्याबरोबर निघाल्या.

एकदा असंच पुण्यात कुठेसं रस्त्यावर त्यांना एक मुलगा रडत बसलेला दिसला. आपलं नाव 'दिपक गायकवाड' एवढंच त्या मुलाला सांगता येत होत आसपासच्या लोकांनाही काही माहिती नव्हती. त्या मुलाला घेऊन त्या पोलीस स्टेशनमध्ये गेल्या तर पोलीसांनी त्यांना हाकलून लावलं. त्यांनी आठवडा पोलीस स्टेशनबाहेर बसून काढला पण पोलीसांनी तक्रारही नोंदवून घेतली नाही. मग त्यांनी त्या मुलाचा सांभाळ करायचं ठरवलं. तिथून पुढे महिनाभरात अशीच २–३ मुलं त्यांना रस्त्यावर भीक मागतांना भेटली, आणि माईंनी त्यांनाही आपल्या पदराखाली घेतल. निराश्रीतांच जगणं किती भयंकर असतं ते त्यांनी अनुभवलं होतं. ते त्या मुलांच्या वाट्याला येऊ नये, ही त्यांची इच्छा होती. ते या मुलांमुळे आपल्याही जगण्याला काही अर्थ मिळेल, असे त्यांना वाटले. पण या मुलांचा साभांळ करायला पैसा कुठून आणायचा? स्वतःचंच पोट तिथे भरलं जात नव्हतं. आणि आता जोडीला ४ मुलं होती. आणि त्या मुलांनी भीक मागणं माईंना मंजूर नव्हतं त्योवळी भारत–रशिया मैत्री करारावर पुण्याच्या बालगंधर्व रंगमंच्यावर सह्या होणार होत्या. या ऐतिहासिक करारासाठी मोठा समारंभ योजला होता. तिथे कडोकट बंदोबस्त होता. त्यांच्या लक्षात आलं की आपण इथे व्यासपीठावर जाऊन दोन शब्द जर बोलू शकलो तर आपल्या संकटातून मार्ग निघू शकेल. त्यांनी हळूच सभागृहात प्रवेश केला. झाडूवाली असेल म्हणून कोणी त्यांच्याकडे लक्ष दिले नाही. व्यासपीठावर एक काश्मिरी माणूस आपल्या व्यथा सांगत होता. तो भाषण संपवून खाली उतरताच त्यांनी थेट व्यासपीठावर उडी घेतली. आणि त्यांनी तिथल्या कर्मचाऱ्यांना बोलण्याची संधी मागीतली. त्यांनी हाती माईक धरला आणि भाषण सुरू केलं. त्यांच्या खणखणीत आवाज आणि कविता ऐकून सगळे स्तब्ध झाले. जे मनात येईल ते त्या बोलल्या, त्यांनी भाषणाची केलेली सुरूवात अशी होती की, मित्रांनो मी एक कृष्ण भक्त आहे. भजन म्हणत गावोगावी फिरते, पण कृष्णच भजते राम नाही. ... राम नाही..??? राम का नाही ? त्याला कारण आहे बाबांनो ज्यांनी बायकोला सोडलं त्या का पुजायचं ? सीतेचा अपमान तोच माझा अपमान अशा देवाला मी देवच मानत नाही. मनातली सगळी भडास बाहेर काढली. भाषण संपले आणि सगळे जण उभे राहून टाळ्यांचा कडकडाट व्हायला लागला आणि इथूनच त्या चिंधुताईच्या सिंधुताई झाल्या. आणि त्यांना जे हव होतं ते मिळालं. या भाषणानंतर त्यांना मदत नक्कीच मिळणार होती हे त्यांना माहीत होतं. सर्वजण त्यांचे कौतुक करू लागले. फाटक्या चोळीवर, लुगडयावर भाषण देणाऱ्या चिंधुताई या आता सिंधुताई झाल्या. त्यांना भूक लागली होती. शेवटी त्यांनी हळूच विचारलं, खाना है क्या? त्या गेल्या आणि त्यांनी पूर्ण ताट भरून अन्न घेतलं तिथेच जमिनीवर बसून जेवू लागल्या एवढं ताटभर अन्न त्यांनी आयुष्यात पहिल्यांदाच बधीतलं होत.

त्या जेवत असतांना दगडूशेठ हलवाई मंदिर समितीचे तात्यासाहेब गोडसे तिथे आले आणि त्यांची विचार पूस केली. आणि सगळं विचारून झाल्यानंतर तात्यासाहेबांनी त्यांच्या मुलीला सांभाळण्याची तयारी दाखवली. सिंधुताईना मुलीच्या सांभाळण्याची काळजी होतीच. पण आता काळजी होती ती रस्त्यावरच्या भीक मागण्याऱ्या मुलांची.

फार सोसलं पण नवऱ्यानं मारलं अन् पावसानं झोडपले हे कुणाला सांगत फिरणार ? पण त्या खंबीर उभ्या

राहिल्या. पदरात पोर होती. रस्त्यावर बेवारस भीक मागत फिरणारी मुले यांचा सांभाळ करण्याचा निर्णय घेतला. आणि इथूनच त्यांची ओळख ही सिंधूताईची 'माई' या नावाने झाली. माई आता मुलांचा सांभाळ करायला लागल्या. त्यांची काळजी घ्यायला लागल्या. मुले मोठे होत गेली. आणखी नवीन मुले येत गेली पण चित्रपटाचा शेवट हा इथे सुद्धा होत नाही. इथून पुढे त्या आपल्या भाषणाद्वारे सांगतात. त्यांच्या आयुष्यातला संघर्ष तर त्यांनी दाखवलेलाच आहे पण मुलीला दुसऱ्याकडे देऊन दुसऱ्याच्या मुलांना कसे सांभाळले ? त्या म्हणतात की, ''रस्त्यावर बेवारस सोडलेली मुलं माझ्याकडे सांभाळायला होती. मी जे काही सोसलं होत त्यानंतर माझा हा मार्ग मी निश्चित केला होता. माझ्या मुलीला मी त्याच्याबरोबर सांभाळू शकले असते. पण एखाद्या दिवशी मुलांना उपाशी राहण्याची वेळ जेव्हा आली असती तर? मी काय तशीच पाणी पिऊन झोपली असती. पण माझी मुलगी त्यांच्या बरोबर असती तर माझ्ाी माया जागृत झाली असती. तिला मी अंधारात नेऊन गुपचुप दोन घास खाऊ घातले असते कां? मला अन्याय करायचा नव्हता. म्हणूनच मी माझ्या मुलीला दगडूशेठ गणपतीच्या पायाशी घातले आणि पुढे निघाले. माझ्यातली आई चुकली असती तर मग माझ्याच्याने इतर मुलांचा सांभाळ झाला नसता.'' आकाशवाणीवर गाऊन माईंना ३५० रू. महिना मिळू लागला. दूरदर्शनवरही त्यांच्या गाण्याचे २ कार्यक्रम झाले आणि जमा झालेले पैसे घेऊन माई चिखलदऱ्याला परतल्या. एक झोपडी बांधून त्यांनी आपला आश्रम थाटला. हळूहळू मुलांची संख्या वाढू लागली. रस्त्यावर सापडलेली कचराकुंडीत फेकलेली, अनाथ झालेली मुलं माईंनी आपली मानून चिखलदऱ्याला आणली. तिथे आल्यानंतर सुद्धा त्यांना अनेक प्रकारचा संघर्ष करावा लागला. त्यांच्या वर हल्ले सुद्धा झाले. एकदा नव्हे, दोन नव्हे तर तीनदा होऊन त्या जखमी सुद्धा झाल्या. त्यानंतर मात्र माईंनी त्या परिसरातून बाहेर पडण्याचा प्रयत्न केला.

त्या म्हणतात की, "सर्वांनी, जन्मदात्या आईनंही पाठ फिरवली तेव्हा गोठ्यातल्या गाईनं मला संरक्षण दिलं. म्हणून मी गायीलाच माझ्ाी माय मानलं. तुझ्या ऋणातून उतराई होईन असं मी तिला वचन दिलंय, आजवर ज्या रस्त्यावर सोडलेल्या भाकड गायींचा, कावळ्यानी डोळे फोडून जखमी केलेल्या गायीचा सांभाळ सुद्धा त्या करतात.

गाण्यानं, कवितेनं माईंना जगवलं, आणि आजही कवितांचा आधार घेऊन बहिणाबाई, सुरेश भटांच्या कवितांचं ऋण त्या मानतात. त्या म्हणतात की, या साहित्यकांनी मला दुःखातून बाहेर काढलं आणि सांगितलं, व्रण जपत रहा, गात रहा, पुढे जात रहा. साहित्य माणसाच्या पायात बळ देतें, जखमा पुसतं, बेभान करतं, उन्मत्त करतं, कवितेमुळेच माझ्या वेदना मी विसरू शकले. त्या स्वतः उत्तम कवयित्री सुद्धा आहे. त्यांच्या कवितेतही वेदना आहे 'वेदनेशिवाय कविता निर्माण होत नाही. वेदनेतूनच निर्माण झालेली कविता काळजाशी नातं जोडते' असे माई नेहमीच म्हणतात.

सख्खी आई जिवंत असतांना अनाथाश्रमात नेऊन टाकलं. आणि इतरांच्या मुलांना साभाळलं. म्हणून आपली मुलगी आपल्याला बोल लावेल याची त्यांना नेहमीच भीती वाटायची पण ममताला म्हणजेच माईंच्या मुलीला आईने केलेल्या त्यागाचं मोल ठाऊक होत. माईनी उभ्या केलेल्या पसाऱ्याचा तिला प्रचंड अभिमान होता.

ममताप्रमाणेच आपल्या इतर मुलींनी शिकावं म्हणून आई नेहमी प्रयत्नात असायच्या. 'स्त्री कधीही हरणार नाही. कारण तिला वेदना म्हणजे काय, ते ठाऊक असतं, विदर्भात इतक्या शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्या. पण एकातरी शेतकऱ्याच्या बायकोनं आत्महत्या केल्याचं कधी ऐकलं नसणार. ती कधीही या जगातून पळ काढणार नाही. कारण स्त्रीची वेदना तिला जगायला शिवते. स्त्रीचं आयुष्य कसं? मंदिरात ठेवाल तर नंदादीप, मुठीत घरलं तर आग. पण तरीही स्त्रीच कायम वेठीस धरली जाते.

चिखल आणि पाण्याचं जे नातं, ते दुःखाचं माझ्याशी आहे. या चिखलात, म्हणजे ओल्या मातीतचं बीज अंकुरतं पण असा ओलावा कधीच मिळाला नाही. मी खडकावरच रूजले. पण म्हणूनच माझी मूळ पक्की, चिवट आहेत. मी कधीच मोडून पडणार नाही.

त्या म्हणतात की ज्या केलेल्या संघर्षाची पावती म्हणून आजवर १७२ पुरस्कार मिळाले आहेत. पण त्याच्या मुळे आणि ज्यांच्यासाठी बेघर व्हावं लागलं त्या पिपरीमधीच्या गावकऱ्यांनी माझं कौतुक केला. माईनी छेडलेल्या आंदोलनामुळेच आज गावकऱ्यांना शेणासाठी महिना मिळतो.

आपल्या गावातील एक स्त्रीने देशात नाव काढलंय याचा त्या गावकऱ्यांना अभिमान आहे. आणि जो गाव

माझ्यावर थुंकला तोच गाव माझ्या नावाने आज जयजयकार करतो. माझं नाव झाल्यावर माझे पतीही माझ्याकडे आले. कारण त्यांना सांभाळणारं कोणीच नव्हत. मी त्यांना सांगितलं मी तुमची आई होऊ शकेल, पत्नी मात्र कधीही नाही. पटत असेल तर रहा आणि माझ्या आश्रमातील मुलेचं आता त्यांचा नीट सांभाळ करतात. त्यांना १७२ पुरस्कार मिळाले, पण ते पुरस्कार खाऊन पोट भरत नाही. म्हणून माई आजही लोकांसमोर पदर पसरतात. त्या म्हणतात की 'गाना नही तो खाना नही, भाषण नही तो राशन नही' असं म्हणत आपल्या मुलांना दोन वेळ जेव्वायला मिळावं म्हणून त्या महाराष्ट्रभर हिंडत असतात.

माईंनी अनाथ मुलं वाढवली. त्यांना अनाथपणाची जाणीव न होऊ देता त्यांना वाढवलं, मोठं केलं. शिक्षण दिलं. जगण्याची प्रेरणा दिली. पण सगळ्यात महत्त्वाचं म्हणजे माईंनी त्या मुलांना या समाजात मानाचं स्थान मिळवून दिलं. निराश्रित, बेबारस असा शिक्का त्यांच्यावर बसू दिला नाही. या मुलांना ही त्याची जाण आहे. आपल्याला जे प्रेम मिळावं, तेच इतरांनाही मिळाव म्हणून त्यांची धडपड सुरू असते. 'देवा आम्हाला हसायला शिकव परंतु आम्ही कधी रडलो होतो, याचा विसर पडू देऊ नकोस'. हे माईंनी त्यांना शिकवलं.

आज त्या १५०० मुलांची माई आहेत आणि त्यांना ६०० सुना आणि २०० जावई आहेत. दोन दिवसांच्या मुलापासुन ७२ वर्षाच्या वृद्धापर्यंत सगळीच त्यांची मुलं माईंच्या मुलींचं आडनाव साठे, तर मुलांचं आडनाव सपकाळ असं त्यांनी ठेवलं. त्यांच्या या जीवनावर असा हा आधारित चित्रपट ज्यामधे समाजानेच नव्हे तर ज्याच्यासोबत आपण सर्व आयुष्य आपले त्यांच्या स्वाधीन करतो, मरत पर्यंत त्याची सेवा करतो तोच नव्हे तर जी आई आपल्या बाळाला नऊ महिने पोटात वागवून ती सुद्धा सढ्या मुलीला पाठ फिरवते. तरीही अशा अनेक प्रचंड भयंकर पद्धतीचा म्हणजे जिथे पाय ठेवला तिथे काटा टोचलाच पहिजे अशा परिस्थितीत कुठेही न डगमगता आज आपल्या वर्धा जिल्ह्यात नव्हे तर विदर्भात, महाराष्ट्रात शिवाय अख्ख्या जगभरात त्यांचे नाव घेतल्या जाते. अनाथांची माय जी चिंधीची चिंधुताई झाली आणि चिंधुताईची सिंधुताई झाल्या आणि सिंधुताईच्या माई झाल्या. असा हा चित्रपट त्यांनाच नव्हे तर आपल्याला सुद्धा स्फूर्ती देऊन जाते. त्यांच्याबद्दल मी शेवटी एक कविता लिहिते.

उतरले नव्हते अजून
पाठीवरील शिक्षणाचे ओझे
लहानपणीच संसारात सांगा
मन कसे रमले हिचे ?
हसण्या खेळण्याच्या दिवसात असे
मातृत्व हे आले.
सासरी नांदताना मात्र
बालपण कधीच हरवले
सुखी संसाराचे स्वप्न पहिले
मग मेघ काळे का दाटले...?
तुकडया–तुकडयाने काळीज फाटले
जेव्हा पतीनेही झिडकारले
इवलासा जीव कुशीत घेऊन
भिक मागितली धरदार असून
मरण येईना... थांबे पुण्यात येऊन
पोटच्या गोळ्याची करूण हाक ऐकून
नियतीनी ही बघा हिला कशी फिरवली
मातेने ही कशी दूर लोटली ?
घरदार, धनी असून देखील
पोरीला या अनाथ केली....
पोरके झालेल्या लेकरांची
आस हिला लागली
कोठे होती ? कोठे गेली ?
अनाथांची हि माई बनली.....

रिमा गोडबोले
बी.एस.सी. भाग १

'दुष्काळ' एक नैसर्गिक समस्या व उपाय

दुष्काळ म्हणजे पावसाची कमतरता. सरासरीपेक्षा कमी पाऊस होणे किंवा पाऊस न होणे. पावसाच्या वितरणात फरक पडणे, पाण्याची गरज भासणे, पाण्याचा तुटवडा भासणे अशाप्रकारे हवामान बिघडण्याच्या प्रकाराने दुष्काळाशी संबंधित पाणीटंचाई, उपलब्ध पाण्याची कमतरता यालाच दुष्काळ असे म्हणतात.

दुष्काळाचे प्रमुख दोन प्रकार आहेत. निसर्ग निर्मित दुष्काळ व मानव निर्मित दुष्काळ.

निसर्ग निर्मित दुष्काळ या एकूण समस्येचे कारण नैसर्गिक असल्याचे सांगितले जाते आहे. मान्सूनच्या अनियमिततेमुळे दुष्काळ पडण्याच्या बातम्या आपण अगदी बालपणापासून ऐकलेल्या असतात आणि त्यामुळे दुष्काळाचे मुख्य कारण नैसर्गिक आहे, असा एक सर्वसामान्य समज झालेला असतो. पाणी साठविण्याचे व्यवस्थापन योग्य प्रकारे झाले नाही तर ज्या प्रदेशांमध्ये भरपूर पाऊस पडतो, तेथेसुद्धा पाण्याचा प्रश्न निर्माण होणार. चेरापुंजी याचे उत्तम उदाहरण आहे. भारतातील सगळ्यांत जास्त पाऊस असणाऱ्या प्रदेशांपैकी चेरापुंजी एक आहे. मात्र वर्षातील बराचसा काळ त्याला पाण्याच्या समस्येशी झगडावे लागते. वास्तविक आजसुध्दा जर आपल्याला दुष्काळासारख्या संकटाशी झगडावे लागत असेल, त्या त्यासाठी नैसर्गिक कारणे पुढे करणे नक्कीच चुकीचे आहे. १७ व्या किंवा १८ व्या शतकात असे बोलले गेले असते तर गोष्ट वेगळी होती. आज विज्ञान आणि तंत्रज्ञान इतके पुढारलेले आहे की कमीत कमी पाऊस असणाऱ्या प्रदेशातही पुरेशा पाण्याची तजवीज केली जाऊ शकते. भारतात नद्यांचे इतके विशाल जाळे पसरलेले आहे, की देशातील कोरड्याहून कोरड्या क्षेत्राला सुद्धा दुष्काळमुक्त करता येऊ शकते.

दुष्काळाच्या निर्माणामध्ये ग्लोबल वॉर्मिंग एक नैसर्गिक कारण आहे. ग्लोबल तापमानामध्ये फरक पडला तरी ऋतुतक्र बिघडते. त्यामुळे पुन्हा पावसाचे प्रमाण कमी होते व दुष्काळ सदृष्य परिस्थिती उभ्द्रवते.

मानव निर्मित दुष्काळ : दुष्काळाच्या निर्माणामध्ये पाण्याचा जास्त वापर, सदोष सिंचन आणि शहराच्या पाणी पुरवठा व्यवस्थेतील गळत्याची पण मुख्य भूमिका आहे. मान्सूनमध्ये सुद्धा भारतात इतका पाऊस पडत असतो की त्या पावसाचे योग्य व्यवस्थापन केले तर त्याद्वारे दुष्काळाचा प्रश्न सोडवता येऊ शकेल. नद्यांचे पाणी व्यवस्थित पद्धतीने वापरले आणि त्यासाठी आवश्यक अशी संरचना उभी केली तर हे निश्चितच शक्य आहे. याद्वारे भूमिगत पाण्याची सतत घसरणारी पातळीसुद्धा नियंत्रित केली जाऊ शकते.

सरकार काही योजना लागू करते ज्यांची अंमलबजावणी कधी होत नाही, नंतर सरकारची अकर्मण्यता आणि भ्रष्टाचारापाशी येऊन समस्या थांबते आणि शेवटी थोडीफार नुकसान भरपाई देऊन समस्या सोडवली जाते. या एकूण प्रक्रियेत समस्येची खरी कारणे दडवली जातात.

कोणत्याही समस्येवर उपाय ती समस्या समग्रतेत समजून घेऊनच शोधता येऊ शकते. दुष्काळाचा प्रश्नसुद्धा आपण या संदर्भातच योग्य प्रकारे समजून होऊ शकतो.

दुष्काळ हा वर्षापुरताच सीमित नसतो, तर तो आपल्या खुणा मागे ठेवून जातो.

आजच्या घडीला मराठवाड्यात आणि विदर्भाच्या काही भागात दुष्काळ पडलेला आहे.... याच्या बातम्या रोजच टी.व्ही. वर दाखविल्या जातात. त्या बातम्या पाहून आपले मन खिन्न होते... त्या वातावरणात जे जगत असतील त्यांची काय अवस्था असेल ? खरं तर खेड्यातला दुष्काळ हा फारच भयानक असतो. पण दुष्काळ हा यावर्षीच पडला असंही नाही. तो चार–पाच वर्षात महाराष्ट्रातल्या एखाद्या भागाला भेट देतो.

गावात सगळ्यात आधी पिण्याच्या पाण्याची गैरसोय होते, त्यासाठी लांबून डोक्यावर घागरीने पाणी आणावं लागतं, किंवा गावात ज्या विहिरी आटायला आल्या आहेत. त्या आणखी खोल खोदाव्या लागतात. गावात घरातलं पाणी भरण्याचं काम सहसा स्त्रीयांनाच करावं लागतं.

माणसापेक्षाही वाईट परिस्थिती जनावरांची होते, कारण गोठ्यातले मुके प्राण्यांना तहान लागली. खायला चारा नसला तर ते बोलूही शकत नाहीत. जनवारांचा चारा खूपच महाग झालेला असतो. झाडाचा हिरवा पाला खावू घालायला झाडाला पालाही राहत नाही. मग ती रोड दिसू लागली की शेतकरी त्यांना बाजाराचा रस्ता दाखवतात. त्या

जनावरांना बाजारात कोणी विकत घेत नाही ते उपाशीच मरतात. शिवारात कुठेच हिरवळ दिसत नाही, त्यामुळे तापमानात वाढ झालेली असते. आता पाणीच नाही म्हटल्यावर सगळीकडे फुफाटा उडत असतो, पाण्याअभावी झाडांची पानझड होते. हाताना काम नाही. खिशात दाम नाही. मग अशा लोकांना बाजारातही कोणी विचारत नाही. गावातल्या मजुरीवर जगणाऱ्या लोकांचे चेहरे उदासवाने होतात. मग ते सतत दुष्काळाची चर्चा करतात. तसेच शेतात काहीच काम नसल्याने ते सावली मिळेल तिथे जुगार (पत्ते) खेळत बसतात.

पिक काहीच झालं नाही तरी गावातले सावकारी करणारे ज्यांच्यावर कर्ज आहे, त्याच्याकडे तगादा लावतात, अशा परिस्थितीत अनेक माणुसकीला काळीमा फासणाऱ्या घटना घडतात, तसेच अशा परिस्थितीचा फायदा घेऊन सावकार जमीन हडपण्याच्या प्रयत्नात असतात. कोणत्याही गावात पाण्याचं एवढं संकट निर्माण होण्याचं कारण एवढच की शेती बागायतीची करण्यासाठी खोदलेल्या विहिरी, त्यातून झालेला पाण्याचा भरमसाट उपसा. या उपस्यामुळे जमीनीतली पाण्याची पातळी एवढी खाली गेली असते की ती कधीच पुन्हा भरून निघणार नाही. अशीच काहीतरी परिस्थीती आहे. जी गावे विहरीच्या पाण्यावरच वसवलेली गेली आहेत. आता विहरीचे पाणी आटल्याने त्यांना दुसऱ्या ठिकाणाहून पाणी आणल्याशिवाय पर्याय राहत नाही. शहराप्रमाणे गावातली लोकसंख्या भरमसाट वाढल्यामुळे जंगले नष्ट झाली आहेत, पडीक जमीनी लागवडी खाली आल्या आहेत. मोठ्या शेत जमीनीची विभागणी होऊन लहान–लहान तुकडे पडलेले आहेत, अशा एका कोरडवाहु तुकड्यावर एक संसार चालवणं जिकरीचं झालेलं आहे.

''दुष्काळाचा विखार हिरवाईने झाकूया,
दोन झाडं प्रेमानं दारी खरंच लावूया,
तुमच्या आमच्या भवतालचा दुष्काळ
कणभर संपवूया...

राज्याच्या ज्या भागात कोणताही पुरक व्यवसाय नाही, नद्या आहेत पण त्यावर घरणं बांधलेली नाहीत, एखाद्या व्यवसाय करायला कर्ज दिल्या गेलं तर त्याची परत फेड होईलच याची कोणतीही शाखती नाही, कारण कर्जाची परतफेड व्हायला तो व्यवसाय फायद्यात चालायला हवा. अशा पुरोगामी म्हटल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्रात आजही लाखो लोक अशा परिस्थितीत जगत आहेत. त्यांना दोन वेळचं जेवण मिळण्याची भ्रांत आहे. कारण स्वार्थी राजकारणी वृत्तीने महाराष्ट्राच्या सगळ्या भागात सारखी विकासाची गंगा वाहली नाही त्याचेच हे फळ आहे. तेव्हा त्यातून या दुष्काळ ग्रस्त लोकांना शासनाकडून मदतीचा हात देण्यात यावा अशाही बातम्या येतात. परंतु दुष्काळ पडूच नाही. हे तर शक्य नाही, पण पडला तर त्याची तीव्रता कमी करण्यासाठी आपण त्यासाठी काय–काय करू शकतो ?...

सध्या महाराष्ट्रामध्ये पाऊस कमी पडला म्हणून दुष्काळ असल्याचे सांगितले जात आहे. परंतु पाऊस कमी पडणे हा जर दुष्काळ असेल तर इस्त्रायलमध्ये महाराष्ट्राच्या पावसांच्या निम्म्याएवढा सुद्धा पाऊस पडत नाही. पण तिथे कधीच दुष्काळ पडलेला नसतो. मग पाऊस कमी पडणे म्हणजे दुष्काळ ही आपली मीमांसा कधीतरी बदलण्याची गरज निर्माण होते. आपण ज्याला दुष्काळ म्हणतो तो शास्त्रीय भाषेत बोलायचे झाल्यास दुष्काळ नसतो. तर ती असते अनावृष्टी. अनावृष्टी म्हणजे कमी पाऊस पडणे. कमी पाऊस पडला म्हणजे दुष्काळ पडलाच पाहिजे असे काही नाही. निसर्गात कमी पाऊस पडतो आणि त्यामुळे आपल्या मनात दुष्काळ निर्माण होतो. परंतु पाऊस कमी पडला तरीसुद्धा शेती व्यवसायाचे व्यवस्थापन कौशल्याने केले तर या अनावृष्टीतून सुद्धा मनामध्ये सुकाळ निर्माण करता येतो. तेव्हा दुष्काळ–सुकाळ या मनाच्या भावना आहेत. मनाचा हिय्या करून दुष्काळावर मात करायचा प्रयत्न केला तर दुष्काळ आपल्या जीवनातून हदपार होऊ शकतो. पण तसा तो करण्याऐवजी दुष्काळावर नेहमीच वरवरची मलमपट्टी केली जाते. शासकीय पातळीवर किंवा राजकीय पातळीवर कोठे तरी दुष्काळाचें कायमचे उच्चाटन करण्याचा विचार जोपर्यंत होत नाही, तोपर्यंत या मलमपट्टीवरचा खर्च चालूच राहणार आहे.

वारंवार पडणारा दुष्काळ हा भूगर्भातील पाण्याची पातळी खोल गेल्यामुळे जाणवत आहे. ही पाण्याची पतळी उंचावली, तर दुष्काळ निवारणाकडे कायमचे पाऊल पडणार आहे. दरसाल पडणारा पाऊस जमिनीतल्या पाण्याची पातळी वाढवत असतो. परंतु पातळी वाढविण्याच्या वेगापेक्षा जमिनीतले पाणी उपसण्याचा वेग मोठा आहे.

त्यामुळे दरसाल एक फूट पाणी वाढते आणि आपण दोन फूट पाणी उपसून काढतो. परिणामी एक फूटाची घट होते. त्यामुळे आपण दरवर्षी जेवढे पाणी उपसतो त्यापेक्षा अधिक पाणी पावसाळ्यामध्ये जमिनीत मुरवले पाहिजे आणि तसे झाले तरच जमिनीतल्या पाण्याची पातळी वाढणार आहे. प्रत्येक जण ट्युबवेल खोदून आणि त्यावर मोटर बसवून पाणी खेचत आहे. पण तेवढेच पाणी जिरवण्याची दक्षता घेत नाही.

म्हणून महाराष्ट्र शासनातर्फे सुरू असलेल्या जलपुनर्भरणाच्या प्रयोगाला महत्त्व आहे. त्यामध्ये पाणी भरपूर जिरवले जाणार आहे. आपल्या सुदैवाने आपल्याला जिरवण्यासाठी भरपूर पाणीसुध्दा उपलब्ध आहे. फक्त आपण ते जिरवण्याची काळजी करत नाही. ती करण्यासाठी जिल्हा परिषदेने पुढाकार घेतला आहे ही गोष्ट फार चांगली आहे. दुष्काळ कायमचा हटवण्यासाठी प्रयत्न करणे म्हणजे नेमके काय ? असा प्रश्न आपल्याला पडतो. पण असा प्रयत्न म्हणजे अधिकात अधिक पाणी जिरवणे. अण्णा हजारे यांनी राळेगणसिद्धी या गावात हाच प्रयोग यशस्वी केलेला आहे. त्यांच्या प्रयत्नामुळे जमिनीतल्या पाण्याची पातळी वाढली आहे. म्हणून एखादे वर्षी पाऊस पडला नाही तर लगेच शेतकरी उघडा परत नाही. जमीनीच्या आतले पाणी वर आलेले असते, ते त्याला दुष्काळी वर्षांत पुरते. तेव्हा महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांनी या उपक्रमाला प्रतिसाद देण्याची गरज आहे. शेवटी आपला दुष्काळ सरकार हटवेल असे म्हणून सरकारच्या तोंडाकडे पाहण्यात काही अर्थ नाही. सरकारी योजनांचा फायदा घेऊन किंवा सामाजिक उपक्रम राबवून आपला दुष्काळ आपणच हटवला पाहिजे.

तेजस्वी भुते
बी.एस.सी. भाग १

भारतीय तरूणःकाल, आज आणि उदया...

मित्रांनो, जे जाते पण परत येत नाही ते आहे तारूण्य ! म्हणूनच सर्व संधीचा फायदा सर्व तरूणांनी तारूण्यात घेतला पाहिजे. आपल्या पुढील आव्हाने स्वीकारली पाहिजेत. तरूण हा शारीरिक, मानसिक, बौध्दिक व नैतिकदृष्ट्या समर्थ व संपन्न असला पाहिजे. चांगली माणसे आयात करता येत नाही, ती घडवावी लागतात. म्हणूनच घडलेल्या तरूणांशिवाय या देशाला तरणोपाय नाही.

तरूणांचे हात उगारण्यासाठी नसून उभारण्यासाठी आहेत. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात. ''आत्मविश्वास ही यशाची गुरूकिल्ली आहे.'' तरूणांनी आपला आत्मविश्वास जागृत करायला हवा. ज्यांचा आत्मविश्वास जागृत झाला तो जीवनात यश मिळवू शकतो. म्हणूनच स्वामी विवेकानंद म्हणतात. ''या देशाचा इतिहास म्हणजे मूठभर आत्मविश्वास असणाऱ्या लोकांचाच इतिहास आहे. ज्यांचा आत्मविश्वास खचला त्यांचे सर्व काही व्यर्थ आहे. मूठभर आत्मविश्वास असणारे मला मिळाले तर मी या देशाचा विकास धडवून आणेल.''

आजच्या या तरूणांवर देशाचा विकास, येणारा काळ आणि निर्माण होणाच्या अडचणी अवलंबून असतात. म्हणूनच आजचा तरूण सरळ व ज्ञानी असावा. तरूणांना गेलेला काळ कसा होता, सुरू असलेला काळ कसा आहे आणि येणारा काळ कसा असेल याची जाणीव असावी. समाजातील ढोंग, रूढी, भ्रष्टाचार आणि वाईट सवयी यांवर आळा घालून नवे जग निर्माण करण्यासाठी तरूणांनी एकत्र यावे. हे तरूणांच्या जीवनातील ध्येय असले पाहिजे. ध्येयाचा ध्यास असलाच पाहिजे. त्यामुळे आपत्तीचा त्रास होत नाही. त्यांनी ध्येय साध्य करण्यासाठी कष्ट घेतलेच पाहिजे. उपनिषदांमध्ये तरूणांची लक्षणे सांगितलेली आहे.

युवस्यातः साधु, युवाध्यासकः।। आशिष्ठी, दृढीष्टी बलीष्ठीः।। तरूण हा साधू म्हणजे सरळ, निष्कपटी, निर्मळ आणि खेळाडू असला पाहिजे. गर्वाने झुकून न जाता, सबब न सांगता अपयशाचा त्याला स्वीकार करता आला पाहिजे. ज्याला जगावे कशासाठी आणि मरावे कशासाठी हे समजते तोच तरूण. मित्रांनो, व्यसनांच्या आहारी जाऊ नका. व्यसन हा मनुष्याचा सर्वात मोठा शत्रू आहे. आपल्या इंद्रियांना ताब्यात ठेवावे. तरूणांमध्ये, विद्यार्थ्यांमध्ये गुणसंपदा असायला हवी. जे कराल ते उगवेल. थॉमसन हक्सले म्हणतात, ''मला एक असा तरूण मिळवून द्या की जो शरीराने तंदुरूस्त आहे. त्याच्या इच्छा व विचार त्याच्या ताब्यात आहे. त्याचे मन आरशासारखे पारदर्शक व स्वच्छ आहे, तर मी जगात कोणताही चमत्कार करून दाखवील'' खरं आहे आजच्या जगाला विकसित करणारा एकमेव सक्षम घटक म्हणून तरूणाईकडे पाहिले जाते.

मान्यता पावलेले आदर्श व्यक्तिमत्व नेहमीच आपल्याला उपयुक्त ठरेल. भारतीय युवकांच्या दृष्टीने छत्रपती शिवाजी महाराज, स्वामी विवेकानंद, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले, लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे व अगदीज अलीकडच्या काळातील म्हटले तर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम यांचा उल्लेख होईल. यांनाच आदर्श का म्हणावे या मागील काही महत्त्वाची कारणे विशद करणे मला महत्त्वाचे वाटते. त्यांचे नुसते ज्ञान प्रचंड आहे एवढेच नाही तर त्यांची नैतिकता व सखोल विचार करण्याची प्रवृत्ती होती. गौतम बुद्धांनी उपदेश केलेला मी सांगते आहे. ''मी सांगत आहे म्हणून माझ्यावर विश्वास ठेवू नका. धर्मग्रंथात आहे म्हणून आंधळेपणाने स्वीकार करू नका, तर सर्व विचार तुमच्या बुध्दीवर तपासून पहा आणि योग्य–अयोग्य काय ते ठरवा. या उपदेशांचे तंतोतंत पालन केले.

साधे जीवन जगत उच्च विचारसरणी जोपासली. त्यांची कामे करण्याची पध्दत, जगाकडे व जीवनाकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन, काही तरी करून दाखवण्याची मनिषा व आपण जगाला काही तरी देणे लागतो ही भावना हे त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाच्या अनेक पैलुंपैकी काही आहेत. जेव्हा या तरूणांना ध्येयाने पछाडले जाईल, संकटांना सामोरे जाण्यासाठी निधडी छाती निर्माण होईल, आकाशाला गवसणी धालण्याचे सामर्थ्य अंगी येईल त्यावेळेला उज्ज्वल

भारत वर्षाची निर्मिती होऊ शकेल. ही जबाबदारी पेलणे हे जबरदस्त आव्हान नियतीने तरूणांसमोर ठेवले आहे.

या आव्हानांना समोर जातांना दुसरे पुढे असणारे आव्हान म्हणजे समाजकारण व राजकारणात युवाशक्तीचा सहभाग. ढोबळमानाने युवा समाजाचा विकास हाच उद्याच्या समाजाचा विकास आहे. फायद्याच्या राजकारणापासून स्वतःला दूर ठेवणे व समाजाच्या फायद्यासाठी काम करणे हेच हितावह ठरेल.

सर्वात शेवटची व तितकीच महत्त्वाची बाब म्हणजे कर्तव्य पालन. स्वार्थातून परमार्थाकडे या दृष्टीकोनातून बघतांना जर आपली कर्तव्ये आपण योग्य प्रकारे पार पाडली तरच परमार्थ करण्यासाठी वेगळे श्रम घ्यावे लागणार नाहीत. देश व त्याची प्रगती सर्वांवर अवलंबून आहे. त्यावेळी असे म्हणून चालणार नाही की, मी एकटाच आहे का हे सर्व करणारा ? प्रत्येकाचा हातभार विकासात आवश्यक असतो. त्यासाठी प्रत्येकाने आपले कर्तव्य ओळखले पाहिजे व कर्तव्यपुर्तीला प्राधान्य देऊन, तिला तन मन धन अर्पण केले पाहिजे. तरूणांकडे आव्हाने पेलण्याची ताकद निश्चितच आहे, नव्हे ती फक्त त्यांच्यामध्येच आहे. गरज आहे प्रबळ इच्छाशक्तीची व पेटून उठण्याची. अजुनही वेळ गेलेली नाही. भविष्य चांगले घडविण्यासाठी आज चांगले प्रयत्न करावेचं लागेल. बा.भ. बोरकर म्हणतात...

तुला एवढे कसे कळत नाही,
फुलत्या वेलीस वय नाही !
क्षितिज ज्याचे सरले नाही,
त्यास कसलेच भय नाही !

वैष्णवी डंडाळे
बी.एस.सी. भाग १

पु.ल. देशपांडे यांच्या कोट्यांचा संग्रह

- असा मी असामी
नौकरी ही लग्नाच्या बायकोसारखी
दुसरी चांगली दिसते म्हणून
पहिली
सोडण्यात काहीच अर्थ नसतो
शेवटी सगळ्या बायका अन्
सगळया नौकऱ्या सारख्याच

-पु.ल. देशपांडे

- आमचे भाषाविषयक धोरण
आफटर ऑल मराठी
कंपलसरी पाहिजे
कारण आपल्या मदरटंग
मधून आपले थॉट्स
जितके क्लेअरली एक्सप्रेस
करता येतात तितके
फॉरेन लँग्वेज मधून करणं
डिफिकल्ट जातं
इंग्लिश मात्र मस्ट बी ऑप्शनल

-पु.ल. देशपांडे

- चोरीमध्ये वाईट काही नसतं,
तुम्ही काय चोरता ह्याच्यावर ते
अवलंबून असते.
तुम्ही जर एखाद्याच मन चोरलं
तर त्यात वाइट काय आहे.

-पु.ल. देशपांडे

पु.ल. देशपांडे यांच्या कोट्यांचा संग्रह

- पु.ल. एका समारंभाला
जाण्यासाठी
तयार होत असतांना
म्हणाले,
मी कुढल्याही समारंभाला
'बो' लावल्याशिवाय
जात नाही.

- पु.ल. चा वाढदिवस होता,
एका मार्केट यार्डाच्या व्यापारी
चाहत्याने
त्यांच्या गळ्यात सफरचंदाचा
हार घातला
पु.ल. त्या वजनाने थोडे झुकले
हे बघून व्यापारी म्हणाला
"काय राव, काय झाले ऐवढे"?
पु.ल म्हणाले, "बरे झाले
तुम्ही नारळाचे व्यापारी
नाही"
घरात हशा पिकला होता.

- गप्पांच्या ओघात
पु.ल. एकदा म्हणाले
मामा या नावाची
गंमतच आहे
त्याला शकुनी म्हणावं
तरी पंचाईत
आणि
अपशकुनी म्हणावं तरी
पंचाईत

-पु.ल. देशपांडे

- वटेश्वरा, हे आज तुझ्या
बुंध्याला
गुंडाळलेल सुत उद्या पहाटे
मी उलटं फिरवून
घरी परत नेणार आहे.
तेव्हा आजचं सुत हे
एक नुसतंच बंडल
आहे हे ध्यानात ठेव'.

- भरलेला खिसा माणसाला
"जग" दाखवतो....
आणि रिकामा खिसा
जगातील "माणसं" दाखवतो
ज्याला शंभर किलो धान्याचं
पोत उचलता येतं,
त्याला ते विकत घेता येत
नाही
ज्याला विकत घेता येतं
त्याचा उचलता येत नाही
"विचित्र आहे पण सत्य आहे"

- कुठेही बोलतांना आपल्या
शब्दांची उंची वाढवा
आवाजाची उंची नको
कारण "पडणाऱ्या पावसामुळेच
शेती पिकते विजेच्या
कडकडाटामुळे नव्हे"

-पु.ल. देशपांडे

पु.ल. देशपांडे यांच्या कोट्यांचा संग्रह

- अहो ज्ञानियांचा राजा।
कशाला फुकाच्या गमजा ?
एकेकाळी रचिली ओवी।
व्हाल का तो नवकवी ?
मारे बोलाविला रेडा।
रेघ बी.ए ची ओलांडा।
तुम्ही लिहावी विराणी।
लिहा पाहू फिल्मी गाणी
म्हणे आळंदी गावात
तुम्ही चालवली भींत
चालवून दाखवा झणी
एक नाटक कंपनी
बाप रखुमादेवीवरा
आमुचा च्यालेंज स्वीकारा

-पु.ल. देशपांडे

- पंचवीस मार्क कमी पडून
नापास झालेले चिरंजीव
तीर्थरूपांना म्हणाले
'मी पहिल्यापासूनच मार्क्सविरोधी
गटात आहे.

-पु.ल. देशपांडे

राणी डुबे
बी.एस.सी. भाग १

- कॉलेज जीवनात माझी एक
'मनिषा' होती,
'संगीता' वर प्रेम करावं! तशी
'भावना' ही माझ्या मनात होती!
'प्रेरणा' तर रोजच भेटायची।
माझी 'साधना' तर पक्की होती!
पण
'आशा' जवळ असतांना ही,
माझ्या पदरात 'आकांक्षा' पडली!
माझी 'अपेक्षा' अपेक्षाच राहिली।
आणि माझ्या जवळ आता
फक्त
'कल्पना' राहिली! तर मला
सांगा
'कविता' कशी वाटली

-पु.ल. देशपांडे